खण्ड-260, अंक-2
मंगलवार, 16 भाद्रपद, शक संवत् 1887
(7 सितम्बर, 1965 ई0)

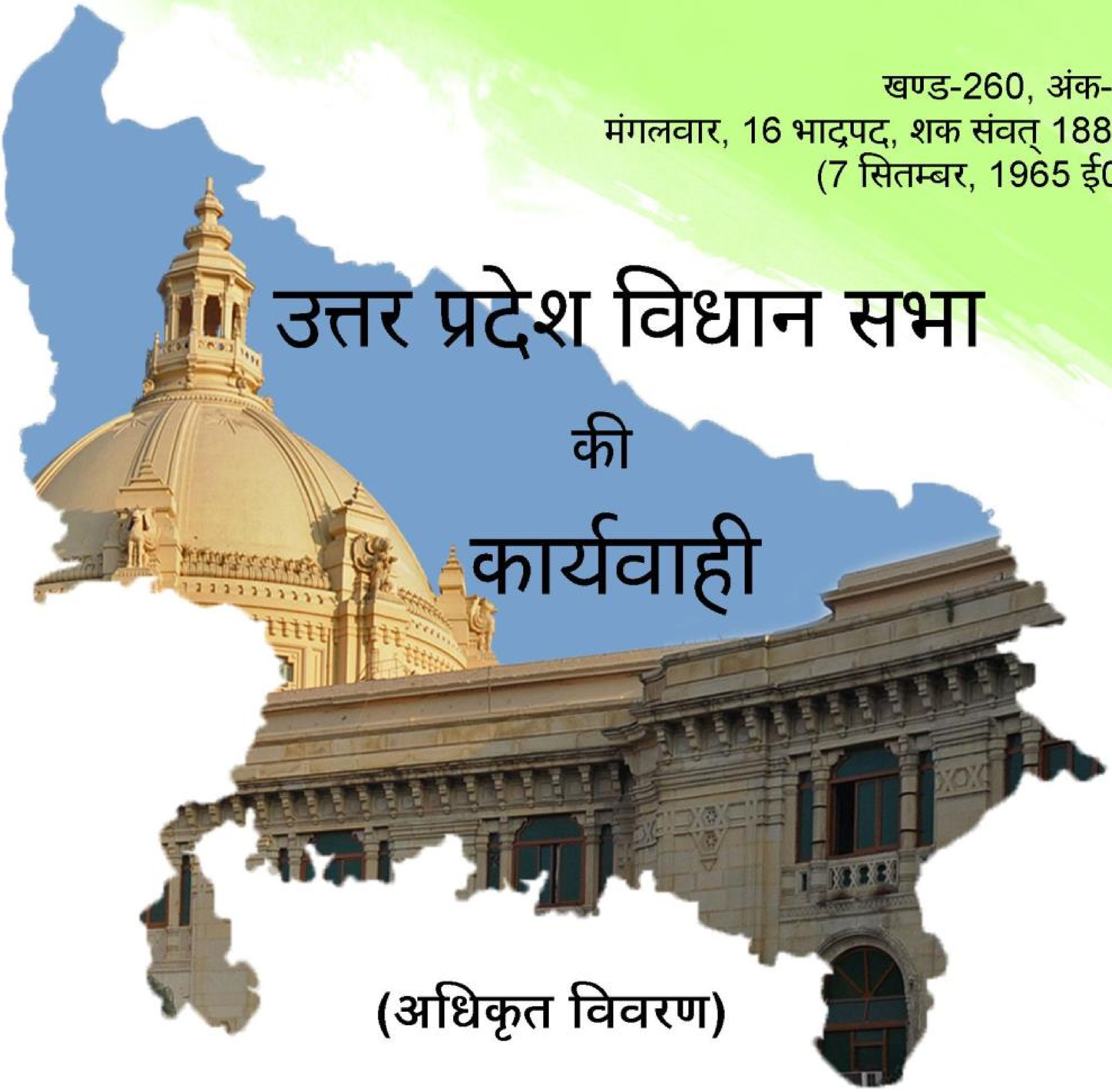

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 260 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
१९६७

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, ७ सितम्बर, १९६५

विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री मदनमोहन वर्मा की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य--(३९५)

अक्षयवरसिंह, श्री
अखण्डप्रतापसिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनीसुर्रहमान, श्री
अब्दुल समी, श्री
अब्दुल हसीब खां, चौधरी
अमजद अली, श्री
अयोध्याप्रसाद, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अवधनारायणप्रतापसिंह, श्री
अवधेशकुमार सिनहा, श्री
अवधेशप्रताप, राजा
अशरफ अली खां, श्री
अहमद बख्श, श्री
आनन्दसिंह, कुंवर
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रासनसिंह, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
ईश्वरशरण, श्री
उग्रसेन, श्री
उमादत्त, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
उल्फतसिंह, यादव, श्री
ऊदल, श्री
ऋषिनारायण शास्त्री, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
कंधईलाल, श्री
कन्हैयालाल, श्री
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कमलासिंह यादव, श्री
कलारानी मिश्रा, श्रीमती
कल्पनार्थसिंह, श्री
कल्याणचन्द मोहिले, श्री
(उपनाम छुन्नन गुरु)
कल्याण राय, श्री
काशीनाथबहादुरपाल, श्री
काशीनाथ मिश्र, श्री
काशीप्रसाद द्विवेदी, श्री
किशोरीलाल अग्रवाल, श्री
किश्वरआरा बेगम, श्रीमती
कुमार करुणा कृष्ण नायर, श्री
कृष्णचन्द, श्री
कृष्णपालसिंह, श्री
कृष्णसिंह, श्री
कृष्णानन्द राय, श्री
केदारनाथ भार्गव, श्री
केशभान, श्री
केशरीप्रसाद पाण्डेय, श्री
केशव गुप्त, श्री
केशवराम, श्री
केशवसिंह, श्री
कैलाश, श्री
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
खयालीराम, श्री
खुशीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
खेमचन्द, श्री
गंगाधर मैठाणी, श्री

गंगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद वर्मा, श्री
गंगाप्रसादसिंह, श्री
गंगासिंह विष्ट, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री
गणेशप्रसाद, श्री
गनेशीलाल चौधरी, श्री
गयाप्रसाद, श्री
गयाप्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजाप्रसाद, श्री
गिरधारीलाल, श्री (बिजनौर)
गिरधारीलाल, श्री (वाराणसी)
गिरवरप्रसाद, श्री
गुप्तारसिंह, श्री
गुलाबसिंह, श्री
गेंदादेवी, श्रीमती
गेंदा सिंह, श्री
गोकुलप्रसाद, श्री
गोपीनाथ दीक्षित, श्री
गोविन्द सहाय, श्री
घनश्यामदास, श्री
घासीराम जाटव, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्दनसिंह, श्री
चन्द्रजीत यादव, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रपाल, श्री
चन्द्रबलीसिंह, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
चुन्नीलाल, श्री
चैतन्यराजसिंह, श्री
छत्रपति अम्बेश, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
जगदम्बा प्रसाद, श्री
जगदीशनारायण सिनहा, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री (बहराइच)
जगदीशप्रसाद, श्री (मुरादाबाद)
जगदीशप्रसाद पाण्डेय, श्री
जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट, श्री
जगदीशशरण रस्तोगी, श्री
जगनप्रसाद रावत, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ राव, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जगवीरसिंह, श्री
जमीलुर्रहमान किदवई, श्री
जयगोपाल, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जसरामसिंह, श्री
जियाउर्रहमान, श्री (उपनाम बक्कन)
जुगलकिशोर, आचार्य
जुगलकिशोर, श्री
जुल्फिकार अली खां, नबाबजादा सैयद
जे० पी० मिश्र, श्री
ज्वालाप्रसाद, श्री
झारखण्डे राय, श्री
झिलमिटराम, श्री
टम्बेश्वरप्रसाद, श्री
डल्लाराम, श्री
डूंगरसिंह, श्री
तारा अग्रवाल, श्रीमती
तेजसिंह, श्री
त्रेपनसिंह, श्री
दयाराम शाक्य, श्री
दलजीतसिंह, श्री
दशरथप्रसाद, श्री
दाऊदयाल खन्ना, श्री
दीनदयाल करबरिया, श्री
दीपनारायणसिंह, श्री
दुर्गाप्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवीदत्त, श्री
देवेन्द्रसिंह, श्री
देशराजसिंह, श्री
द्वारकाप्रसाद पाण्डेय, श्री
द्विजेन्द्र नारायण, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
धूमप्रसाद श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नत्थूसिंह, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नरदेवसिंह, श्री
नरसिंहनारायण पाण्डेय, श्री
नरेन्द्रसिंह श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नरोत्तमसिंह, श्री

नवरंगसिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायणसिंह, श्री
नित्यानन्द पाण्डेय, श्री
नियाज हसन खांन, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नैनसिंह, श्री
नौनिहालसिंह चौधरी, श्री
पंचमदास, श्री
परमाईलाल, श्री
पशुपतिनाथसरनसिंह, श्री
पातीराम अहरवार, श्री
पितईराम, श्री
पीतमसिंह प्रधान, श्री
पुरुषोत्तमलाल वधवार, श्री (राजाजी)
पूरनलाल, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रेमसिंह, श्री
प्रेमसुन्दर, श्री
फूलसिंह, श्री
बंकटासिंह, श्री (टुन्नूसिंह)
बंशीधर पाण्डेय, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री
बंशीलाल, श्री
बद्रीप्रसाद, श्री
बद्रीप्रसाद पालीवाल, श्री
बनारसीदास, श्री
बब्बनसिंह, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवानसिंह, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बांकेलाल, श्री
बाबूलाल, श्री
बाबूसिंह, श्री
बालकराम वैश्य, श्री
बालेन्दुभूषणप्रतापसिंह, श्री
बालोजी अग्रवाल, श्री
बिपिनबिहारी तिवारी, श्री
बिशनलाल यादव, श्री
बृजबिहारी, श्री
बृजभूषणशरण, श्री
बृजमोहनलालगुप्त, श्री
बृजराजसिंह, श्री
बृजरानी, श्रीमती
बृजेश्वर सहाय, श्री
बेचनराम, श्री
बेदराम, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजनाथसिंह वैद्य, श्री
बैजूराम, श्री
ब्रह्मदत्त मायर, श्री
भगवानदास यादवेन्दु, श्री
भगवानदीन, श्री
भगवान सहाय, श्री
भगौतीदीन, श्री
भानुप्रतापसिंह, श्री
भीखालाल, श्री
भीमाप्रसाद, श्री
भूपसिंह, श्री
मंगल, श्री
मंगलदेव, श्री
मंगलप्रसाद आर्य, श्री
मतोलासिंह, श्री
मदनपालसिंह, श्री
मनसाराम, श्री
मन्नालाल, श्री
महमूद हसन खां, श्री
महरामसिंह, श्री
महावीरप्रसाद, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महावीरसिंह, श्री
महेन्द्रसिंह, श्री
महेशसिंह, श्री
माताप्रसाद, श्री
माधवप्रसाद त्रिपाठी, श्री
माधोनारायण मुद्गल, श्री
मान्धातासिंह, श्री
मुकुन्दीलाल बैरिस्टर, श्री
मुकुटबिहारीलाल, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुन्नूसिंह, श्री
मुमताज मुहम्मद खां, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुलतानसिंह, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मूलचन्द शास्त्री, श्री
मेघनाथसिंह शिशोदिया, श्री
मेवालाल जायसवाल, श्री
मेड़ीलाल, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मोहनलाल, आचार्य
मोहनलाल अहिरवार, श्री
मोहनसिंह, श्री
यशपालसिंह वर्मा, श्री
यशोदा देवी, श्रीमती
यादवेन्द्रदत्त, श्री
यादवेन्द्रसिंह, श्री (लल्लन जी)
योगेश्वरप्रसाद खंडूड़ी, श्री
रक्षपालसिंह, श्री
रघुनाथ, श्री
रघुनाथप्रसाद, श्री
रघुनाथसिंह, श्री
रघुवीरराम, श्री
रघुवीर सहाय कैथवार, श्री
रघुवीरसिंह, श्री
रतीपाल, श्री
रणबहादुरसिंह, श्री
रमाकान्तसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राजदेव, श्री
राजनाथसिंह, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायण मिश्र, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजाराम, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्रसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
राधेश्याम शर्मा, श्री
रामअधार कनौजिया, श्री
रामअधीनसिंह, श्री
रामअनन्त पाण्डेय, श्री
रामअवध, श्री
रामआसरे वर्मा, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकिशोर त्रिपाठी, श्री
रामकिशोर वर्मा, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामचन्द्रसिंह, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामपालसिंह, श्री
रामप्यारे, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
राममूर्ति, श्री
राममूर्ति 'अंचल', श्री
रामरती, श्रीमती
रामरूपसिंह, श्री
रामलखन वकील, श्री
रामलखन शुक्ल, श्री
रामलखनसिंह, श्री
रामलाल, श्री
राम सनेहीवन, श्री
रामसिंह, श्री (एटा)
रामसिंह, श्री (मैनपुरी)
रामसिंह, श्री (सहारनपुर)
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसूरत प्रसाद, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
रामेश्वरनाथ, श्री (उपनाम चौबे)
रियासत हुसैन, श्री
रूकुमसिंह राठौर, कुंवर
लक्ष्मी शंकर यादव, श्री
लखपतराम शर्मा, श्री
लखीसिंह, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री (जौनपुर)
लालबहादुरसिंह, श्री (वाराणसी)
लोकपालसिंह, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नकवी, श्री
विक्रमशाह, राजा
विजयकुमार, श्री
विजयपालसिंह, श्री
विजयशंकर, श्री
विजयशंकरसिंह, श्री
विजयसिंह, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती
विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विश्वनाथ पाण्डेय 'प्रणव', श्री
विश्वनाथप्रसाद, श्री
वीरसेन, श्री
बैजनाथ पाण्डेय, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुन्तला देवी, श्रीमती
शकुन्तला नायर, श्रीमती
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शशिभूषणसिंह, श्री

शान्तिचन्द्र शुक्ल, श्री
शांतिप्रपन्न शर्मा, श्री
शारदानन्द, श्री
शिब्बनलाल सक्सेना, श्री
शिवचरण, श्री
शिवदानसिंह, श्री
शिवनार्थसिंह, श्री
शिवमंगल, श्री
शिवसंपत्ति शर्मा, श्री,
शिवेन्द्रप्रताप, श्री
शीतलप्रसाद, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
शुगनचन्द शर्मा, श्री
शौकत हमीद खां, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामसुन्दर शुक्ल, श्री
श्रद्धादेवी, कुमारी
श्रीनिवास, श्री
श्रीपत मिश्र, श्री
श्रीपालसिंह, कुंवर
श्रीराम, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
सईद अहमद, श्री
सत्यदेव, श्री
सत्यनारायण पाण्डेय, श्री
सत्यवीर कुंवर, श्री
सन्तसिंह यूसुफ, श्री
सरदारसिंह, श्री
सहदेवसिंह, श्री
सालिग्राम जैसवाल, श्री
सियादुलारी, श्रीमती
सियाराम गंगवार, डाक्टर
सीताराम, डाक्टर
सुक्खनलाल, श्री
सुखदेवप्रसाद, श्री
सुखरामदास, श्री
सुखलाल, श्री (इटावा)
सुखलाल, श्री (लखनऊ)
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरजनराम विशारद, श्री
सुरेन्द्र दत्त बाजपेयी, श्री
सुरन्द्रविक्रम, श्री
सुशीला रोहतगी, श्रीमती
सूबेदारसिंह, श्री
सूरजपालसिंह यादव, श्री
सूरजलाल गुप्त वकील, श्री
सेवाराम, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीद खां, श्री
हरिगैनराम, श्री
हरिनाथ तिवारी एडवोकेट, श्री
हरीदत्त काण्डपाल, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीसिंह, श्री
हलीमुद्दीन, श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
हेतरामसिंह, श्री
हेमराज, श्री
होतीलाल अग्रवाल, श्री
होरीलाल यादव, श्री

नोट---गृहमंत्री, श्री हरगोविन्दसिंह तथा गृह उपमंत्री, श्री शिवप्रसाद गुप्त भी उपस्थित थे।

प्रश्नोत्तर

मंगलवार, ७ सितम्बर, १९६५

अल्पसूचित तारांकित प्रश्न

बालिका विद्यालयों में विकास शुल्क

**१---श्री हरीशकुमार गंगवार (जिला बरेली)---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि शिक्षा विभाग ने बालिकाओं से इस वर्ष सहायता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा ११ में दूनी फीस लेने के आदेश जारी कर दिये गये हैं जिससे जनता में असंतोष व्याप्त है।

वित्त उप मंत्री (श्री जयराम वर्मा)---

जी नहीं, विभाग द्वारा ऐसा कोई आदेश जारी नहीं किया गया है।

*२--श्री हरीशकुमार गंगवार--

क्या यह सही है कि कक्षा ६ से १२ तक इस वर्ष विकास शुल्क भी वसूल किये जाने के आदेश भेजे गये हैं ?

श्री जयराम वर्मा--

जी हां ।

श्री हरीशकुमार गंगवार--

क्या माननीय मंत्री जी को इस बात की जानकारी है कि लड़कियों के दो विद्यालयों में, एक तो लालबाग हायर सेकेन्डरी और दूसरा भारतीय बालिका विद्यालय में, अगस्त मास में १४-१४ रुपये फीस के नाम पर वसूल किये गये हैं ?

श्री जयराम वर्मा--

निश्चित तौर पर शिक्षा संस्थाओं के नाम तो नहीं बताये जा सकते हैं, लेकिन यह सत्य है कि कुछ शिक्षा संस्थाओं के खिलाफ ऐसी शिकायतें आयी हैं, कि उन्होंने अनधिकृत रूप से फीस वसूल की है। इसकी जांच की जा रही है और जांच के उपरान्त अनधिकृत फीस वापस कर दी जाएगी ।

श्री हरीशकुमार गंगवार--

क्या माननीय मंत्रीजी यह बताने की कृपा करेंगे कि कक्षा ६ तक और १२ तक किस दर से किस-किस तक विकास शुल्क के नाम पर वसूल किया जा रहा है और क्या यह भी सही है कि इन बालक और बालिकाओं की शिक्षा संस्थाओं ने और भी इससे ज्यादा फीस वसूल की है ?

श्री जयराम वर्मा--

विकास शुल्क की दर इस प्रकार है--कक्षा ६ से ८ तक २५ पैसे, कक्षा ९ और १०-५० पैसे और कक्षा ११ व १२-७५ पैसे ।

श्री हरिनाथ तिवारी एडवोकेट (जिला फैजाबाद)--

माननीय मंत्री जी के उत्तर से संबंधित मंत्री जी ने कहा कि इसकी जांच की जा रही है और जिन स्कूलों ने ज्यादा फीस वसूल की है वह वापस करा दी जाएगी। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि सरकार के स्पष्ट आदेश होने के बावजूद कि इससे ज्यादा फीस न विद्यार्थियों से वसूल की जाये, जिन विद्यालयों ने वसूल की है। उनमें फीस वापस करा देना ही काफी होगा। क्या उनके खिलाफ अन्य कार्यवाही करने की आवश्यकता नहीं है और आप उनके विरुद्ध क्या कार्यवाही करने जा रहे हैं ?

श्री जयराम वर्मा--

अब यह आदेश जारी कर दिये गये हैं कि जिन विद्यालयों में अधिक फीस वसूल की हो उसे वापस कर दें और इस पर भी जो विद्यालय फीस वापस नहीं करते हैं तो उनको कोई अनावर्तक अनुदान नहीं दिया जायगा ।

श्री ऊदल--

छठवीं कक्षा तक सरकार ने शिक्षा निःशुल्क कर रही है तो उसके ऊपर भी विकास शुल्क क्यों लगाया गया ? मैं यह जानना चाहता हूं ।

श्री जयराम वर्मा--

छठवीं कक्षा से लगाया गया है और यह है कि जिन विद्यार्थियों की पूरी फीस माफ है उनसे नहीं लिया जा रहा है, जिनकी आधी माफ है उनसे आधा लिया जा रहा है ।

श्री अध्यक्ष---

माननीय सदस्य का प्रश्न यह है कि अगर छठी कक्षा में शुल्क मुक्ति है तो उस कक्षा के छात्रों से विकास शुल्क क्यों नहीं लिया जा रहा है ।

श्री जयराम वर्मा---

यह तो शिक्षा संस्थाओं के विकास और प्रसार की गुंजायश के लिये किया गया है ।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद (जिला सीतापुर)---

क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने के जो लड़कियों के विद्यालय हैं, उन पर भी यह आदेश लागू होता है ?

श्री जयराम वर्मा--

यह निश्चित सूचना तो मेरे पास नहीं है, लेकिन मैं समझता हूं यह उन पर लागू नहीं होता है ।

श्री माताप्रसाद (जिला जौनपुर)---

क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि गरीबों और हरिजन छात्रों से भी यह विकास शुल्क लिया जाता है अथवा नहीं ?

श्री जयराम वर्मा---

हरिजन छात्रों से नहीं लिया जाता है और जिनकी पूरी फीस माफ है उनसे बिलकुल नहीं लिया जाता है और जिनकी आधी माफ है उनसे आधा लिया जाता है ।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद---

यह नियम अंग्रेजी स्कूलों पर क्यों नह नहीं लागू होता है, जब कि उन्हें सरकार द्वारा अनुदान दिया जाता है ?

श्री जयराम वर्मा---

वहां पर फीस की दर ही इतनी ज्यादा है कि इसके लगाने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ी ।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद---

इसमें फीस मुक्त होने का क्या सवाल है ?

श्री अध्यक्ष---

वे कहते हैं कि वहां फीस ज्यादा ली जाती है इसलिये उन पर नहीं है ।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद---

क्या सरकार निश्चित रूप से बतायेगी कि सरकार अपने इस आदेश को अंग्रेजी स्कूल में तत्काल कब लागू करा देगी ?

श्री अध्यक्ष---

यह तो नया प्रश्न हो गया ।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद---

यह तो प्रश्न २ के अन्तर्गत है । जो बालिकायें इंगलिश माध्यम से पढ़ाई जाती हैं उन पर यह लागू नहीं है, तो क्या सरकार उन पर लागू करेगी और करेगी, तो कब से ?

श्री जयराम वर्मा---

यह आदेश तो साधारण प्रकार के मान्यता प्राप्त संस्थाओं पर लागू है, अंग्रेजी स्कूल विशेष मान्यता प्राप्त संस्थायें हैं ।

श्री राजनारायण मिश्र (जिला कानपुर)---

साधारण और विशेष मान्यता से सरकार का क्या तात्पर्य है ?

श्री जयराम वर्मा---

"साधारण" विशेषण है उस संस्था का ।

श्री हरीशकुमार गंगवार---

क्या सरकार कक्षा १० तक फीस माफ करने की वजह से जो वातावरण निर्माण हुआ था वह अनधिकृत रूप से फीस लेने के कारण और माटेसरी स्कूलों में तो और फीस बढ़ा देने के कारण नष्ट हो गया है, तो सरकार उनसे शुल्क को वापस दिलायेगी ?

श्री जयराम वर्मा---

यह शुल्क इसलिये लिया गया है कि जमींदारी खत्म हो जाने के बाद जमींदारों से जो थोड़ी सहायता मिलती थी वह समाप्त हो गयी और शिक्षा संस्थाओं के पास अपना कोई स्रोत नहीं रहा आमदनी का, तो उनका विकास और प्रसार बहुत कठिन हो गया। बहुत दिनों से यह मामला सरकार के विचाराधीन था उनकी आर्थिक स्थिति कैसे सुधारी जाय और यह तरकीब उसको ठीक करने के लिये निकाली गयी कि उनको इस तरह से फीस लेने की इजाजत दी जाय ।

श्री रघुनाथसिंह (जिला वाराणसी)---

यह विकास शुल्क शिक्षा संस्थाओं के विकास और प्रसार के लिये लिया जाता है तो क्या विकास शुल्क से जो आमदनी होगी क्या शिक्षा संस्थाओं के लिये यह है कि उसको चाहे जैसे खर्च कर सकते हैं या शिक्षा विभाग कोई मद निश्चित करेगी जिन पर उनको खर्च करना पड़ेगा ?

श्री जयराम वर्मा---

उसके लिये नियम बना दिये गये हैं और उनको बता दिया गया है कि किस तरह से उसे खर्च किया जा सकता है ।

कामरेड शेरसिंह को गोरखपुर जेल से रिहा करने की मांग

**३---श्री झारखण्डे राय (जिला आजमगढ़)---

क्या मुख्य मंत्री बतायेंगे कि मार्क्सिस्ट कम्युनिस्ट पार्टी के देवरिया के सर्वप्रमुख नेता, श्री शेरसिंह जो गोरखपुर जेल में लगभग ८ माह से नजरबन्द हैं, जेल अस्पताल में हार्ट ब्लड प्रेशर, ब्लड शूगर तथा फाइलेरिया आदि भयंकर एवं घातक रोगों के शिकार होकर मरणासन्न अवस्था में पड़े हैं ? यदि हां, तो क्या सरकार उन्हें बाहर रिहा कर उपचार की सुविधा देने पर विचार कर रही है ?

विद्युत् उप मंत्री (श्री शांतिप्रपन्न शर्मा)---

मेडिकल रिपोर्ट के अनुसार श्री शेरसिंह मामूली कारोनरी थ्रामबोसिस (Mild Coronary Thrombosis) से पीड़ित हैं तथा जिला अस्पताल, गोरखपुर में उनका समुचित इलाज किया जा रहा है । जहां तक उनकी रिहाई का प्रश्न है, चूंकि वह केन्द्रीय सरकार के आदेश से निरुद्ध किये गये हैं अतएव उनको केन्द्रीय सरकार ही रिहा कर सकती है ।

श्री झारखण्डे राय--

शेरसिंह जी जेल से अस्पताल कब लाये गये ? हाई ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, हार्ट और फाइलेरिया के वे मरीज हैं उनके सम्बन्ध में सरकार के पास डाक्टरी रिपोर्ट क्या है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

ये जेल से अस्पताल कब लाये गये, यह सूचना मेरे पास नहीं है । लेकिन मेडिकल रिपोर्ट ३ सितम्बर की है, उसमें है कि उनको माइनर कारोनरी थ्राम्बासिस है और उसका इलाज हो रहा है ।

श्री अध्यक्ष--

वह ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, हार्ट और फाइलेरिया के बारे में जानना चाहते हैं, कोई सूचना हो तो बता दें ।

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

उनका ब्लड प्रेशर १०५ और ७० है और पल्स रेट्स ७२ है ।

श्री झारखण्डे राय--

उनको जेल में अटैक, दर्द ९ बजे रात आरम्भ हुआ और जेल में बार बार लिखने के बाद भी ढाई बजे रात से पहले उनको क्या कोई डाक्टरी सहायता नहीं मिली ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

ऐसी कोई सूचना मेरे पास नहीं है ।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)--

कामरेड शेरसिंह हमारे जिले के रहने वाले हैं मैं उनको २० साल से जानता हूं और पालीवाल जी को मैं बता दूं कि चीन का जब हमला हुआ तो कलेक्टर साहब के साथ वे सुरक्षा कोष में रुपया इकट्ठा कर रहे थे । यह उनकी देशभक्ति का प्रमाण है ।

श्री अध्यक्ष--

प्रश्न कीजिये । इससे कोई सम्बन्ध नहीं है ।

श्री बद्रीप्रसाद पालीवाल (जिला इटावा)--

एक व्यवस्था का प्रश्न है । प्रश्नों के मध्य बहस की इजाजत नियमानुकूल नहीं है ।

श्री अध्यक्ष--

ठीक है, उग्रसेन जी प्रश्न कीजिये ।

श्री उग्रसेन--

श्रीमन्, अब मैं इनके दिमाग की क्या दवा कर सकता हूं । मैं तो सिर्फ उनकी बात का जवाब दे रहा था । मेरा प्रश्न यह है कि जब उनकी सेहत खराब है तो दवा कराने के लिये क्या सरकार केन्द्रीय सरकार से सिफारिश करेगी कि उनको बाहर कर दिया जाय ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

उनका इलाज हो रहा है और केन्द्रीय सरकार को उनकी बीमारी की रिपोर्ट केबिलग्राम से भेज दी गयी है ।

कुंवर श्रीपालसिंह (जिला जौनपुर)—

क्या माननीय मंत्री जी इस बात पर विचार करेंगे कि यहां भारतवर्ष में इनका इलाज अच्छा नहीं हो पा रहा है तो इनको रूस या चीन भेज दिया जाय, जहां पर इनका अच्छा इलाज हो सके ?

श्री अध्यक्ष—

वह कह रहे हैं कि अच्छा इलाज हो रहा है ।

श्री कमलासिंह यादव (जिला गाजीपुर)—

क्या माननीय मंत्री जी जितने नजरबन्द लोग हैं उनके परिवारों को, नियमानुसार फैमिली अलाउन्स देने की व्यवस्था करेंगे ?

श्री अध्यक्ष—

प्रश्न यह है कि ठीक इलाज हो रहा है या नहीं ।

श्री सन्तसिंह यूसुफ (जिला कानपुर)—

मैं यह जानना चाहता हूं कि भारतवर्ष में तमाम सूबों में ऐसे बीमार आदमियों को पैरोल पर छोड़ दिया गया है । इनके लीडर को भी छोड़ दिया गया है और उनको मास्को जाने की सुविधा प्रदान की गई है । तो ह्यूमनिटेरियन ग्राउन्ड पर जो लोग बीमार हैं, उनको पैरोल पर छोड़ने की सरकार कृपा करेगी ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

यह पैरोल की दरख्वास्त देंगे तो उस पर हम विचार करेंगे ।

श्री झारखण्डे राय—

क्या सरकार मेरे सुझाव पर विचार करेगी कि गोरखपुर में उपयुक्त दवाओं का अभाव है इसलिये उनको कम से कम लखनऊ लाकर बलरामपुर अस्पताल में या मेडिकल कालेज में इलाज कराने की व्यवस्था हो जाय ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

जैसे इलाज की जरूरत है उसका गोरखपुर में सब इन्तजाम है ।

श्री उग्रसेन—

हम देखते हैं कि वहां पर दवाइयों का इन्तजाम नहीं रहता है । १९ नम्बर की दवा रहती है । ९ बजे रात में वह बीमार सख्त पड़े लेकिन २।। बजे तक उनकी बीमारी का कोई प्रबन्ध नहीं हुआ । इस बात को विधान सभा में कहा गया और झारखंडेराय जी ने भी कहा कि सरकार इसकी जांच करेगी ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

वहां पर इलाज की व्यवस्था सब कुछ है । इसकी जानकारी मेरे पास है ।

तारांकित प्रश्न

[उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमावली, १९५८ के नियम ३९ (२) के अन्तर्गत प्राथमिकता दिये गये तारांकित प्रश्न]

वाराणसी तहसील में नलकूप

*१—श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—

क्या सिंचाई मंत्री को पता है कि जिले की तहसील वाराणसी में बड़ागांव ट्यूबवेल करीब ५ मास से बैठ गया है और वहां अप्रैल, १९६५ में ट्यूबवेल दूसरा गड़ जाना चाहिये था परन्तु न गड़ने से किसानों की ऊख की फसल सूख रही है ? यदि हां, तो ट्यूबवेल अब तक न गड़ने का कारण क्या है ? क्या मदनपुर नलकूप की मोटर भी जल गयी जिससे नलकूप १५–२० दिन, तथा तरसड़ा नलकूप भी १५–२० दिन मई, सन् १९६५ में बन्द रहा ? यदि हां, तो इन नलकूपों को जल्द से जल्द चालू न करने का कारण क्या है और इसके लिये कौन जिम्मेदार है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

बड़ागांव नलकूप को, बन्द होने पर, एयर कम्प्रेशर से डेवलप (develope) कर के ठीक करने का प्रयत्न किया गया परन्तु विफल होने पर अब इसकी दुबारा बोरिंग करने का निश्चय किया गया है और अगली रबी तक इसके पुनः चालू हो जाने की आशा पाई जाती है । मदनपुर का नलकूप मोटर जलने के कारण २१ दिन बंद रहा । मोटर को ठीक करने के लिये तांबे का तार उपलब्ध न होने के कारण इसको जल्दी चालू न किया जा सका । रसड़ा का नलकूप पम्प की खराबी के कारण मई, ६५ में ११ दिन बंद रहा । ९-५-६५ को पम्प जाम हो जाने से यह नलकूप बन्द हो गया । पम्प खोलने पर वाऊल असेम्बली के बुश तथा शैफ्ट आदि कटे हुये मिले । पूरी वाऊल असेम्बली की मरम्मत और बुश बदलने के बाद पम्प पुनः फिट करके नलकूप को २०–५–६५ को पुनः चालू कर दिया गया ।

*२—श्री ऊदल—

क्या सिंचाई मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि वाराणसी तहसील के गांव बहुतरा, हसनपुर, विरांव, जगदीशपुर, रामपुर, सुरही, रामनगर बूंची, तथा रामनगर चमरू, ढोरा में जो ट्यूबवेल तृतीय पंचवर्षीय योजना के ५०० पूर्वी जिलों के ट्यूबवेलों में से लगने वाले थे इस वित्तीय वर्ष में ये लग जायेंगे ? क्या इनमें बहुतरा, जगदीशपुर, सुरसी, रामपुर तथा रामनगर बूंची, चमरू परगना कोल असला तथा हसनपुर विरांव परगना पन्द्रह में ट्यूबवेल ११० ट्यूबवेलों की योजना में भी लगने वाले थे ? यदि हां, तो ११० व ५०० ट्यूबवेलों में से अब तक इन स्थानों पर न लगने के कारण क्या हैं ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

११० नलकूप योजना में से प्रश्न में उल्लिखित गांवों में कोई भी नलकूप नहीं लगना है । ५०० नलकूप निर्माण की योजना जो पूरे प्रदेश के लिये है, के अन्तर्गत प्रश्न में उल्लिखित गांवों में से केवल पांच गांव अर्थात् बहुतरा, हसनपुर, विरांव, जगदीशपुर, रामपुर और सुराई में प्रस्तावित है । सर्वेक्षण आदि पूर्ण होने के बाद ही बोरिंग कार्य आरम्भ हो सकता है अतएव इस वित्तीय वर्ष में इनके लग जाने की सम्भावना प्रतीत नहीं होती ।

श्री ऊदल—

क्या माननीय मंत्री जी बतायेंगे कि यह बड़ागांव का नलकूप कब खराब हुआ और यह एयर कम्प्रेशर का काम कब शुरू हुआ ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

यह २८–११–१९६४ को बिलकुल खराब हो गया था । यह सूचना मेरे पास नहीं है कि एयर कम्प्रेशर का काम कब से शुरू हुआ लेकिन जब यह देखा गया कि यह डेवलप नहीं होता तो इसको छोड़ दिया गया और दूसरा बोर करने का इन्तजाम किया जा रहा है ।

श्री ऊदल--

क्या मंत्री जी बतलायेंगे कि नवम्बर में यह नलकूप फट गया था, मई में मैं स्वयं मौके पर गया और सिंचाई विभाग के अधिकारियों से बातचीत की । उन्होंने बताया कि अप्रैल तक यह ठीक हो जाना चाहिये । उसके बाद मैंने लिख कर दिया । उसके बाद जून के बाद जुलाई में उन्होंने कम्प्रेसर लगाया, तो क्या मंत्री जी यह जांच कराने की कृपा करेंगे कि जब दुबारा बोरिंग करने का फैसला हो चुका था तो फिर कम्प्रेसर लगाने की क्या आवश्यकता थी ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा---

यह देखने के लिये कम्प्रेसर लगाया गया होगा कि यह ठीक हो सकता है या नहीं ।

श्री कमलासिंह यादव--

पूर्वी जिलों में आम शिकायत है कि ट्यूबवेल्स के मोटर्स जल जाया करते हैं । क्या मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि इन मोटरों के जल जाने का क्या कारण है और इसे रोकने की क्या व्यवस्था है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

मशीनें तो खराब हो ही जाया करती हैं, लेकिन इंतजाम यह किया गया है कि दस परसेंट स्पेयर हमेशा रहें ताकि खराब मशीनों को फौरन बदला जा सके ।

श्री जगदम्बाप्रसाद (जिला फैजाबाद)--

मोटर जलने की शिकायत पूर्वी जिलों में आमतौर से है और इस सूखे के समय में भी बहुत से मोटर बेकार पड़े हैं, तो सरकार इस संबंध में क्या व्यवस्था करने जा रही है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा---

इसके लिये हमने स्पेयर पार्ट्स की व्यवस्था की है । यह इंतजाम किया है कि वोल्टेज ठीक रहे और अगर कोई मोटर जल जाता है तो उस की दुरुस्ती फौरन की जाय ।

श्री श्रीराम (जिला बिजनौर)---

सरकार को तांबे का तार उपलब्ध नहीं होता जब कि प्राइवेट लोगों को फौरन मिल जाता है, इसका कारण क्या यह है कि सरकार के सुपरवाइजर और मिस्त्री इस बात की कोशिश करते हैं कि किसान आकर उनको पैसा दें ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा---

प्राइवेट आदमी तो चाहे जिस रेट पर खरीद सकता है लेकिन हम को यह डाइरेक्टर आफ इंडस्ट्रीज के थ्रू खरीदना पड़ता है इस वजह से देर हो जाती है । हम कोशिश कर रहे हैं कि हम तार पहले से खरीद कर रख लें ।

श्री ऊदल---

तरसड़ा और मदनपुरा में जो मशीनें जल गयी थीं उनकी रिपोर्ट मैंने स्वयं पहुंचे की थी, विभागीय अधिकारियों ने नहीं । तो यह नवम्बर में खराब हुआ, उसके बाद रबी की सिंचाई हुई, उस समय कम्प्रेशर नहीं लगाया गया, फिर फरवरी और मार्च में भी सिंचाई यूं ही पड़ी रही । फिर फैसला हुआ कि दूसरा ट्यूबवेल बनाया जायगा, उसके बाद की फसल भी सूख गयी । उस के बाद यह कम्प्रेशर आया । क्या इसकी जांच मंत्री जी करायेंगे कि ऐसा क्यों हुआ ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा---

आपकी जानकारी के लिये बतला दूं कि जहां तक तरसड़ा वाले नलकूप की बात है हमारा सुपरवाइजर कोशिश कर रहा था कि वह स्वयं ही इसे काम करने लायक बना ले । इसी वजह

से उसने रिपोर्ट नहीं की । हमने उस से एक्सप्लेनेशन मांगा है और अगर हम उसकी गलती देखेंगे तो उसे सजा मिलेगी ।

श्री झारखण्डे राय--

क्या मंत्री जी इस सुझाव पर विचार करेंगे कि कोई ऐसा आदेश देंगे कि ऐसे ताव के मौके पर जब नलकूप फेल हो जाते हैं तो कोई टाइम लिमिट बांध दें कि जिसके अन्दर उनका रिपेयर हो जाय ताकि सिंचाई में बाधा न पड़े और पैदावार पर चोट कम पड़े ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

यह आदेश हैं कि नलकूप को जल्दी से जल्दी सुधार कर के चलावें । इसके अलावा इंजिन वगैरह का जो सामान है उसके लिये ट्यूबवेल के लिये एक अलग डायरेक्टर बनाया है, वह इस चीज पर विचार कर रहे हैं ।

श्री ऊदल---

आपने इन्कार किया है कि ११० नलकूप जो लगने हैं वह इन गांवों में किसी में, लगने वाले नहीं थे । मुझे आपके एग्जिक्यूटिव इंजीनियर, शिवराजसिंह ने एक पत्र लिखा था कि हसनपुर ब्लाक में एक नलकूप इन ११० नलकूपों में से लगा दिया जाय । अगर उस पत्र को मैं दे दूं आपको तो क्या आप उनके खिलाफ कार्यवाही करने की कृपा करेंगे ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

कार्यवाही क्यों करेंगे ? चिट्ठी भेज दीजिये, हम उसको देख लेंगे ।

आनरेरी मैजिस्ट्रेट बेंच, मथुरा

*३--श्री हिम्मतसिंह (जिला बुलन्दशहर) (अनुपस्थित)--

क्या न्याय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि मथुरा नगर की अवैतनिक मैजिस्ट्रेटों की वर्तमान लोकल बेंच कब से काम कर रही है तथा उसके सदस्य कौन-कौन तथा किस-किस समय से हैं ?

न्याय मंत्री (श्री सैयद अली जहीर)--

मथुरा नगर की पिछली बेंच नं० १ ने ७-१०-६० से तथा बेंच नं०२ ने २०-४-६३ से कार्य प्रारम्भ किया ।

इन बेंचों के सदस्यों के विषय में वांछित सूचना निम्नलिखित है :

	सदस्य		कार्यकाल	
बेंच नं० १	१--श्री रनजीत सिंह	..	७-१०-६० से	३०-४-६५
	२--श्री गंगा चरन पालीवाल	..	७-१०-६० से	३०-४-६५
	३--श्री तेजपालसिंह	..	७-१०-६० से	१९-५-६४
बेंच नं० २	१--श्री नन्दकिशोर पाठक	..	२०-४-६३ से	१५-८-६५
	२--श्री अब्दुल गनी	..	६-७-६३ से	१५-८-६५
	३--श्री फतेहलाल गोयल	..	२०-४-६३ से	३०-६-६५

कुरइया नहर से पानी न मिलने की शिकायत

*४—श्री राजेन्द्रसिंह (जिला एटा) (अनुपस्थित)—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जिला फतेहपुर में गंगा नहर के कुरइया माइनर में अप्रैल, मई, जून, १९६३ के महीने में कितनी बार कितने-कितने दिन पानी सिंचाई के लिये उपलब्ध रहा ?

श्री गिरधारीलाल—

कुरइया नाम की माइनर फतेहपुर जिले में नहीं बल्कि कानपुर जिले में है। उसके चलने की सूचना संलग्न सूची में दी हुई है।

(देखिये नत्थी 'क' आगे पृष्ठ २१४ पर)

*५—श्री राजेन्द्रसिंह (अनुपस्थित)—

क्या यह सत्य है कि उक्त अवधि में पानी क्षेत्र की सिंचाई में पर्याप्त न होने के कारण आस-पास की कृषि सूख गयी ? यदि हां, तो क्या जांच कराकर सरकार अधिक पानी देने की व्यवस्था करेगी तथा प्रभावित लोगों की क्षति पूर्ति के लिये मुआवजा देने की व्यवस्था करने की कृपा करेगी ?

श्री गिरधारीलाल—

प्रथम भाग—जी नहीं।

द्वितीय भाग—प्रश्न नहीं उठता।

सिंचाई विभाग में सर्वेयर

*६—श्री खुशीराम (जिला अल्मोड़ा)—

क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि सिंचाई विभाग में कितने सर्वेयर्स नियुक्त हैं, इनकी पदोन्नति का विभाग में क्या नियम है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

सिंचाई विभाग में इस समय एक सर्वेयर कार्य कर रहा है।

इनकी पदोन्नति का इस विभाग में कोई नियम नहीं है।

*७—श्री खुशीराम—

क्या यह सही है कि सिंचाई विभाग नें सर्वेयर्स की पदोन्नति के नियमों में अब कुछ बदलाव कर दिया है ? यदि हां, तो अब पदोन्नति का क्या नियम रखा गया है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

प्रश्न नहीं उठता।

चीफ इंजीनियर, सिंचाई विभाग

*८—श्री रामचन्द्र विकल (जिला बुलन्दशहर)—

क्या सिंचाई मन्त्री कृपया बतायेंगे कि सिंचाई विभाग में कितने चीफ इंजीनियर हैं और उनके जिम्मे क्या-क्या कार्य हैं ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

सिंचाई विभाग में एक चीफ इंजीनियर है, जिसके जिम्मे के कार्यों की सूची सदन की मेज पर प्रस्तुत है।

(देखिये नत्थी 'ख' आगे पृष्ठ २१५ पर)

*९—श्री रामचन्द्र विकल—

क्या सिंचाई मन्त्री कृपया यह भी बतायेंगे कि किस-किस चीफ इंजीनियर की नौकरी की अवधि अब तक बढ़ाई गई है और कितने-कितने वर्ष के लिए ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

श्री जयन्तीप्रसाद जैन, चीफ इंजीनियर की नौकरी की अवधि ५८ साल की आयु पूर्ण करने के पश्चात् ३१ दिसम्बर, १९६५ तक बढ़ाई गई है।

श्री रामचन्द्र विकल—

क्या माननीय सिंचाई मन्त्री बतायेंगे कि उत्तर प्रदेश में ऐसे सर्किल कितने हैं और जैन साहब के अलावा बाकी का काम कौन देखते हैं और उनके पद क्या कहलाते हैं ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

अगर आप लिस्ट देख लें तो उसमें सब दिया हुआ है।

श्री रामचन्द्र विकल—

क्या मन्त्री जी बतायेंगे कि श्री अखिलचन्द्र मित्रा, श्री ओ० पी० गुप्ता और श्री योग जो सिंचाई विभाग में काम करते हैं उनके पद क्या हैं और वह किस नाम से पुकारे जाते हैं ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

श्री मित्रा, वह इंजीनियर इन चीफ हैं। श्री ओ० पी० गुप्ता, एडीशनल चीफ इंजीनियर हैं तथा श्री पुरुषोत्तम सिंह योग, डायरेक्टर ट्यूबवेल्स हैं।

श्री झारखण्डेराय—

क्या सरकार ने कोई ऐसी व्यवस्था की कि जो हेड क्वार्टर्स पर इंजीनियर रखे जाते हैं, यह फील्ड पर भी रखे जाया करें और इस तरह से दोनों की अदला-बदली समय-समय पर हुआ करें ताकि उनको दोनों जगह का तजुर्बा हो ?

श्री गिरधारीलाल—

ऐसी कोई व्यवस्था या विचार नहीं है। जितने यह चीफ इंजीनियर आदि हैं यह फील्ड के तजुर्बे के बाद ही रखे जाते हैं। उसके बाद यह वहां का इन्स्पेक्शन कार्य आदि भी देखते हैं।

श्री उग्रसेन—

जब अन्य प्रदेशों में जहां कि इतने बड़े-बड़े काम हो रहे हैं कोई इंजीनियर इन चीफ नहीं है तो अपने प्रदेश में इसे रखने की क्या जरूरत पड़ी ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

हर स्टेट में श्री मित्रा जैसे इंजीनियर भी नहीं हैं।

(व्यवधान)

श्री मुमताज मुहम्मद खां (जिला बुलन्दशहर)—

क्या सरकार को इस बात की भी जानकारी है कि इस विभाग में जो इतना भ्रष्टाचार है उसमें इन चीफ इन्जीनियर्स की भी साठ-गांठ है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

भ्रष्टाचार की कोई सूचना हमारे पास नहीं है।

श्री बृजबिहारी--

मैं यह जानना चाहता हूं कि यह डायरेक्टर का पद कब से बनाया गया है और उनका कर्तव्य क्या है ?

श्री गिरधारीलाल--

हमारे सूबे में ८ हजार से अधिक ट्यूबवेल्स हैं एक एडीशनल इंजीनियर इस काम को देखता था। इसमें बहुत-सी दिक्कतें महसूस हुईं। इसलिए एक डायरेक्टर ट्यूबवेल्स का काम देखने के लिए बनाया गया। यह अभी महीना भर हुआ है पद क्रीएट किए हुए।

श्री नेकराम शर्मा (जिला अलीगढ़)--

क्या सरकार कृपा कर बताएगी कि प्रदेश में इस वक्त कितने चीफ इंजीनियर्स हैं और क्या उनकी संख्या बढ़ाने पर सरकार विचार कर रही है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

इस वक्त एक इंजीनियर इन चीफ हैं, एक चीफ इंजीनियर हैं, दो एडीशनल चीफ इंजीनियर हैं, दो चीफ प्रोजेक्ट इंजीनियर हैं। अभी १० रोज हुए, मैं ओबरा बांध का निरीक्षण करने डा० राव, केन्द्रीय सिंचाई मन्त्री के साथ गया था। उन्होंने कहा कि ओबरा बांध के लिए एक अलग चीफ इंजीनियर की आवश्यकता है।

श्री नरसिंह नारायण पांडेय (जिला गोरखपुर)--

श्रीमन्, जितने ही चीफ इंजीनियर और इंजीनियर बढ़ाए जा रहे हैं उतनी ही काम में शिथिलता पायी जा रही है। तो क्या सरकार इस बात पर विचार करेगी कि इन बड़े-बड़े पदों को कम करके जो नीचे के काम करने वाले कर्मचारी हैं, उनके पदों को और बढ़ाया जाय और टाप हैवी ऐडमिनिस्ट्रेशन को समाप्त किया जाय ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

इस तरह की बात नहीं सोच रहे हैं बल्कि जो मांग है वह यह है कि जो बड़े-बड़े प्रोजेक्ट्स हैं उनमें अलग-अलग चीफ इंजीनियर रक्खे जायं जिससे वे तमाम चीज को देख सकें और देखकर प्रोजेक्ट्स जल्दी बन सकें। जितने प्रोजेक्ट्स डिले होंगे उतना ही नुक्सान होता है।

श्री रामचन्द्र विकल--

क्या माननीय मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि जब उन्होंने स्वयं माना है कि इंजीनियर-इन-चीफ और एडीशनल चीफ हैं तो उत्तर में इंजीनियर क्यों बताया ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

आपने चीफ इंजीनियर पूछा था। आप उसका जवाब भी पूछें तो जवाब दे दें।

श्री रामचन्द्र विकल--

क्या माननीय मन्त्री जी देश में संकटकाल को देखते हुए इस तरह के बढ़ते हुए विभागों को कम करने की सोच रहे हैं ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री अध्यक्ष--

अभी उन्होंने बताया, जब सवाल पूछा था।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद--

क्या माननीय मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि चीफ इंजीनियर के पदों पर जिनकी उन्नति होती है, क्या वे वही लोग हैं जिन पर यमुना हाइडिल में मिसएप्रोप्रिएशन के चार्जेज थे ?

श्री अध्यक्ष--

यह दूसरा सवाल है।

श्री बलवानसिंह--

क्या यह सरकार को ज्ञात है कि जितने भी चीफ इंजीनियर्स बढ़ रहे हैं उतना ही विभाग में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है।

(उत्तर के लिए मन्त्री को नहीं पुकारा गया।)

खोर गांव के लिए बिजली की मांग

*१०--श्री ऊदल--

क्या सिंचाई मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि गांव खोर, परगना बुढ़वल, तहसील चन्दौली, जिला वाराणसी जिसकी आबादी १६ हजार के ऊपर है, सरकार इस गांव के विद्युतीकरण करने पर विचार करेगी जबकि गांव से थोड़ी दूर पर सकलडीहा से धरहरा होते हुए बिजली की लाइन है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

ग्राम खोर, परगना बुढ़वल, जिला वाराणसी की जनसंख्या १९६१ की जनगणना के अनुसार १,५३७ है और इसके विद्युतीकरण के लिए ५ मील लम्बी ११,००० वोल्ट्स की लाइन बनानी पड़ेगी इसलिए वर्तमान समय में इसका विद्युतीकरण परिषद् के मापदण्ड के अनुसार सम्भव नहीं है। सकलडीहा से धरहरा तक अभी कोई भी लाइन नहीं है।

श्री ऊदल--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इस क्षेत्र में सकलडीहा के आसपास बड़े-बड़े गांव हैं, तो क्या उन गांवों का सर्वे सरकार कराएगी ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

सर्वे किया हुआ है। बिजली लाइनें लगाने के लिए पैसा नहीं है। उसके लिए आगे सोचेंगे।

[७ सितम्बर, १९६५ के लिए निर्धारित तारांकित प्रश्न]

उत्तरकाशी की विद्युत योजनायें

*१--श्री ऊदल--

क्या सरकार बदरपुर नामक स्थान में ताप बिजली परियोजना चालू करने के सम्बन्ध में विचार कर रही है ? यदि हां, तो इसमें कितना रुपया व्यय होगा और इससे कितनी बिजली पैदा होगी तथा क्या इस योजना से राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश तथा दिल्ली को भी बिजली मिलेगी ? यदि हां, तो क्या इस योजना में ये प्रान्त भी अपना-अपना हिस्सा देंगे और हिस्सा कितने-कितने का होगा ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

बदरपुर नामक स्थान पंजाब प्रदेश में है और इस जगह ताप बिजली परियोजना चालू करने की उत्तर प्रदेश सरकार की कोई योजना नहीं है।

*२--श्री ऊदल--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि उत्तरकाशी के विकास क्षेत्र, पुरोला, मढ़वाड़ी, नौगांव में ५ जल विद्युत् योजनायें जो १२ लाख के करीब की हैं उनका सर्वेक्षण सन् १९६३ में समाप्त हो चुका है, परन्तु उनका निर्माण-कार्य अब तक शुरू न होने का कारण क्या है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा---

जी नहीं।

केवल भटवारी क्षेत्र में एक योजना का प्रारम्भिक सर्वेक्षण १९६३ में किया गया था और विस्तृत सर्वेक्षण सन् १९६४ में पूर्ण हुआ था। भटवारी पावर प्रोजेक्ट के नाम से एक योजना तैयार की गई है। यह योजना राज्य विद्युत् परिषद् के विचाराधीन है। अतः पांच योजनाओं को कार्यान्वित करने म किसी प्रकार के विलम्ब का प्रश्न नहीं उठता।

श्री ऊदल---

क्या माननीय मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमांचल प्रदेश और दिल्ली के सरकारों के प्रतिनिधियों की बैठक कोई पांच-छः महीने पूर्व हुई थी और इसके बारे में विचार किया गया था?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

इसकी तो मेरे पास सूचना नहीं है।

श्री ऊदल---

क्या माननीय मन्त्री इस बात की जांच कराने की कृपा करेंगे कि विद्युत् परिषद् के चारों स्टेटों के प्रतिनिधियों की बैठक हुई थी और इस योजना पर विचार हुआ था। यदि विचार हुआ था तो क्या उनके द्वारा स्वीकृत रूप-रेखा को यहां कराने की कोशिश करगे ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा---

असल में हमने नरौरा में ५०० मेगावाट का सेट मांगा। ऐसा मालूम पड़ता है कि इनकी योजनाओं में नहीं मिलने वाली है तो हमने भारत सरकार को यह कहा कि बदरपुर में जो अपना सेट वे बना रहे हैं उसमें एक लाख बीस हजार से ज्यादा बैठे वह हमारे लिए बना दें। लेकिन वह हम नहीं बनायेंगे, वे बनायेंगे।

श्री उग्रसेन---

क्या माननीय मन्त्री जी का ध्यान केन्द्रीय सिंचाई मन्त्री, श्री के० एल० राव के बयान की तरफ गया है जिसमें उन्होंने कहा है कि ऐसी एक योजना हमारे विचाराधीन है जिससे एक ही साथ हिमांचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान इन तमाम प्रदेशों को बिजली पहुंच जाय और सबको सस्ती बिजली मिले ?

श्री गिरधारीलाल---

यह सवाल तीन चार स्टेट्स के ग्रिड बनाने का है। इस तरीके से पूरे हिन्दुस्तान के अन्दर अलग-अलग जोन बनाकर के तीन-तीन चार-चार स्टेट्स मिलाकर के ग्रिड बनाना चाहते हैं जिससे जिस स्टेट में बिजली ज्यादा हो, वहां से उस स्टेट को जहां बिजली की कमी हो, बिजली दे दी जाय, इस प्रकार की एक योजना केन्द्रीय सरकार की है।

श्री ऊदल---

जो माननीय उप मन्त्री ने अपने बयान में कहा कि १ लाख २५ हजार किलोवाट के लिए हमारे लिए भी बना दिया जाय, तो मैं जानना चाहता हूं कि क्या उत्तर प्रदेश की सरकार ने कोई प्लान तैयार करके सेन्टर को भेजा है और भेजा है तो कितना रुपया आपको देना पड़ेगा ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा---

वह अपने आप एक पावर हाउस बना रहे हैं। हमारे लिए कहीं रुपया देने की बात नहीं है। हम तो अपने यहां पावर हाउस की मांग कर रहे हैं, ओबरा में कर रहे हैं, हरदुआगंज में कर रहे हैं, नरौरा में कर रहे हैं।

कोल असला परगना में नलकूप लगाने की प्रार्थना

*३—श्री ऊदल—

क्या सरकार को पता है कि गांव बैकुंठपुर, बसनी, पिंडरा दक्षिणी, मानापुर, रमईपुर, उसराशहीद, झंझौर, सिंधोरा, परगना कोल असला, तहसील वाराणसी, जिला वाराणसी में सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं है ? यदि हां, तो क्या सरकार इन स्थानों में ट्यूबवेल लगाने का विचार कर रही है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

प्रश्न में उल्लिखित गांवों के असिंचित क्षेत्र की स्थिति इस प्रकार है :—

बैकुंठपुर गांव के पूरे क्षेत्र में, ग्राम बसनी के ५४९ एकड़ क्षेत्र में से ३६९ एकड़ और पिंडरा दक्षिणी (जिसके मानापुर रमईपुर उसरा शहीद आदि पुरवे हैं।) के १,६२५ एकड़ क्षेत्र में से केवल ४२५ एकड़ क्षेत्र ऐसा है जिसमें सिंचाई का राजकीय साधन नहीं है। इन क्षेत्रों की सिंचाई के लिए नलकूप बनाने के सम्बन्ध में निर्णय सर्वेक्षण तथा आर्थिक और प्राविधिक दृष्टि से स्थान के उपयुक्त पाए जाने के बाद ही लिया जा सकता है। अतएव इस समय यह कहना कठिन है कि इन क्षेत्रों में कब तक नलकूप लगेंगे।

झंझौर गांव की सिंचाई की व्यवस्था औरांव नलकूप तथा सिंधोरा की चौलापुर माइनर से है।

श्री ऊदल—

पिंडरा में सिंचाई के बारे में जो माननीय मन्त्री जी ने कहा है तो इस गांव के उत्तरी हिस्से की सिंचाई जमापुर नलकूप से होती है और पूर्वी हिस्से, दक्षिणी हिस्से और पश्चिमी हिस्से जिसमें मानापुर, रमईपुर, उसर शाही आदि तथा पिंडरा का पूर्वी-दक्षिणी और पश्चिमी हिस्सा आता है, वहां सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं है। तो क्या इसकी पुनः जांच कराने की कृपा करेंगे और एरिया जो इसमें दिया गया है वह भी कम है, तो इन सबकी जांच कराकर क्या वहां नलकूप लगाने की व्यवस्था करेंगे ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

मैंने तो यह कह दिया है कि सर्वेक्षण करा रहे हैं। सर्वेक्षण के बाद अगर सम्भव हुआ तो फिर विचार करेंगे।

विद्युत् परिषद् कर्मचारियों का महंगाई-भत्ता तथा पश्चिमी जिलों में बिजली की कमी

*४—श्री रियासत हुसैन—

क्या सिंचाई मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि विद्युत् परिषद्, उत्तर प्रदेश के कर्मचारियों को जो महंगाई भत्ता जनवरी, सन् १९६५ से देना स्वीकार किया गया है वह उनको अब तक क्यों नहीं दिया जा रहा है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

जनवरी, १९६५ से सरकारी कर्मचारियों के लिए स्वीकृत महंगाई भत्ता परिषद् के अधीनस्थ कर्मचारियों को नहीं दिया जा रहा है, क्योंकि परिषद् ऐसे कर्मचारियों को १ अक्तूबर, १९६४ से विद्युत् प्रतिष्ठानों के नियोजित मजदूरों के लिए निर्धारित अन्तरिम अतिरिक्त खाद्य महंगाई भत्ता दे रहा है।

*५—श्री रियासत हुसैन—

क्या सिंचाई मन्त्री इसके कारण बतायेंगे कि इस वर्ष किसानों को अपनी सिंचाई के लिए पूरे तौर से बिजली क्यों नहीं मिली और पश्चिमी जिलों में बिजली न मिलने की आम शिकायत क्यों रही ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

पश्चिमी जिलों में विद्युत् की मांग अधिक बढ़ गई है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष ग्रीष्म ऋतु में हमारे एक बड़े विद्युत् गृह में कुछ खराबियां उत्पन्न हो गई थीं जिसके कारण विद्युत् की मांग प्रतिबन्धित करनी पड़ी जिसका असर ट्यूबवेलों पर भी पड़ा।

*६--श्री रियासत हुसैन--

क्या सिंचाई मन्त्री यह कारण बताने की कृपा करेंगे कि जिन लोगों ने अपने ट्यूबवेल और दूसरे कामों के लिए बिजली मंजूर कराई है उनमें से बहुत लोगों को एक-एक साल लाइन खिंचे हुए गुजर गया, परन्तु बिजली नहीं मिली, इसका क्या कारण है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

लगभग १९ ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी विद्युत् लाइन बने हुए एक वर्ष हो चुका है परन्तु उनको अब तक बिजली नहीं दी जा सकी है। उनमें से १८ व्यक्तियों ने अभी अपने कार्यपूर्ति के प्रमाणपत्र प्रस्तुत नहीं किए हैं और एक व्यक्ति विद्युत् लेने के लिए इच्छुक नहीं है।

श्री रियासत हुसैन--

क्या माननीय मन्त्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जब सन् ६५ का प्रस्ताव मंजूर किया गया था तो उस वक्त १ अक्तूबर १९६४ से जो लोगों को मिलता था वह चीज भी सामने रखी गई थी और फिर भी उन्हें मंजूर किया गया, तो फिर न देने का क्या कारण है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

यह तो राज्य विद्युत् परिषद् का है। उन्होंने एक कमेटी बिठायी थी इससे पहले महंगाई भत्ता देने के लिए। उन्होंने जो महंगाई भत्ता देने की बात कही है उसके हिसाब से वह भत्ता उनको मिलता है।

श्री लखपतराम शर्मा (जिला झांसी)--

माननीय मन्त्री जी की जानकारी है कि प्राइवेट बिजली कम्पनी जब स्वयं काम करती थी तो ६ दिसम्बर, १९४८ की राजाज्ञा के अनुसार उनको बोनस और महंगाई भत्ता आदि देने के लिए आदेश दिया गया था और वह उसका पालन करती थीं, लेकिन क्या यह सही है कि जो बिजली कम्पनी सरकार ने स्वयं अपने कब्जे में ले ली है, सरकार उनको बोनस नहीं देती है? और यह सही है, तो इसका क्या कारण है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

सरकार के अलग नियम हैं, उनके अलग नियम थे। लेकिन इसकी जांच करने के लिये कि इनको कितना महंगाई भत्ता दिया जाय, सरकार ने एक कमेटी 'टण्डन कमेटी' बिठायी थी। उस कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार यह भत्ता दिया जाता है।

श्री लखपतराम शर्मा--

मेरा प्रश्न यह था कि ६ दिसम्बर, १९४८ की राजाज्ञा के अनुसार आपने बिजली कम्पनियों को आदेश दिया कि इस तरह से बोनस दिया जाय, और उन्होंने उसके अनुसार दिया। लेकिन जब आपने स्वयं उसे अपने कब्जे में ले लिया तो स्वयं उस कानून का पालन नहीं कर रहे हैं। मिसाल के लिये झांसी बिजली कम्पनी जब प्राइवेट थी, तो बोनस वगैरह मिलता था, लेकिन अब आप उसके मालिक हैं तो नहीं देते हैं, तो आप क्यों उस आदेश का पालन नहीं कर रहे हैं ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

वह आदेश बिजली कम्पनियों के लिये था, राज्य विद्युत् परिषद् के लिये नहीं था ।

श्री चन्द्रजीत यादव (जिला आजमगढ़)—

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह सही है कि बिजली कम्पनियों के कर्मचारियों के वेतन या बोनस आदि की जो सुविधायें इस वक्त हैं वह उससे भी कम हैं जो कि प्राइवेट कम्पनियां दिया करती थीं। तो इस बात को ध्यान में रखते हुये जो सुविधायें उनको पहले प्राप्त थीं, वह अब भी उन्हें प्राप्त हों, इस बात पर विचार करेंगे ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

इस सवाल से तो इसका सम्बन्ध है नहीं ।

श्री ऊदल—

क्या माननीय मंत्री जी को इस बात की जानकारी है कि साल-साल जनवरी में विद्युत् परिषद् की तरफ से सरकार ने एक पे-कमीशन इन कर्मचारियों के लिये बिठाया और जब तक उसकी रिपोर्ट नहीं आ जाती तब तक महीने एलावेंस के रूप में उनको हर महीने दिया जायगा, यह तय किया गया। बाद उसके समय को दो महीने और बढ़ाया गया। वह बढ़ा हुआ समय बीत गया। तो क्या माननीय मंत्री जी इस बात की कोशिश करेंगे कि वह जल्दी आ जाय और जब तक नहीं आती है तब तक उनको ६ रु० महीने मिलता रहे ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

रिपोर्ट जल्दी मंगवायेंगे और ६ रुपये माहवार मिलता रहेगा ।

श्री रियासत हुसैन—

क्या उस रिपोर्ट में यह लिखा है खास तौर से कि उन लोगों को नहीं दिया जायगा जिन्हें उस कमेटी की सिफारिश के मुताबिक पहली अक्तूबर से मिल रहा था ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

राज्य विद्युत् परिषद् विचार कर रही है और अगर नियमानुसार पाया जायगा तो उसे सोचेंगे ।

श्री रियासत हुसैन—

क्या मंत्री जी जांच करावेंगे कि अकेले मुरादाबाद जिले में ६० कनेक्शन ऐसे हैं जिन्हें मंजूर हुए एक वर्ष से अधिक हो गया है, लेकिन ट्रांसफार्मर न होने के कारण उन्हें कनेक्शन नहीं दिये जा सके हैं ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

अगर आदरणीय सदस्य लिखकर देंगे तो जांच करा लेंगे ।

श्री बद्रीप्रसाद पालीवाल—

क्या मंत्री जी के पास शिकायतें आई हैं कि ट्यूबवैल की बिजली अक्सर फेल हो जाती हैं ? और उसे दूर करने का क्या उपाय कर रहे हैं ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

बिजली का प्रसार ठीक रहे इसकी कोशिश कर रहे हैं ।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद—

क्या मंत्री जी आश्वस्त करेंगे कि उन ट्यूबवेलों को एक माह के अन्दर बिजली मिल जायगी ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

जी नहीं ।

श्री दयाराम शाक्य (जिला फर्रुखाबाद)—

क्या मंत्री जी ऐसी व्यवस्था करेंगे कि जब तक बिजली पैदा हो तब तक और सारी बातें, जैसे लाइन लगाना इत्यादि पूरी कर लें, ताकि बिजली पैदा होते ही मिल सके ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

हमने बिजली देने पर रोक नहीं लगाई है ।

श्री ए० सी० ग्राइस (आंग्ल भारतीय)—

क्या मंत्री जी बतावेंगे की प्रिवेंटिव मैन्टीनेंस के लिये सरकार क्या कर रही है और उसका क्या सिस्टम है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

लाइन को स्ट्रेन्गथेन करेंगे, ट्रांसफार्मर में कैपेसिटी ज्यादा बढ़ावेंगे, यही सब करेंगे ।

राप्ती के कटाव में गांवों की सुरक्षा

*७—श्री उग्रसेन—

क्या सिंचाई मंत्री कृपया बतायेंगे कि राप्ती के पेटे में बसे कटाव पीड़ित गांवों की सुरक्षा की व्यवस्था क्या चतुर्थ योजना में की जा रही है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

ऐसे गांवों की सुरक्षा हेतु कोई योजना नहीं बनायी जा रही है ।

श्री उग्रसेन—

हमने क्या गुनाह किया है कि योजना गांवों की सुरक्षा की नहीं बनाई जा रही है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

पेटे के गांवों में हर साल बाढ़ आ जाती है जिससे वहां अगर कुछ प्रबन्ध रक्षा का किया भी जाय तो वह बह जायगा । इसलिये आप किसी दूसरी जगह बसने की कृपा करें ?

श्री उग्रसेन—

क्या चौथी योजना में कोई ठोकर बनाने की बात सोच रहे हैं जिससे किनारे के गांव बच सकें ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा—

किनारे के गांवों का सवाल नहीं था । पेटे के गांवों का है । पेटे के गांवों के बारे में उत्तर दे दिया गया है ।

*८—९—श्री बेदराम (जिला एटा)—

[हटा दिये गये ।]

छाता तहसील में बिजली

*१०—श्री लखीसिंह (जिला मथुरा)—

क्या सिंचाई मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि मथुरा जिले की छाता तहसील में बिजली का निर्माण कब तक हो जायगा और यह बिजली की लाइन किन-किन गांवों को पास करती हुई जायगी । इस पर सरकार का कितना व्यय होने का अनुमान है ?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

छाता के विद्युतीकरण के लिये कोसी कलां से एक ११,००० वोल्ट की लाइन कोसी कलां मथुरा सड़क के साथ-साथ अजीजपुर और दांतान गांवों से होती हुई जायेगी। इस लाइन का निर्माण चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में कोसी कलां में ३७.५/११ के० वी० का १,५०० के० वी० ए० का उप विद्युत्गृह के बनाने के बाद होगा। इस कार्य में करीब १,२५,००० रुपये व्यय होने का अनुमान है।

*११--श्री लखीसिंह--

क्या सिंचाई मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि ग्राम सेरगढ़ को नोह झील से जमना के पास होकर लाइन पैगांव व फालन होती हुई जायगी? यदि हां, तो ग्राम रायपुर, तहसील मांट से शाहपुर तहसील छाता के बीच सिर्फ जमना है और एक डेढ़ मील का फासला है? क्या यह लाइन शाहपुर को भी जमना से पास होगी? यदि नहीं, तो क्यों? यदि हां, तो कब तक?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

ग्राम सेरगढ़ को नौझील से यमुना पार कर कोई लाइन नहीं जायगी क्योंकि लाइन का यमुना नदी से पार करना प्राविधिक दृष्टि से संभव नहीं है। इसलिये और प्रश्नों के उत्तर देने का प्रश्न नहीं उठता।

श्री लखीसिंह--

क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि इस पिछड़े हुये क्षेत्र को देखते हुये और बिजली की कमी को देखते हुये, इसको आगामी योजना के प्रथम वर्ष से ही पूरा करेंगे?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

यह तो मैंने बताया कि इसको अगली योजना में लिया जायगा, लेकिन पूरा करने के बारे में अभी कुछ नहीं बताया जा सकता है?

श्री लखीसिंह--

क्या माननीय मंत्री जी बतायेंगे कि उक्त बिजली घर खोले जाने के बाद कितने गांवों को बिजली मिल सकेगी और पहले किन-किन गांवों को बिजली मिलेगी?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

पहले विद्युत् गृह तो बन जायं उसके चारों ओर ही बिजली देंगे।

श्री लखीसिंह--

क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि उपरोक्त केन्द्र से बिजली की लाइन किन-किन स्थानों को जायगी?

श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा--

मैंने इस हाउस में पिछली दफा ही कहा था कि हमने हर जिले में एक समिति बनाने का निश्चय कर दिया है और वह समिति यह निश्चय करेगी कि बिजली की खपत कहां-कहां ज्यादा होगी और कहां से लाइन बनायी जाय। वह समिति पावर हाउस बन जाने के बाद स्थापित की जायगी, तब वह विचार करेगी।

श्री लखीसिंह--

श्रीमन्, यह क्षेत्र तो पंजाब की सीमा पर है, इसमें बिजली की ही कोई लाइन नहीं है?

(उत्तर नहीं दिया गया।)

नोट--तारांकित प्रश्न ११ के पश्चात् प्रश्नोत्तर का समय समाप्त हो गया।

गोंडा जिले के ट्रांसराप्ती क्षेत्र में नलकूप

*१२—श्री सुखदेवप्रसाद (जिला गोंडा)—

क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि मुख्य मंत्री जब भगवानपुर बांध विकास क्षेत्र गैराड़ी एवं तुलसीपुर ७ मार्च, १९६५ को गोंडा जिले में पधारी थीं तो उद्घाटन करते हुये सिंचाई की कमी को देखते हुये आश्वासन दिया था कि अधिक से अधिक सुविधा देंगी ? यदि हां, तो बात को देखते हुये ट्रांसराप्ती क्षेत्र में (एक्सप्लोरेट्री) ट्यूबवैल लगवाने की सरकार कृपा करेगी ? तो कब से और कितने बनेंगे ?

श्री गिरधारीलाल—

मुख्य मंत्री जी द्वारा ट्रांसराप्ती क्षेत्र में तीन नलकूप बनाये जाने का आश्वासन दिया गया था। उक्त क्षेत्र के निम्नलिखित गांवों में तीन नलकूपों की बोरिंग का कार्य मार्च, १९६५ तक पूर्ण हो चुका है ?

(१) मजहारी
(२) पैगापुर
(३) गुलरहा ।

कथित क्षेत्र में एक्सप्लोरेट्री नलकूप लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

ट्रैफिक इंस्पेक्टर तथा फतेहगढ़ व गुरसहायगंज बस स्टेशन

*१३—श्री दयाराम शाक्य—

क्या परिवहन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि उत्तर प्रदेश रोडवेज विभाग में सभी असिस्टेन्ट ट्रैफिक इंस्पेक्टर हैं, ट्रैफिक इंस्पेक्टर पूरे यू० पी० में एक भी नहीं है ? अगर हां, तो क्यों ?

परिवहन मंत्री (श्री मुजफ्फरहसन)—

जी हां। ट्रैफिक इंस्पेक्टर के पदों की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत हुई ।

*१४—श्री दयाराम शाक्य—

क्या परिवहन मंत्री कृपया यह भी बतायेंगे कि रोडवेज के कानपुर क्षेत्र के फतेहगढ़ व गुरसहायगंज स्टेशनों पर स्टेशन इंचार्ज कब से नहीं हैं और इतने दिनों से इन स्थानों को क्यों नहीं भरा गया ?

श्री मुजफ्फर हसन—

फतेहगढ़ व गुरसहायगंज बस स्टेशनों पर क्रमशः १३ मई, १९६४ व १२ जनवरी, १९६५ से स्टेशन इंचार्ज नहीं हैं। उक्त तिथियों पर यहां के स्टेशन इंचार्जों के स्थानान्तर पर जिनको अस्थाई तौर पर पदोन्नत किया गया उन्होंने पदोन्नत पर जाने को मना कर दिया। इन स्टेशनों का कार्य भी क्रमशः फर्रुखाबाद तथा छिबरामऊ के स्टेशन इंचार्ज देख रहे हैं।

*१५—श्री मधवप्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)—

[स्थानान्तरित किया गया ।]

उन्नाव लेजि में लहरू माइनर

*१६—श्री भीखालाल (जिला उन्नाव)—

क्या सिंचाई मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि क्या लखनऊ पैरलल ब्रांच से उन्नाव जिले में लहरू माइनर का सर्वे कराया गया है ? यदि हां, तो इस माइनर के बनने से कितने रकबे की सिंचाई होने की सम्भावना है ? यह माइनर कितनी लम्बी होगी और उसके खुदवाने में कितना धन व्यय होगा ?

श्री गिरधारीलाल--

जी हां। लहरू माइनर के बनने से ६९४ एकड़ रबी तथा ३४७ एकड़ खरीफ की सिंचाई होने की सम्भावना है। इस माइनर की प्रस्तावित लम्बाई मील ४-५-३३० है और इसकी अनुमानित लागत ३०, ५५६ रुपये होगी।

*१७--श्री भीखालाल--

क्या सिंचाई मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि उक्त माइनर तृतीय पंचवर्षीय योजना-काल में बन कर तैयार हो जाएगी?

श्री गिरधारीलाल--

जी नहीं।

रामगढ़ पम्प कैनाल

*१८--श्री रघुवीर राम (जिला गाजीपुर)--

क्या सिंचाई मन्त्री को पता है कि जिला गाजीपुर, थाना कासिमाबाद के अन्तर्गत ग्राम रामगढ़ के पास टमसा नदी में जो पम्प कैनाल लगा हुआ है वहां से करीब करीब तीन फर्लांग नहर का पानी नहर के दोनों तरफ की पटरी के दूसरी तरफ काफी मिकदार में बह रहा है और ३०० एकड़ जमीन की फसल को बरबाद करता हुआ फिर टमसा नदी में गिर जाता है? यदि हां, तो नहर की पटरी को पक्का बनवाने की कृपा करेंगे?

श्री गिरधारीलाल--

जी हां। नहर चलने पर नहर का पानी रिस कर दोनों तरफ नहर के लिए बनायी गयी खन्तियों में, जिनका क्षेत्रफल लगभग ५ एकड़ है, भर जाता है और खन्तियों में होकर ही टमसा में गिर जाता है। उक्त पानी से ३०० एकड़ भूमि की फसल के बरबाद होने का प्रश्न ही नहीं उठता। नहर के सम्बन्धित हिस्से को लाइन (line) करने पर विचार किया जा रहा है।

*१९--श्री रघुवीरराम-

क्या सिंचाई मन्त्री यह भी बतायेंगे कि रामगढ़ पम्प कैनाल ग्राम सिधागर के पास सड़क को पार कर आगे के ग्रामों में जाता है और सिधागर के पास नहर की सतह नीची होने के कारण नहर टूट जाया करती है जिससे किसानों को काफी फसल का नुकसान होता है और सरकार इसका भी कोई प्रबन्ध करेगी?

श्री गिरधारीलाल--

जी नहीं। कथित प्रबन्ध का प्रश्न नहीं उठता।

सहारनपुर जिले में हरिजन बस्तियों को बिजली

*२०-श्री रामसिंह (जिला सहारनपुर)--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि ग्राम बढ़ेड़ी कोली, तोल्हेड़ी बुजुर्ग तथा उमरी खुर्द, जिला सहारनपुर को ग्रामवासियों तथा प्रधानों की ओर से हरिजन बस्तियों में बिजली लगाने के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये हैं क्योंकि यह भी सही है कि हरिजनों ने, जिनके अपने पक्के मकान है, अपने घरों में बिजली लगाने के प्रार्थना-पत्र भी दिए हैं? यदि हां, तो क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि इन ग्रामों की हरिजन बस्तियों में कब तक बिजली लग जायेगी?

श्री गिरधारीलाल--

ग्राम बढ़ेड़ी कोली, तोल्हेड़ी बुजुर्ग तथा उमरी खुर्द जिला सहारनपुर की हरिजन बस्तियों में बिजली लगाने हेतु प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए हैं। उपर्युक्त ग्रामों की हरिजन बस्तियों के उन सभी भागों में बिजली के खम्भे लगा दिए गए हैं जहां-जहां कनेक्शन दिए जाने की संभावना है। व्यक्तिगत कनेक्शन के हेतु जो भी प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए हैं उन पर नियमानुसार उचित कार्यवाही की जा रही है और विभागीय औपचारिकता पूर्ण होने पर उनको बिजली दी जायगी।

मुजफ्फरनगर डिवीजन में नलकूप चालकों की बर्खास्तगी

*२१—श्री रामसिंह—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि नलकूप डिवीजन मुजफ्फर नगर में सन् १९६० से अब तक कुल कितने नलकूप चालकों को मुअत्तल या बर्खास्त किया गया है और उनमें कितने व्यक्ति हरिजन तथा पिछड़ी जाति के हैं और किन-किन व्यक्तियों को बहाल किया गया और उनमें कितने व्यक्ति अनुसूचित तथा पिछड़ी जाति के हैं ?

श्री गिरधारीलाल—

६५—इनमें १९ व्यक्ति हरिजन तथा पिछड़ी जाति के हैं।

४९—बहाल किया गया। इनमें १२ अनुसूचित एवं पिछड़ी जाति के हैं।

मेरठ व सहारनपुर के लिए बस सर्विस की मांग

*२२—श्री जमरामसिंह (जिला बुलन्दशहर)—

क्या परिवहन मन्त्री बताने का कष्ट करेंगे कि मेरठ व सहारनपुर जैसे नगरों में अभी तक भी सिटी बस सेवायें क्यों नहीं चालू की गई हैं जब कि इस में जनता व सरकार दोनों को भारी लाभ है ? यह सेवायें कब तक चालू की जा सकेंगी ?

श्री मुजफ्फर हसन—

इसके दो प्रमुख कारण हैं :

(१) यहां यात्री क्षमता (traffic potential) का विकास अभी नहीं हुआ है; तथा

(२) नगरों के अन्दर की अधिकांश सड़कें इतनी सकरी हैं कि उन पर बसों का चलाना खतरे से खाली नहीं है।

प्रश्न का अन्य भाग नहीं उठता।

छाता बस स्टेशन

*२३—श्री लखीसिंह—

क्या परिवहन मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि मथुरा जिले में छाता बस स्टेशन का निर्माण सन् १९६४–६५ में ही हुआ है ? यदि हां, तो उसकी चहारदीवारी फट गयी है ? इस स्टेशन को बनाने में सरकार ने कितना रुपया खर्च किया और किस ठेकेदार से निर्माण कराया गया है ?

श्री मुजफ्फरहसन—

जी नहीं, पक्का बस स्टेशन अभी नहीं बना है केवल चहारदीवारी बनी है इसके दरवाजे के दो खम्भे बस के लड़ जाने से टूट गए हैं।

कोंडर ताल तथा चवर ताल से पानी निकालने का सुझाव

*२४—श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी—

क्या सरकार कृपया बताएगी कि बस्ती जिले के जो जोगिया ब्लाक में कौरड़ ताल और बांसी तहसील में पमर ताल है, क्या सरकार उक्त तालाबों का पानी जमीन खाली करने के लिए निकालने की योजना बनाई है ? यदि हां, तो वह जमीन कब तक खाली हो जाएगी ? यदि नहीं तो क्या सरकार उक्त तालाबों के पानी से ढंकी भूमि को खाली कराने की कृपा करेगी ?

श्री गिरधारीलाल—

बस्ती जिले के जोगिया ब्लाक में कौरड़ ताल नहीं बल्कि कोंडर ताल है जिसका पानी निकालने की कोई योजना नहीं बनाई गई। इसी प्रकार बांसी तहसील में पमर ताल नहीं बल्कि चवर ताल है जिससे सम्बन्धित फजिहतवा नाले की सफाई की योजना बनाई गयी थी जो प्राविधिक दृष्टिकोण से कार्यान्वित करने योग्य नहीं पाई गई।

फतेहपुर में बिजली की दर

*२५—श्री दयाराम शाक्य—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि फतेहपुर इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी को सरकार किस दर पर बिजली सप्लाई करती है तथा बिजली सप्लाई कम्पनी किस दर पर जनता को सप्लाई करती है तथा सरकार क्या इस अन्तर को जनहित में कम करने की कृपा करेगी ?

श्री गिरधारीलाल—

उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत् परिषद् द्वारा फर्रुखाबाद इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी, फतेहगढ़ को थोक में दी जाने वाली बिजली की दर तथा उक्त कम्पनी द्वारा जनता को दी जाने वाली बिजली की दरें क्रमशः अनुसूची १ तथा २ में दी गई हैं। इलेक्ट्रिसिटी (सप्लाई) ऐक्ट, १९४८ की छठी अनुसूची के अनुसार बिजली कम्पनी को अधिकार है कि वह बिजली के विक्रयार्थ अपने दरों का सांवधिक पुनर्निर्धारण करके दरें इस प्रकार व्यवस्थित करे कि जिससे किसी भी वर्ष में उसका खालिस लाभ, जहां तक हो सके, उचित आय की रकम से न बढ़ने पाए। इसी प्राविधान के अनुसार फर्रुखाबाद बिजली कम्पनी ने अपनी दरें निर्धारित की हैं, अतः उक्त दरों के अन्तर को कम करने का प्रश्न नहीं उठता है।

(देखिए नत्थी 'ग' आगे पृष्ठ २१६ पर)

भगवानपुर बांध में दरार

*२६—श्री सुखदेवप्रसाद—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि भगवानपुर बांध, जिला गोंडा के बैरेज की एक दीवाल की विंग के टूट जाने से स्वीकृत किए गए प्रश्न कर्ता के नियम ५२ के सम्बन्ध में दिनांक ६ अप्रैल, १९६५ को मन्त्री जी के वक्तव्य पर लिखित रूप में शिकायतें मांगने पर प्रश्नकर्ता ने लिख कर दिया था ? यदि हां, तो क्या कार्यवाही हुई ?

श्री गिरधारीलाल—

बैरेज की रिटर्न विंग दीवाल में दरार पड़ने के सम्बन्ध में माननीय सदस्य की लिखित शिकायत मिली थी। मामले में अभी जांच की जा रही है।

*२७—श्री सुखदेवप्रसाद—

क्या यह सही है कि सिंचाई मन्त्री ने बन्धे की दीवार के टूटने तथा मरम्मत करने में ३०० रुपये व्यय करने को स्वीकार किया था ? यदि हां, तो एग्जीक्यूटिव इंजीनियर, सिंचाई गोंडा ने एक वक्तव्य देकर यह कहा है कि उक्त बात बिल्कुल झूठी है ? यदि हां, तो किस तारीख को ? दोनों में से कौन सत्य है ?

श्री गिरधारीलाल—

दीवाल में दरार पड़ने और उसकी मरम्मत में लगे ३०० रुपये को ठेकेदार से वसूल की जाने की बात कही गई थी। एग्जीक्यूटिव इंजीनियर ने अपने किसी वक्तव्य द्वारा इसका खण्डन नहीं किया है।

नलकूप क्षेत्र, गोरखपुर में ओवरसियरों की मुअत्तली

*२८—श्री प्रेमसिंह (जिला बहराइच)—

क्या सिंचाई मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि भूतपूर्व सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर, ट्यूबवेल, गोरखपुर ने १९६४ में इन्क्वायरी कराकर ओवरसियरों को सस्पेंड कर रखा है? और क्या यह भी सही है कि उन्होंने चार्जशीट का जवाब दे दिया है तो क्या कारण है कि अभी तक (जुलाई, १९६५) मुख्य अभियन्ता, सिंचाई विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ ने निर्णय क्यों नहीं किया?

श्री गिरधारीलाल—

जी हां।

जांच अधिकारी की रिपोर्ट प्राप्त न होने के कारण अभी निर्णय नहीं लिया जा सका।

*२९—श्री प्रेमसिंह—

क्या सिंचाई मन्त्री बताने की कृपा करेंगे कि जिला देवरिया में छितौनी बांध के सिलसिले में सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर, ट्यूबवेल, गोरखपुर ने असिस्टेंट इंजीनियर के बारे में भी मुख्य अभियन्ता, सिंचाई विभाग, उत्तर प्रदेश को लिखा है कि ओवरसियर तथा असिस्टेंट इंजीनियर दोनों ने मिलकर गबन किया है। तो असिस्टेंट इंजीनियर को सस्पेंड न करने के क्या कारण हैं?

श्री गिरधारीलाल—

नहीं, लिखा है।

स्याना क्षेत्र में सिंचाई

*३०—श्री मुमताज मुहम्मद खां तथा श्री मुहम्मद रफी खां (जिला शाहजहांपुर)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि विधान सभा क्षेत्र स्याना, जिला बुलन्दशहर में सिंचाई की उन्नति हेतु ऐसे विभागों में जहां-जहां कि लगभग २०० एकड़ भूमि राजकीय सिंचाई के साधनों से वंचित है, वहां क्वेटी नलकूपों के निर्माण की कोई योजना बनाएगी? यदि हां, तो कब तक? यदि नहीं, तो क्यों?

श्री गिरधारीलाल—

जी नहीं, क्योंकि—

(१) २०० एकड़ क्षेत्र में नलकूप लगाना आर्थिक दृष्टि से लाभकारी न होगा,

(२) इन क्षेत्रों में साधारणतया कृषकों ने अपने निजी सिंचाई के साधन, जैसे रहट आदि, बना लिए हैं।

(३) कृषकों ने कहीं-कहीं अपने निजी नलकूप भी लगा लिए हैं।

दादरी ब्लाक में नलकूप नालियां

*३१—श्री रामचन्द्र विकल—

क्या सिंचाई मन्त्री कृपा कर बतायेंगे कि कूप नम्बर २, ३, ६, ७, ८ दादरी ब्लाक बिसरख, जिला बुलन्दशहर की नालियां कितनी-कितनी बार बनाई गयीं और उन पर कितना-कितना व्यय हुआ तथा उन नालियों की दशा आज क्या है?

श्री गिरधारीलाल—

इन सभी नलकूपों की नालियां केवल एक बार ही बनाई गई और सभी नालियां संतोषजनक हालत में हैं। व्यय का विवरण संलग्न सूची में दिया है।

(देखिए नत्थी 'घ' आगे पृष्ठ २१७ पर)

*३२—श्री रामचन्द्र विकल—

[हटा दिया गया।]

फर्रूखाबाद, मैनपुरी तथा इटावा डिपों के ड्राइवरों की हड़ताल

*३३—श्री रक्षपालसिंह (जिला फतेहपुर)—

क्या परिवहन मन्त्री को इस की जानकारी है कि राजकीय परिवहन के फर्रुखाबाद, मैनपुरी तथा इटावा जिलों के विभिन्न डिपो में काम करने वाले ड्राइवरों एवं कन्डक्टरों न आजकल हड़ताल इस लिए कर रक्खी है (जुलाई के अन्तिम सप्ताह) कि इनके एक सहयोगी को पुलिस अधिकारियों द्वारा नाजायज रूप से बहुत पीटा था ? यदि हां, तो पूरी घटना क्या है ? पुलिस वालों के विरुद्ध क्या कार्यवाही की गई है तथा हड़तालियों की मांग क्या है ?

श्री मुजफ्फरहसन—

२८–२९ जुलाई, १९६५ को ऐसी शिकायत पर हड़ताल हुई थी। इस पर जांच हो रही है। इस वक्त आगे प्रश्न नहीं उठाता है।

इलाहाबाद में बस दुर्घटना

*३४—श्री बृजबिहारी (जिला आजमगढ़)—

प्रश्नकर्त्ता के दिनांक २० अप्रैल, १९६५ के प्रश्न संख्या (ग) ४३ के उत्तर के सम्बन्ध में क्या सरकार बताने को कृपा करेगी कि क्या उक्त ड्राइवर का चालान शुरू में पुलिस नें बिला तफतीश के किया था ? यदि हां, तो ऐसा क्यों हुआ ? और पुलिस ने तफतीश करके चालान किया था तो पुनः तफतीश की क्या आवश्यकता पड़ी जिसके फलस्वरूप फाइनल रिपोर्ट लगानी पड़ी ?

श्री मुजफ्फरहसन—

यह गलत है कि पुलिस ने ड्राइवर का चालान बिला या बाद तफतीश किया था। दौरान तफतीश केवल ड्राइवर को गिरफ्तार करके जेल भेजा व इसकी कार्यवाही शिनाख्त करवाई। परन्तु वादी या गवाहों ने कार्यवाही शिनाख्त में ड्राइवर को नहीं पहचाना। अतः इस मामले में फाइनल रिपोर्ट लगा कर कार्यवाही समाप्त की गई।

*३५—श्री ब्रजबिहारी—

क्या यह भी सही है कि उक्त दुर्घटना के सिलसिले में एक सम्मानित सज्जन का पैर टूट गया था और वे बिल्कुल बेकार हो गये ?

श्री मुजफ्फर हसन—

एक सज्जन के दाहिने पैर में गम्भीर चोट आई थी।

ऐक्सीडेंट स्कीम

*३६—श्री तेजसिंह (जिला मेरठ) तथा श्री यशपालसिंह (जिला सहारनपुर)—

क्या परिवहन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि प्रदेश में मोटर गाड़ियों से जो ऐक्सीडेंट होते हैं उनमें मरने वालों के वारिसों को खर्चा (कम्पेन्शेसन) के दिलाने की व्यवस्था है ? अगर नहीं, तो क्यों ? क्या मोटर वेहिकिल्स कानून की धारा ११० के अनुसार कोई मोटर ऐक्सीडेंट ट्रिब्यूनल बनाया हुआ है ? अगर नहीं, तो क्यों ?

श्री मुजफ्फर हसन—

जी हां।

सरकारी गाड़ी के अलावा प्रत्येक मोटर गाड़ी का बीमा होता है, और दुर्घटना होने पर बीमे की रकम से दुर्घटना ग्रस्त व्यक्तियों या उनके वारिसों की क्षति पूर्ति होती है।

सरकारी गाड़ी से दुर्घटना पीड़ित व्यक्तियों के लिये एक ऐक्सीडेंट स्कीम जारी है । जिसके अन्तर्गत घायलों को तथा मृतकों के वारिसों को मुआवजा दिया जाता है । यह स्कीम सुचारु रूप से चल रही है । ट्रिब्यूनल की स्थापना को कार्यान्वित करने के सम्बन्ध में विचार चल रहा है ।

हरनद नाले का एलाइनमेंट

*३७—श्री सुरेन्द्र विक्रम (जिला शाहजहांपुर) —

क्या सिंचाई मंत्री को पता है कि जिला आगरा की तहसील एतमादपुर में एक हरनद नाला निकाला जा रहा है और जिसको मौजूदा एलाइनमेन्ट मौजा रेसया की जमीन से शुरू होकर नूर महल, शिवसिंहपुरा रामनगर, हजरतपुर ले जाया गया है ? जो एलाइनमेंट जी० ओ० नं० २०३२/१—ए०—३५५—६२, दिनांक १२ मई, १९६४ राजस्व (क) के बिलकुल प्रतिकूल है और जनहानि व उपजाऊ जमीन को हानि भी है ? क्या मंत्री जी उपरोक्त दशा में तुरन्त किसी अन्य उच्च अधिकारी द्वारा मौके और परिस्थितियों की जांच करा के दूसरा एलाइनमेंट मंजूर करेंगे ?

श्री गिरधारीलाल—

हरनद नाले का मौजूदा एलाइनमेंट कथित शासकीय आदेश के प्रतिकूल नहीं है क्योंकि इस के लिये उपजाऊ भूमि केवल उन स्थानों पर ली गई है जहां ऊसर भूमि उपलब्ध न थी । इस के अतिरिक्त कोई आबादी भी इस एलाइनमेन्ट के बीच में नहीं है । ऐसी दशा में मामले में किसी जांच की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह एलाइनमेन्ट ही सब से उचित है ।

*३८—३९—श्री बिपिनबिहारी तिवारी (जिला सीतापुर), श्री शारदा नन्द (जिला सीतापुर) तथा श्री जगन्नाथ राव (जिला जौनपुर) —

[स्थानान्तरित किये गये ।]

रिग्स प्रखण्ड, वाराणसी के सहायक अभियन्ता

*४०—श्री विजयपालसिंह (जिला मुजफ्फरनगर) तथा श्री ऊदल—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि रिग्स प्रखण्ड, वाराणसी के सहायक अभियन्ता के पास पिछले ६ माह से कोई कार्य नहीं रहा है ? यदि हां, तो ६ माह में इनके तथा इनके स्टाफ पर कितना रुपया खर्च हुआ ? और इनके पास काम न होने का कारण क्या है ?

श्री गिरधारीलाल—

जी नहीं, प्रश्न ही नहीं उठते ।

नौगढ़ क्षेत्र में बंधी निर्माण

*४१—श्री सुरजनराम विशारद (जिला आजमगढ़) तथा श्री ऊदल—

क्या सिंचाई मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि धौरवा, तालुका नौगढ़, तहसील चकिया, जिला वाराणसी में जो सब बन्धी बनाने हेतु हो रहा था, क्या वह पूरा हो गया ? यदि पूरा हो गया, तो बन्धी बनाने का कार्य कब तक शुरू होगा ?

श्री गिरधारीलाल—

प्रथम भाग—जी हां ।

द्वितीय भाग—बंधी के निर्माण का विचार स्थगित कर दिया गया क्योंकि जिस क्षेत्र की उसके द्वारा सिंचाई होनी थी, वह क्षेत्र बहुत ऊंचा था ।

रायबरेली जिले में नलकूप

*४२—श्री गुप्तार सिंह (जिला रायबरेली)—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि जनपद रायबरेली में कितने ट्यूबवैलों का निर्माण हुआ और कहां कहां पर ? यदि नहीं हुआ, तो क्यों ?

श्री गिरधारीलाल—

दो नलकूप परीक्षात्मक रूप में बनाये गये थे। इनमें से एक रायबरेली खास में और दूसरा लालगंज में बना था परन्तु उपयुक्त स्ट्रेटा (strata) न मिलने के कारण दोनों नलकूप असफल रहे।

परिवहन विभाग में मजदूर कुली

*४३—श्री हरीसिंह (जिला मेरठ)—

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि परिवहन विभाग में जो मजदूर कुली हैं वह स्थाई हैं या नहीं ? यदि नहीं हैं, तो इसका क्या कारण है जब कि वह चार-चार वर्ष से परिवहन विभाग में कार्य कर रहे हैं और उनको स्थाई नहीं किया गया।

श्री मुजफ्फर हसन—

कुल मजदूर स्थायी नहीं हैं। इसका कारण स्थायी स्थानों का अभाव है।

आनरेरी मैजिस्ट्रेट समिति, आगरा

*४४—श्री बालोजी अग्रवाल (जिला आगरा)—

क्या न्याय मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि आगरा में आनरेरी मैजिस्ट्रेटों के नामों की सिफारिश के लिये जो कमेटी है उसके सदस्य कौन-कौन हैं ?

श्री सैयद अली जहीर—

कमेटी के निम्नलिखित सदस्य हैं:

१—जिला मैजिस्ट्रेट,

२—जिला एवं सत्र न्यायाधीश,

३—श्री सेठ अचल सिंह,

४—श्री छत्रपति अम्बेश,

५—श्री सी० एम० सुखिया,

६—श्री अब्दुल गनी,

७—श्री आदिराम सिंघल,

८—श्रीमती विद्यावती राठौर,

९—श्री रामचन्द्र गुप्ता।

छोटी गंडक सुधार योजना

*४५—श्री बांकेलाल (जिला देवरिया)—

क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि छोटी गन्डक को सीधा करने और उसके किनारे-किनारे बन्धा बनवाने की कोई योजना है ? यदि हां, तो वह कब तक पूरी होगी ?

श्री गिरधारीलाल--

जी हां । यह योजना अभी प्रारम्भिक स्थिति में है, अतः इसके पूर्ण होने की तिथि नहीं बताई जा सकती .....

*४६--श्री बांकेलाल--

क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि देवरिया जिले के हाटा ब्लाक में छोटी गन्डक के, जहां पर जेठन नाला मिलता है (देवराजपुर के पास) वहां विकास मंत्री द्वारा रेगुलेटर लगाने का वादा किया गया है ? अगर किया है, तो वह कार्य कब तक पूरा क्यों नहीं हुआ ?

श्री गिरधारीलाल--

जी हां, वर्तमान विकास मंत्री द्वारा १६-१०-६२ को सदन में इस प्रकार का आश्वासन दिया गया था । इस सम्बन्ध में आश्वासन समिति को जो सूचना भेजी गई उसके उद्धरण संलग्न है । उक्त समिति नें इस आश्वासन को पूर्ण मान लिया है ।

(देखिए नत्थी 'ङ' आगे पृष्ठ ११८ पर)

विद्युत् परिषद्, लखनऊ के इंवेस्टीगेशन व प्लानिंग सेक्शन का विलयन

*४७--श्री बसन्तसिंह (जिला बिजनौर)--

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि (हाइडिल) उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत् परिषद्, लखनऊ के इन्वेस्टीगेशन तथा प्लानिंग सेक्शन तोड़ दिये जाने के क्या कारण हैं ? जिन कर्मचारियों को निकाला गया है उन को दूसरे नवीन विभागों में न रखने का क्या कारण है, जब कि नवीन कर्मचारी रक्खे जा रहे हैं ?

श्री गिरधारीलाल--

कार्य को अधिक सुचारू रूप से चलाने के लिये इन्वेस्टीगेशन तथा प्लानिंग सर्किल का विलयन हाइडिल ट्रान्समिशन डिजाइन सर्किल में कर दिया गया है । इस पुनर्गठन के कारण केवल बारह कर्मचारियों की सेवायें समाप्त हुईं । इनमें से ऐसे व्यक्तियों के नाम जो अनुमोदित लिस्ट पर थे अन्य सर्किलों को परिचालित कर दिये गये हैं ताकि उपलब्ध पदों पर उन्हें योग्यतानुसार रखने के मामले पर विचार किया जाय ।

नहर शाखा इटावा पर जेड़ा पुल

*४८--श्री बलवीरसिंह (जिला मैनपुरी)--

क्या सरकार बतानेकी कृपा करेगी कि तहसील जसराना, जिला मैनपुरी में नहर शाखा इटावा पर जेड़ा पुल के लगभग दो-तीन साल पहले दो दरवाजे बढ़ाये गये थे और वह लगभग छः माह हुये टूट गये हैं ? यदि हां, तो ऐसा क्यों ?

श्री गिरधारीलाल--

जी हां । नये दो दरवाजों के बीच बनाये गये स्तम्भ के धसकने के कारण नव सृजित भाग १ जनवरी, १९६५ को टूट गया था ।

*४९--श्री बलवीरसिंह--

क्या सरकार यह भी बताने की कृपा करेगी कि उस पुल पर कितना खर्चा हुआ था ? क्या सरकार पुल शीघ्र बनवाने की कृपा करेगी ?

श्री गिरधारीलाल--

प्रथम भाग--रु० ४९,१२२.०६

द्वितीय भाग--जी हां, डिजाइन तथा एस्टीमेट बन जाने पर था उसके लिये धन उपलब्ध होने पर उसके निर्माण का प्रयत्न किया जायगा ।

चौबिया थाने में रोडवेज ड्राइवर को पीटने की घटना

*५०--श्री उग्रसेन--

क्या परिवहन मंत्री बतायेंगे कि दिनांक २९ जुलाई, १९६५ को चौबिया थाना (इटावा) के पास रोडवेज की गाड़ी खड़ी कर एक पुलिस अफसर इटावा ने उक्त गाड़ी के ड्राइवर, कन्डटर को मारा, फलस्वरूप हड़ताल हुई ? यदि हां, तो कौन-सी कार्यवाही की गई ?

श्री मुजफ्फर हसन--

ऐसी एक शिकायत दिनांक २८ जुलाई, सन् १९६५ को हुई । उस सम्बन्ध में जांच हो रही है ।

*५१--५२--श्री प्रेमसिंह, श्री मोहनलाल आचार्य (जिला पीलीभीत) तथा श्री मुमताज मुहम्मद खां--

[स्थगित किये गये ।]

आजमगढ़ व अलीगढ़ में रोडवेज सेंट्रल वर्कशाप खोलने की योजना

*५३--श्री ब्रह्मदत्त मायर तथा श्री रामकिशोर त्रिपाठी (जिला बाराबंकी)--

क्या परिवहन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि राज्य पथ परिवहन की सेवाओं की सुविधा-जनक व्यवस्था करने के उद्देश्य से दो नये सेन्ट्रल वर्कशाप रीजन आजमगढ़ व अलीगढ़ में खोलने की योजना विचाराधीन हैं ?

श्री मुजफ्फरहसन--

जी हां ।

*५४--श्री ब्रह्मदत्त मायर तथा श्री रामकिशोर त्रिपाठी--

अगर हां, तो उपरोक्त योजना कब तक कार्यान्वित हो जायेगी ?

श्री मुजफ्फरहसन--

यदि स्वीकृत हो गई तो चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के द्वितीय व तृतीय वर्ष में कार्यान्वित की जा सकेगी ।

परिवहन विभाग में श्री विल्सन व श्री मिश्र के खिलाफ जांच

*५५--श्री भगवानदास यादवेन्दु (जिला आगरा), श्री ब्रह्मदत्त मायर तथा श्री रामकिशोर त्रिपाठी--

क्या परिवहन मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि क्या यह सही है कि श्री सी० ई० विल्सन जनरल मैनेजर, लखनऊ व श्री मिश्र, सहायक अभियन्ता के खिलाफ भ्रष्टाचार की जांच कराई गई थी ?

श्री मुजफ्फरहसन---

जांच चल रही है ।

*५६---श्री भगवानदास यादवेन्दु, श्री ब्रह्मदत्त मायर तथा श्री रामकिशोर त्रिपाठी--

क्या यह सही है कि जांच से उपरोक्त दोनों व्यक्ति दोषी ठहराये गये जिसके फलस्वरूप श्री मिश्रा सहायक अभियन्ता दो वर्ष से मुअत्तल हैं, परन्तु श्री विलसन के खिलाफ कोई कार्यवाही न करने का क्या कारण है ?

श्री मुजफ्फरहसन---

श्री विलसन को मुअत्तल करने की आवश्यकता नहीं समझी गयी ।

*५७---श्री भगवानदास यादवेन्दु, श्री ब्रह्मदत्त मायर तथा श्री रामकिशोर त्रिपाठी---

क्या सरकार उपरोक्त जांच की रिपोर्ट सदन की मेज पर रखने की कृपा करेगी ?

श्री मुजफ्फरहसन---

अभी जांच पूरी नहीं हुई ।

रोडवेज बोर्ड

*५८---श्री रामकिशोर त्रिपाठी तथा श्री ब्रह्मदत्त मायर---

क्या परिवहन मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि राज्य परिवहन व्यवसाय संस्था को सुदृढ व्यवसायिक ढंग से पर चलाने के उद्देश्य से स्वर्गीय पन्त जी के कार्यकाल में एक यू० पी० रोडवेज बोर्ड संगठित किया गया था ?

श्री मुजफ्फरहसन---

रोडवेज के मामलों में शीघ्रातिशीघ्र कार्यवाही के उद्देश्य से यह बोर्ड स्थापित किया गया था ।

*५९---श्री रामकिशोर त्रिपाठी तथा श्री ब्रह्मदत्त मायर---

क्या परिवहन मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि उपरोक्त बोर्ड कार्य कर रहा है ? अगर नहीं तो क्यों ?

श्री मुजफ्फरहसन---

बोर्ड की बैठक कुछ वर्षों से नहीं हुई क्योंकि ऐसे कोई विशेष मामले नहीं उठे जिनके लिये बोर्ड की सहायता लेनी पड़े ।

अतारांकित प्रश्न

मड़ियाहूं, पिंडला तथा कोलअसला क्षेत्रों में नलकूप

१---श्री ऊदल---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि लगभग पुर तथा उसके चारों तरफ के गांवों में तहसील मड़ियाहूं, जिला जौनपुर में सिंचाई की व्यवस्था हेतु ट्यूबवेल नहीं लगाया गया है जब कि यहां पर १ हजार एकड़ के ऊपर रबी का क्षेत्र है ? यदि हां, तो क्या सरकार इसकी जांच कर जल्द से जल्द ट्यूबवैल लगवाने की कृपा करेगी ?

श्री गिरधारीलाल--

ग्राम लगधरपुर के पास गांव काजिहद में नलकूप निर्माण हेतु सर्वेक्षण किया गया है। भूमि ऊंची नीची और असमतल होने के कारण यहां पर नलकूप निर्माण आर्थिक एवं प्राविधिक दृष्टि से ठीक पाये जाने के अतिरिक्त स्थान की उपयुक्तता पर निर्भर है। अतएव इस समय यह कह सकना संभव नहीं है कि यहां पर नलकूप लगेगा अथवा नहीं और यदि लगेगा तो कब तक।

२--श्री ऊदल--

क्या सिंचाई मंत्री, गांव भटपुरवा, गड़थमा, पलही पही तथा बसौव के पूर्वी व उत्तरी क्षेत्र हेतु एक ट्यूबवैल लगवाने की व्यवस्था पर विचार करेंगे ?

श्री गिरधारीलाल--

गांव भटपुरवा व बसांव के पूरे क्षेत्र की सिंचाई की व्यवस्था बसांव नलकूप से और गांव पलही पट्टी के पूरे क्षेत्र की सिंचाई की व्यवस्था बसांव तथा गोसाईंपुर के नलकूपों से है। ग्राम गरथवां बरसाती नाले और नांद नदी के बीच में स्थित है और क्षेत्र भी कम है और असमतल तथा कटा-फटा है। अतएव उपरोक्त गांवों में नलकूप लगाने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

३--श्री ऊदल--

क्या सिंचाई मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि केराकत माइनर जौनपुर की माइनर दिनदासपुर, परगना कोलअसला, जिला वाराणसी के गांव छतांव, हमीरपुर, सहमलपुर आदि गांवों में फरवरी के बाद से पानी न देने का क्या कारण है और इस माइनर में पानी इस वर्ष १९६५ की गर्मी में गया या नहीं ?

श्री गिरधारीलाल--

दिनदासपुर माइनर, जिसके द्वारा हीरामनपुर, छतांव, सहमलपुर आदि ग्रामों की सिंचाई होती है, शारदा नहर प्रणाली के टेल में है। फरवरी, १९६५ के पश्चात् इस साल की गर्मियों तक शारदा मुख्य नहर में पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होने के कारण हीरामनपुर ग्राम की ही सिंचाई सुचारु रूप से हो सकी और अन्य ग्रामों में सुचारुरूप से पानी नहीं पहुंचाया जा सका।

अल्पवेतन भोगी सरकारी कर्मचारियों के रिट

४--श्री चन्द्रबलीसिंह (जिला देवरिया)--

क्या सरकार यह बताने की कृपा करेगी कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अल्पवेतन भोगी अस्थायी सरकारी कर्मचारियों को संविधान की धारा ३११ के उल्लंघन सम्बन्धी कितनी रिटें दिनांक ३ अगस्त, १९६५ को पेंडिंग हैं ? क्या सरकार इन रिटों को जल्द से जल्द निर्णय करने की कृपा करेगी ?

श्री सैयद अली जहीर--

सूचना एकत्रित की जा रही है।

५--श्री चन्द्रबलीसिंह--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि उपरोक्त रिटों में किन-किन रिटों को सरकार ने सरकारी खर्चे पर लड़ने का आदेश दिया है ?

श्री सैयद अली जहीर--

सूचना एकत्रित की जा रही है।

प्रश्नों के संबंध में आपत्तियां

श्री एस० जी० दत्त (जिला कानपुर)---

श्रीमन्, कल कोरम पूरा न होने की वजह से दफा ५३ का प्रस्ताव पोस्टपोन कर दिया गया था, वह प्रश्न अब कब लिया जायगा क्योंकि लड़ाई का समय है और कानपुर की मिलें बन्द पड़ी हैं ?

श्री ब्रह्मदत्त माथर (जिला सहारनपुर)---

श्रीमन्, ५३ से लेकर ५९ तक के मेरे प्रश्न सारे के सारे आखीर में डाल दिये गये हैं, मैं इसका कारण जानना चाहता हूं ।

श्री अध्यक्ष---

माननीय सदस्यों से मैंने कई बार निवेदन किया है कि जो प्रश्न यहां आते हैं उनको पंजिका में दर्ज किया जाता है । जिस क्रम में वे दर्ज होते हैं उसी क्रम में उनको यहां लिया जाता है । आप देख लें, अगर उस क्रम में कोई परिवर्तन हुआ हो तो हम उसको देख लेंगे ।

श्री लखीसिंह (जिला मथुरा)---

श्रीमन्, सन् ६२ से मैं नोट कर रहा हूं कि क, ख और ग नत्थी में से किसी भी नत्थी में से मेरा सवाल कभी पहले नम्बर पर नहीं आया और माननीय ऊदल और दूसरे सदस्यों के रोजाना आ जाते हैं ? कुछ गोलमाल तो जरूर होती है, इसको साफ कराया जाय ।

श्री अध्यक्ष---

आप कृपा करके मेरे कक्ष में आ जायं, रजिस्टर देख लिया जायगा और जो उचित होगा वह किया जायगा ।

श्री लखीसिंह---

श्रीमन्, और सदस्यों के तो जल्दी आ जाते हैं, श्री रियासत हुसैन के आ जाते हैं, हमारे में देर लगती है जरूर इसमें कोई गड़बड़ होती है ।

(श्री प्रेम सिंह के खड़े होने पर)

श्री अध्यक्ष---

मैं कार्य-क्रम बता दूं तब आप कहें ।

श्री प्रेमसिंह---

मेरा भी बहुत जरूरी था, पता नहीं यह कब आयेगा ?

सदन का आगामी कार्य-क्रम

श्री अध्यक्ष---

जो कार्य-क्रम तय हुआ है वह इस प्रकार है---

मंत्रि-परिषद् पर अविश्वास के प्रस्ताव पर बहस ३ दिन यानी ७, ८ व ९ सितम्बर को होगी । इसके समाप्त होने के बाद ९ तारीख को ५ बजे अपराह्न तक वित्तीय वर्ष १९६५-६६ के अतिरिक्त अनुदानों पर सामान्य वादविवाद और मांगों पर मतदान होगा और १० सितम्बर को असरकारी दिवस रहेगा ।

आज शाम के लिये जो यह २ वक्तव्य नियम ५० तथा नियम ५३ के हैं इनके विषय में कार्यमंत्रिणा समिति ने यह निश्चित किया है कि इन को आज ही लेना असंभव होगा, अतः उनको सम्प्रप्ति स्थगित कर दिया गया है, हो सका तो इनको १० तारीख की शाम को ले लेंगे ।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—

म्योर मिल के बारे में हमने दिया था....

श्री सन्तसिंह यूसुफ (जिला कानपुर)—

श्रीमन्, म्योर मिल वाला आज के लिये स्थगित हुआ था।

श्री अध्यक्ष—

वह अब १० तारीख की शाम को लिया जायगा।

संसदीय समुदाय की बैठक के संबंध में सूचना

श्री अध्यक्ष—

एक सूचना और है कि आज अपराह्न ५ बजे संसदीय समूह की बैठक तिलक हाल में होगी।

श्री बाबूसिंह द्वारा प्रजा सोशलिस्ट दल की सदस्यता ग्रहण करने के संबंध में सूचना

श्री अध्यक्ष—

एक सूचना और है, श्री बाबूसिंह ने लिखा है कि मैंने संयुक्त सोशलिस्ट दल छोड़ दिया है और मैं अब प्रजा सोशलिस्ट दल का सदस्य बन गया हूं, अतः मेरा नाम प्रजा सोशलिस्ट दल में कर दिया जाय।

नियम ५२ के अन्तर्गत सूचनाएं

श्री अध्यक्ष—

नियम ५२ की २ सूचनायें आई हैं वह विषय आज माननीय सदस्य अविश्वास के प्रस्ताव में रख सकते हैं। इसलिये उनको स्वीकार नहीं किया गया है।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—

देश की स्थिति को देखते हुये कम से कम इनको मंत्री जी के पास भेजा जाय।

श्री अध्यक्ष—

मंत्री जी के पास दोनों जायंगी।

श्री उग्रसेन—

यह नियम ५० वाले का क्या होगा ?

श्री अध्यक्ष—

अविश्वास के प्रस्ताव में सब कह लीजियेगा।

सेमरी महथावल बांध के टूट जाने के संबंध में नियम ५२ के अन्तर्गत सूचना

विद्युत् उपमंत्री (श्री शान्ति प्रपन्न शर्मा)—

अध्यक्ष महोदय, बस्ती जिले की नौगढ़ तहसील में कूड़ा नदी के बायें किनारे और घोंघी नदी के दाहिने किनारे पर १९६० में २८ मील लम्बा कूड़ा घोंघी बांध का निर्माण २० हजार एकड़ क्षेत्र की बाढ़ से सुरक्षा के लिये किया गया।

[श्री शान्तिप्रपन्न शर्मा]

मैदान में आने पर नदी बहुत घुमाव दार हो गयी है जिससे अनेक लूप बन गये हैं। सेमरी और महथावल दोनों ग्राम कूड़ा नदी के किनारे विकास क्षेत्र बर्डपुर तहसील नौगढ़ जिला बस्ती में स्थित है। सेमरी महथावल बांध नाम का कोई बांध बर्डपुर विकास क्षेत्र में नहीं है। सम्भवतः माननीय सदस्य का अर्थ कूड़ा घोघी बांध से है।

वर्षा से पहले मंडीला गांव के निकट जहां कटाव हो रहा था साल, बल्लियों नदी की तरफ गाड़ कर और झाकड़ एवं बड़े-बड़े पेड़ नदी की तरफ डालकर बांध की सुरक्षा का प्रबन्ध कर लिया गया था। इसके अतिरिक्त बांध के पीछे मिट्टी डाल कर बांध को इस जगह पूरी चौड़ाई में बना लिया गया था। सम्बन्धित अधीक्षक अभियन्ता ने इस बांध का दिनांक २४ अगस्त, १९६५ को निरीक्षण भी किया था जब कि इस जगह मरम्मत का काम चालू था। उन्होंने निरीक्षण के समय एक और ठोकर बनाने का आदेश दिया था जिस से नदी का बहाव दूसरी ओर हो जाय। लेकिन जब यह काम प्रगति पर था, पहाड़ों पर अधिक वर्षा हो गयी और बड़नी रेनगेज स्टेशन पर अस्पताल २७ अगस्त को ४० मि० मी० और २८ अगस्त को १५७.४ मि० मी० वर्षा इन्दराज की गई। इस कारण नदी में एकाएक पानी बढ़ गया और भारी बाढ़ आ गई।

बांध के मील २६-३ के निकट नदी में बहुत घुमाव है। इस घुमाव के कारण अधिक कटाव होना प्रारम्भ हुआ और बांध का सेक्शन कम हो गया। अधिक वर्षा के कारण ३१ जुलाई से ही नदी का कटाव बांध के मील २६-३-२२० और मील २६-२-४९५ के बीच होना आरम्भ हो गया था। अतः इस स्थान को कटाव से बचाने के लिये ऊपरी भाग में साल बल्लियां को नदी में गाड़ कर तथा बल्लियों से बांध कर खाली स्थान में झाखर तथा बालू से भरी बोरियां डाली गयीं। पेड़ के लम्बे-लम्बे, तने तथा डालियां नदी में लटकायी गयी तथा कटाव स्थल के ऊपर समीप ही एक ठोकर का निर्माण इस आशय से किया जा रहा था कि धारा का प्रभाव बांध से दूर हो जाय। इन सब यथासंभव प्रयत्नों के बावजूद भी यह बांध ४ बजे सायंकाल दिनांक २८ अगस्त, १९६५ को मील २६-३ पर टूट गया तथा कूड़ा नदी का पानी बांध के पीछे खेतों में तथा नीची भूमि में भर गया। इस से फसल और मकानों को जो हानि हुई उसका मूल्यांकन किया जा रहा है। नदी का स्तर कम हो गया तो पानी बांध के कटे हुये भाग से नदी में वापस चला गया। फिर भी कुछ पानी जहां भूमि नीची थी वहां अब भी भरा हुआ है और आशा है कि यह पानी नालों तथा सोतों से निकल जायगा। यह भरा हुआ पानी जल्दी से जल्दी निकले इसलिये यह बांध किसानों द्वारा मील ९ पर काट दिया गया जिससे ऊपर से आया हुआ पानी नदी में फिर वापस चला गया। यह बांध मील २६-३ पर ७७० फीट की लम्बाई में कटा है।

अतः यह कहना कि सरकार की उपेक्षा के कारण बांध टूट गया ठीक नहीं है। इस स्थान पर संबंधित अधिकारी तथा कर्मचारीगण सुरक्षात्मक कार्य करने में वहां पहले से मौजूद थे। यह कहना भी ठीक नहीं है कि अधीक्षक अभियन्ता, गोरखपुर ने कार्य को रुकवा दिया क्योंकि उन्होंने इस प्रकार का कोई आदेश नहीं दिया बल्कि संबंधित अधिशासी अभियन्ता एवं अधीक्षक अभियन्ता सुरक्षात्मक कार्य करने की हिदायत बांध के कटने के समय तक करते रहे।

जहां तक बांध की मरम्मत का प्रश्न है नदी के लूप को जो सिर्फ ५०० फीट रह गया है, काट कर पानी निकालने का प्रयास किया गया परन्तु ग्राम सेमरी तथा महथावल के निवासियों के कड़े विरोध के कारण ऐसा नहीं किया गया। जिलाधीश से भी इस विषय में सम्पर्क स्थापित किया गया परन्तु झगड़ा हो जाने की आशंका से यह ५०० फीट का कट (cut) नहीं बनाया गया और यह सुझाव दिया गया कि बाढ़ से बचाने के लिये रिटायर्ड बांध के निर्माण हेतु लगभग ४० एकड़ भूमि उपलब्ध कराई जाय। इस पर जिलाधीश की यह राय हुई कि इस समय फसल खड़ी है और कोई भी आदमी जमीन देने को तैयार

नहीं होगा। अन्त में यह तय किया गया कि सीमेन्ट की बोरियां बालू से भरकर बांध के कटे स्थान पर कतारों में लगा दी जांय जिससे यदि दुबारा बाढ़ आये तो पानी फैलने न पाये। यह कार्य शुरू कर दिया गया है। मील ९ के समीप जो किसानों ने बांध काट दिया था उसको भी बन्द करने का प्रयास किया जा रहा है।

श्री चन्द्रपाल (जिला बस्ती)---

मैं जानना चाहता हूं कि मंत्री जी ने जो कहा है कि अधीक्षक अभियन्ता, गोरखपुर ने कोई ऐसा आदेश नहीं दिया कि बंधा रोक दिया जाय। मैं आपसे स्पष्ट कहना चाहता हूं कि हमारे सिंचाई अभियन्ता ने जाकर वहां किसानों से पूछा और यह कहा कि अगर बांध टूट जाने से तुम्हारी आबपाशी होगी और रबी की फसल अच्छी होगी, जैसा नरसिंह-नारायण पाण्डेय जी ने कहा कि गोरखपुर के किसानों के साथ ऐसा व्यवहार किया है क्योंकि कई हजार एकड़ भूमि पानी से डूब गयी। तो क्या मंत्री जी बतायेंगे कि जो नदी को सीधा करने की चर्चा हो रही है उसको शीघ्र सीधा कराने की कृपा मंत्री जी करेंगे ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा---

पहले यह स्कीम चलायी गयी कि नदी के रूट को काट कर सीधा कर दें, लेकिन गांव वालों ने विरोध किया इसलिये अब यही हो सकता है कि जो बांध बना हुआ है उसको ऊंचा करके ठीक कर दें। उसके लिये मिट्टी चाहिये, मिट्टी के लिये जमीन चाहिये, जमीन ऐक्वायर करनी पड़ेगी।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद (जिला सीतापुर)---

जिस वर्षा का जिक्र मंत्री जी ने किया वह वहां की सामान्य वर्षा से अधिक नहीं है। तो क्या सरकार की लापरवाही से यह बांध नहीं कट गया क्योंकि उसकी समय से मरम्मत या रोकथाम नहीं की गयी ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा---

पानी बाढ़ का आया है और सामान्य से ज्यादा पानी बरसा है। पानी पहाड़ से आया करता है।

श्री नरसिंहनारायण पाण्डेय (जिला गोरखपुर)---

इस बात को देखते हुए कि यह बांध १९६० में बना और आज तक और बांध नहीं बना, इसमें ब्रीचेज हो गये हैं जिससे फसल को नुकसान हो रहा है। इस बात को देखते हुए क्या मंत्री जी इसकी जांच करा के ठीक कराने की कृपा करेंगे ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा---

जांच क्या करायें, बांध ठीक हालत में था। हमारे सहायक और अधिशासी अभियन्ता मरम्मत कराने के लिये वहां थे।

श्री जगदीशप्रसाद पाण्डेय (जिला बस्ती)---

अध्यक्ष महोदय, उन्हीं व्यक्तियों से जांच करायी गयी जिनके खिलाफ आरोप था। उन्होंने वहां मरम्मत रोक दी थी यह सारा बयान कपोलकल्पित है। बाढ़ रोकने वाला काम जून तक समाप्त कर दिया जाता है। पानी सितम्बर में आया। तीन महीने लेट होने के बाद भी काम पूरा नहीं हुआ। साल में कुछ काम नहीं हुआ। सारा काम रोक दिया गया था। जून में कुछ काम हुआ, लेकिन इंजीनियर ने काम रोक दिया और सुपरिन्टेंडिंग और ऐग्जीक्यूटिव इंजीनियर ने बुला कर डांट दिया। एक ही बांध नहीं कई बांध खतरे में हैं। यह सब देखते हुए क्या मंत्री जी फिर से जांच करायेंगे कि जितनी रिपोर्ट है वह सब गलत है और सिर्फ अपने बचने के लिये यह कहा गया है ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा---

सब अधिकारी वहां लगे हुए हैं और क्या जांच करायें, उसकी मरम्मत करा रहे थे।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)---

माननीय मंत्री जी के बयान से यह नहीं मालूम हो सका कि यह बांध जब १९६० में बना तो किस विभाग ने बनाया तथा इस पर कितना खर्चा हुआ और इसके टूटने की सूचना पहले पहल उनको किस तारीख को प्राप्त हुई ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा---

किस तारीख को टूटा है यह मैं बतला चुका हूं, लेकिन यह सूचना कब प्राप्त हुई इसकी सूचना मेरे पास नहीं है।

श्री उग्रसेन---

बांध कमजोर है और टूट रहा है यह सूचना उनको कब मिली ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा---

बांध के कमजोर होने का सवाल नहीं है। जब कटाव शुरू हुआ तो वहां हर साल जैसे मरम्मत की जाती है वैसे ही मरम्मत कर दी गयी। जहां कम चौड़ा होता था वहां ज्यादा चौड़ा कर दिया। हमारे सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर ने उसका निरीक्षण किया और कहा कि इसको बढ़ा दो और अन्य इंजीनियर्स ने भी देखा और कहा कि इसकी मरम्मत कर दो। वह कर दी गयी।

श्री कल्पनाथसिंह (जिला गोरखपुर)---

इस बात को देखते हुए कि गोंडा, बहराइच, बस्ती, गोरखपुर तथा देवरिया जिलों में राप्ती की बाढ़ से कटाव की प्राबलम हर साल सरकार के सामने आती रहती है, तो मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या सरकार इस तरह की कोई योजना बनायेगी कि घाघरा तथा राप्ती के पानी के बहाव की गति को देख कर कोई इस प्रकार की नहर निकाले जहां सब से कम दूरी हो दोनों में और जिससे सिंचाई का काम लिया जा सके और अधिक से अधिक पानी घाघरा में मिला दिया जाय ताकि कटाव की विषमता से बचा जा सके ?

सिंचाई मंत्री (श्री गिरधारीलाल)---

योजनायें जरूर सामने हैं, लेकिन धन की उपलब्धि पर निर्भर करता है। अगली योजना में बाढ़ को रोकने के लिये २५ करोड़ रुपये की मांग प्लानिंग कमीशन से की थी। मुझे उम्मीद है कि वह रुपया हमको नहीं मिल रहा है। ऐसी सूरत में अगर उतना रुपया नहीं मिला तो हमारे लिये मजबूरी होगी कि हम इस पूरे काम को अपने हाथ में ले सकें।

श्री चन्द्रजीत यादव (जिला आजमगढ़)---

यह बांध जहां बना हुआ है वहां की बी० डी० सी० ने यह प्रस्ताव पास किया था कि यह कमजोर है और टूटने का खतरा है और संबंधित अधिकारियों की तरफ ध्यान आकर्षित किया गया था कि इसकी देखरेख की जाय तो फिर संबंधित अधिकारियों ने क्यों कार्यवाही नहीं की ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा---

इसकी सूचना मेरे पास नहीं है, लेकिन हमारे अधिकारी उसे देखने के लिये गये और जितनी कमजोरियां पाईं उनको दूर करने का प्रयास किया। असिस्टेन्ट इंजीनियर,

एग्जिक्यूटिव इंजीनियर तथा सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर वहां गये और बहुत-सा काम भी वहां कराया ।

श्री बिपिनबिहारी तिवारी (जिला सीतापुर)--

मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । मंत्री जी ने जांच की रिपोर्ट यहां दी और जगदीश-प्रसाद जी ने कहा कि जितनी रिपोर्ट है वह कपोलकल्पित है और मंत्री जी से उन्होंने यह प्रार्थना की, कि उनकी जो जांच है उसको आधार मान कर इस प्रश्न पर फिर से जांच कराई जाय जिस पर मंत्री जी ने यह उत्तर दिया कि उनके अधिकारियों ने जो जांच की है वह ठीक है अब उसकी क्या जांच कराई जाय । तो मैं इस बात पर व्यवस्था चाहता हू । जब एक माननीय सदस्य सदन में आकर यह कह रहा है कि जो जांच हुई है, उसकी जो सूचना है वह कपोलकल्पित है, इस बात के रहते हुए मंत्री जी को इसकी जांच करान में क्या कठिनाई है ?

श्री अध्यक्ष--

माननीय तिवारी जी, मौलिक चीज यह है कि इतना कह देने से कि तुम्हारी रिपोट गलत है, काम नहीं चलता है । ऐसे तथ्य होने चाहिये जिनसे सिद्ध हो सके कि यह वक्तव्य गलत है । वे तथ्य आपके पक्ष म हों और कहत हों कि यह रिपोर्ट गलत चीज है ।

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)--

अध्यक्ष महोदय, मैं यह जानना चाहता हूं कि बांधों के टूटने का सवाल सामने आता रहता है । हमारे यहां छितौनी बांध टूटा उसी तरह से बलिया में ६ लाख रुपया खर्च करके एक बांध बनाया गया था वह भी टूटने के प्वाइन्ट पर है । मैं यह जानना चाहता हूं कि जब बांध बनते हैं और टूटते हैं तो क्या उसकी किसी की जिम्मेदारी नहीं है ? और जिनकी असावधानी से टूटते हैं उनमें से कितनों को दण्ड दिया गया और उसके लिये कोई जांच हुई या नहीं ? जनता का करोड़ों रुपया खर्च होता है और सारा रुपया इंजीनियर्स, ओवर-सीयर्स बरबाद करते हैं ।

श्री अध्यक्ष--

माननीय काशीनाथ जी आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं । लेकिन यह बहस है ।

श्री काशीनाथ मिश्र--

मंत्री जी के पास इसका क्या इलाज है ?

श्री अध्यक्ष--

थोड़ी देर के बाद अविश्वास का प्रस्ताव आ जाय तब बोल लीजिये ।

श्री हरीशकुमार गंगवार (जिला बरेली)--

क्या मंत्री जी जांच करायेंगे कि एस० ई० गोरखपुर मेथावल गांव में गये और वहां लोगों से कहा कि इसके टूट जाने से तुम्हारा फायदा होगा और रबी की फसल बढ़ेगी जिससे उसकी मरम्मत रोक दी गई ?

श्री अध्यक्ष --

उनका कहना यह है कि वहां कहा गया था कि इसको टूटने दो ।

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा--

अगर आदरणीय सदस्य को व्यक्तिगत जानकारी है और वह लिखकर भेजेंगे तो जरूर जांच करायेंगे । हम आपका बड़ा सम्मान करते हैं ।

श्री यादवेन्द्रदत्त (जिला जौनपुर)—

श्रीमन्, अभी मंत्री जी ने कहा कि वहां पर इंजीनियर्स गये और उन्होंने देखा भी होगा। मैं यह जानना चाहता हूं कि उसमें क्या खराबी थी और उसको दूर करने के लिये क्या प्रयास किया गया ? क्या उनकी कोई रिपोर्ट आई ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा—

श्रीमन्, अगर माननीय सदस्य पूरा जवाब सुन लेते तो यह प्रश्न न करते। मैंने कहा है कि उन्होंने कहा कि चौड़ाई कम की जाय, डंडे लगा दिये जायं, यह सब पढ़कर मैंने सुना दिया।

श्री यादवेन्द्रदत्त—

अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी क्यों गरम हो रहे हैं, मैं उनसे भी ज्यादा गरम हो सकता हूं। मेरा प्रश्न साधारण है कि क्या कार्यवाही की गई खाली चौड़ाई घटा देने से या किसी का पैर काट देने से काम चलने वाला नहीं है।

श्री उग्रसेन—

हम अभी एक सवाल करेंगे सारी पोल खुल जायगी।

श्री अध्यक्ष—

उनका मतलब यह है जो डायरेक्शन उन्होंने दिये उनको कैरी आउट किया गया या नहीं ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा—

श्रीमन्, मैंने तो स्वाभाविक बात कही, लेकिन माननीय दुबे जी नाराज हो गये। मैं उनको नाराज नहीं करना चाहता था। जहां बांध टूटा था उसके लिये उन्होंने ही आदेश दिया था कि वहां जाकर ठीक करा दिया जाय। फिर वहां कंकड़ और बालू से भरी सीमेन्ट की बोरियां लगा कर तथा पेड़ों के बड़े-बड़े तने काट कर स्पर बना दिया गया जिससे बांध की मरम्मत ठीक से हो सके। इस तरह से तमाम चीजें देखने के बाद उन्होंने आदेश दिया और उसके बाद ही यह काम पूरा हुआ।

(व्यवधान)

श्री उग्रसेन—

क्या माननीय मंत्री जी को इसकी जानकारी है कि एक ऐसे विभागीय अधिकारी ने उस स्थान की जांच करने के बाद बतलाया था तथा अपनी राय दी थी कि बांध गलत जगह बना है ? यदि हां, तो फिर उसकी राय को न मान करके वहीं बांध क्यों बनाया गया ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा—

इसकी कोई सूचना मेरे पास नहीं है। इसके लिये नोटिस चाहिए।

श्री झारखण्डे राय (जिला आजमगढ़)---

श्रीमन्, इस साल पानी कम बरसा, बस्ती जिले में बाढ़ कम आयी, फिर भी कमाल की बात है कि इस बांध के टूटने से बस्ती जिले के ११ गांव क्षतिग्रस्त हुए हैं, और इन गांवों में दो आदमियों को छोड़कर करीब-करीब सभी भूमिहीन हैं या बहुत थोड़ी जमीन वाले हैं और उनमें १८४ गांव बिलकुल ध्वस्त हो गये हैं या करीब-करीब ध्वस्त हो चुके हैं। तो क्या सरकार उस इलाके में जो जिला परिषद् की या सरकार की सड़कें हैं उनको अपनी ओर से बनाने की कृपा करेगी और वहां टेस्ट वर्क शुरू करेगी ताकि वहाँ के लोगों को काम मिल सके और उनको जीविका प्राप्त हो सके?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा---

इसका तो राजस्व विभाग से संबंध है, इसके लिये आवश्यक प्रबन्ध उनकी तरफ से किया जायगा।

श्री चन्द्रबलीसिंह (जिला देवरिया)---

चूंकि वहां इस साल पानी भी नहीं बरसा और बाढ़ भी नहीं आयी जिससे बांध टूटने की सम्भावना हो सकती थी, इससे साफ है कि निश्चित तौर पर इंजीनियर्स की लापरवाही से ही यह बांध टूटा, उसने गैरजिम्मेदारी से काम किया, तो क्या सरकार इसकी वजह से जो ११ गांवों की फसलें बरबाद हुई हैं तथा १८४ मकान गिर गये हैं, वहां के लोगों को इसका मुआवजा देने की कृपा करेगी?

श्री अध्यक्ष---

वह तो आपने दूसरी बात छेड़ी।

श्री झारखण्डे राय---

मेरे प्रश्न का जवाब तो दिलवा दें।

श्री अध्यक्ष---

उन्होंने कहा कि राजस्व विभाग से इसका संबंध है, उनकी तरफ से इस पर विचार होगा। जहां तक सिंचाई मंत्री का प्रश्न है वह तो केवल पुल, बांध बांड़ आदि के संबंध में ही कुछ कर सकते हैं।

श्री जगदीशप्रसाद पाण्डेय---

माननीय मंत्री जी ने जो सूचना दी है वह गलत है। किसी कटाव की वजह से यह बांध नहीं टूटा है, बल्कि बांध की मरम्मत नहीं हो सकी थी और ऊपर से पानी बह कर आने की वजह से यह बांध टूटा है, क्या इसकी सूचना माननीय मंत्री जी को है?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा---

इसकी सूचना मेरे पास नहीं है।

श्री चन्द्रपाल---

जैसा कि माननीय मंत्री जी ने बतलाया कि अधीक्षण अभियन्ता बांध की मरम्मत कराने के लिये गोरखपुर से गये थे। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि यह बिलकुल गलत सूचना आपने दी है।

श्री अध्यक्ष---

इससे कोई फायदा नहीं है।

श्री यादवेन्द्रदत्त--

अभी माननीय मंत्री जी ने बताया कि उसकी रक्षार्थ यह यह काम हुआ, पानी भी कम बरसा, बाढ़ बहुत नहीं आयी, रक्षा भी हुई, किन्तु फिर भी बांध टूट गया तो क्यों टूट गया इसकी स्पष्ट जांच करने के लिये क्या आप कोई जांच कमेटी बिठायेंगे ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा--

मैं पहले कह चुका हूं कि पानी पहाड़ों से बहुत ज्यादा आया, वह भी कोशिश करते रहे पानी को रोकने के लिये, कटाव जो होता रहा उससे पूरी-पूरी रक्षा की जाती रही, लेकिन फिर भी बांध टूट गया ।

श्री ब्रह्मदत्त मायर--

मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि जितने बांध आपके बन रहे हैं, उनमें पत्थर लगा दिया जाता है, फाउन्डेशन उनकी पक्की नहीं बनाई जाती है, उसमें सीमेन्ट नहीं लगाया जाता है और उसमें कोई लोहे का जाल उसके ऊपर नहीं लगाया जाता है, इस कारण से आपके तमाम बांध टूट गये हैं । तो क्या सरकार ऐसा कोई प्रबन्ध करेगी कि पत्थर के ऊपर लोहे का जाल बिछाने की व्यवस्था की जाये, जैसा कि विदेशों में होता है ?

श्री शांतिप्रपन्न शर्मा--

हर मर्ज की एक दवा तो होती नहीं, अलग-अलग किस्म के बांध होते हैं और उनके निर्माण के लिये अलग-अलग तरीके अपनाये जाते हैं ।

मंत्रि-परिषद् के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव

श्री अध्यक्ष--

माननीय माधवप्रसाद त्रिपाठी....

(श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी के खड़े होने पर)

श्री जे० पी० मिश्र (जिला हरदोई)--

अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे एक प्रार्थना करना चाहता हूं, अगर आप एक मिनट का समय मुझे दे दें, तो बड़ी कृपा होगी । वह बात यह है कि माननीय माधवप्रसाद त्रिपाठी ने कुछ बयान अखबारों में दिये थे इस समय बहुत बड़ा संकट है देश के ऊपर, इस तरह का हमला हुआ है देश के ऊपर । ऐसे समय में त्रिपाठी जी ने जो यह अविश्वास प्रस्ताव रखा है, वे उसके ऊपर पुनर्विचार करें कहीं ऐसा न हो कि यह दुश्मन की मदद करने वाला सिद्ध हो....

(व्यवधान)

ऐसे कठिन समय में मनोबल को घटाने के लिये विधान सभा में इस तरह का प्रस्ताव नहीं आना चाहिये । श्रीमन्, जैसे मुहम्मद गोरी के समय जयचन्द पैदा हुए और लार्ड क्लाइव के समय में मीर जाफर पैदा हुए, ऐसा ही देश और प्रदेश की जनता इन्हें भी न समझने लगे....

(व्यवधान)

(अनेक सदस्यों द्वारा अनुचित शब्दों को वापस लेने की मांग होने पर)

श्री अध्यक्ष--

वह स्वयं मजबूत हैं, इसका उत्तर देने के लिये, वह जवाब दे लेंगे । आप लोग बैठ जाइये ।

श्री भगवानदास यादवेन्दु (जिला आगरा)---

श्री मिश्र जी द्वारा कहे शब्दों का मैं घोर विरोध करता हूं, यह शब्द निकाल दिये जायें।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)--

श्रीमन्, यह हमें जयचन्द और मीरजाफर कहते हैं, अपने को देखें, इन्होंने और इनकी कांग्रेसी सरकार ने, काश्मीर, हिमालय, कैलास और मानसरोवर दुश्मनों के हवाले कर दिया, क्या यह गद्दार नहीं हैं, जो हम विरोधी पार्टी वालों को गद्दार कहते हैं। इन्हें शर्म नहीं आती। आप इनसे यह शब्द वापस कराइये। श्रीमन्, देश से देश के दुश्मन तभी भागेंगे जब कि दिल्ली और प्रदेशों की गद्दियों से कांग्रेसी भागेंगे।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद (जिला सीतापुर)—

आपने त्रिपाठी जी को बुलाने पर और उनके बोलने के लिये खड़े होने पर भी मिश्रा जी को एलाउ किया है, यह गलत है, आप उनसे इन शब्दों को वापस कराइये। यदि आप सदन को ठीक तरह से चलाना चाहते हैं तो इन शब्दों को वापस कराइये।

(व्यवधान)

श्री यादवेन्द्रदत्त (जिला जौनपुर)--

अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, अध्यक्ष महोदय संसदीय परम्परा की यह आवश्यकता है और यह सिद्धान्त है कि एक दूसरे को हम गद्दार, जयचन्द, मीरजाफर और ट्रेटर न कहें। यदि इस प्रकार का आपको मेरे प्रति अविश्वास होगा इधर के बैठने वालों पर तो आप निश्चित समझिये कि हम आपको उससे अधिक कह सकेंगे। संसदीय परम्परा में मतभेद होना अलग चीज है यह स्वाभाविक है, परन्तु इस प्रकार से निम्न स्तर पर आना जिसको मोस्ट कंडेम्नेबिल कहा जायगा इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग हो तो बड़े दुख की बात है। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इस सदन की मान मर्यादा की रक्षा के लिये आप इन शब्दों को प्रोसीडिंग्स से निकलवायें और मैं आपके द्वारा माननीय मिश्र जी से भी प्रार्थना करूंगा और आशा करूंगा कि वे इन शब्दों को वापस ले लेंगे।

श्री उग्रसेन---

मैं इनसे प्रार्थना तो करूंगा नहीं, लेकिन मैं आपसे निवेदन करूंगा कि इन शब्दों को निकलवायें। ये शब्द घातक हैं और ये लोग खुद गड़बड़ी करना चाहते हैं।

श्री अध्यक्ष--

मैं समझता हूं कि चाहे कितना कटु और अप्रिय प्रस्ताव वह रखें, लेकिन संसदीय परम्परा इस बात का तकाजा करती है कि हम उसे शान्तिपूर्वक सुनें और तर्क प्रस्तुत करें। ऐसे शब्दों का प्रयोग करना जैसा कि माननीय सदस्य ने किया है वह अनुपयुक्त है और विशेषकर अपने देशवासियों के लिये। मैं समझता हूं कि ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिये जो कि कटुता पदा करते हैं।

श्री जे० पी० मिश्र---

तो अविश्वास का प्रस्ताव क्या मुहब्बत पैदा करता है ?

(अधिक शोर)

श्री उग्रसेन--

इतने नीचों की सरकार को निकालन में ही इस देश का कल्याण है। क्या ये समझते हैं कि हम इनकी धमकी से अविश्वास के प्रस्ताव को वापस ले लेंगे ?

श्री अध्यक्ष---

(अत्यधिक शोर के बाद) मैं कह रहा था कि कितनी कटु बात हो यह इनका अधिकार है और वे अपना अधिकार करते रहे हैं। हो सकता है कि आपको अप्रिय हो, लेकिन संसदीय परम्परा यही है कि हम दूसरे की बात समझें और उसका जवाब आप दें।

(अत्यधिक व्यवधान)

श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती)---

अध्यक्ष महोदय, वैसे तो मैं जिस वातावरण और जिस मुद्रा में इस अविश्वास के प्रस्ताव को रखना चाहता था उसे आप क्षमा करेंगे कि मिश्र जी और आपके सहयोग दोनों ने उसे खंडित कर दिया। "अतिशय रगड़ करे जो कोई, अनल प्रकट चन्दन ते होई"। जिन राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत हो कर मैं अपने विचार प्रस्तुत करना चाहता था उसे अब मुझे विवश हो कर दूसरा मोड़ देना पड़ रहा है इसलिये कि आपने भी उसमें सहयोग नहीं दिया। हमारी सारी भावनाओं को जानते हुये भी आपने आदेश नहीं दिया कि वे उन अभद्र शब्दों को वापस लें तो सचमुच यही कारण है कि विरोधी दल आप में विश्वास करने से हिलने लगा है। यदि इन शब्दों का प्रयोग रहता है तो गंदे से गंदे शब्दों का प्रयोग सरकार के लिये हो तो आपको बुरा नहीं मानना चाहिये। मैं आपसे प्रतीक्षा करता था और बैठा था कि आप उनको आज्ञा देंगे कि ऐसे शब्दों को वे वापस लेंगे, लेकिन आप की कुर्सी से वह नहीं किया गया और सहयोग और सद्भावना के वातावरण को बिगाड़ने में आपने भी सहयोग दिया, इसके लिये माननीय अध्यक्ष जी मुझे बहुत दुख है।

श्री अध्यक्ष---

मैं आपको बता दूं। मैं बोल रहा था, मैंने अभी समाप्त नहीं किया था कि बीच में ही आप खड़े हो गये। मैं यही कह रहा था कि इतने में आप खड़े हो गये। मैं कह रहा था. . . .

(घोर व्यवधान)

श्री उग्रसेन---

अगर ये इसे वापस नहीं लेते और आप भी इसको नहीं निकालते तो हम भी कहेंगे जो कुछ हमको कहना है।

श्री अध्यक्ष---

मैं यही कह रहा था आपसे कि चाहे कितने ही कटु शब्द हों. . . . . .

(पुनः व्यवधान)

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)---

मैं आपकी आज्ञा से एक बात कहना चाहता हूं कि विरोधी दल के लोगों को माननीय मिश्र जी की बातों से उत्तेजित होने की आवश्यकता नहीं है यह उनका संसदीय अधिकार है कि सदन के अन्दर जो भी वह उचित समझें वह कहें। यह हाउस आफ कामन्स, लोक सभा और विधान सभा की मर्यादा है। उनके शब्दों से तो वे लोग घबड़ायें जिनके तरकस में माननीय मिश्र जी के तरकस से कम मजबूत तीर हों। जिनके तरकस में उनसे ज्यादा मजबूत तीर हैं उनको घबड़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं क्या हूं इसको उनका क्षेत्र की जनता जानती है और समझती है। जे० पी० मिश्र जी कैसे हैं उनको भी जनता जानती है। जिनके पास मोटर-कार के परमिट हैं, लाइसेन्स हैं और नाना प्रकार की ऐसी चीजें हैं . . . .

(व्यवधान)

श्री उग्रसेन---

मिश्र जी के खिलाफ पर्चा छपा है। (शोर)

श्री अध्यक्ष---

उस समय मैंने समाप्त नहीं किया था। मैं यह कह रहा था कि . . . . .

(व्यवधान)

मैं कह रहा था, लेकिन मेरी बात को काटकर माननीय विरोधी दल के नेता खड़े हो गये। .....

(व्यवधान)

श्री हरीशकुमार गंगवार (जिला बरेली)---

आपने उन शब्दों को वापस नहीं कराया। इस परिस्थिति को उत्पन्न करने में आपने सहायता की है।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष--

मैं कह रहा था माननीय मिश्र जी से कि चाहे कितना ही कटु एक प्रस्ताव सदन के सामने आये और अप्रिय लगे, लेकिन तब भी उसको शान्तिपूर्वक सुनना चाहिये। जिन शब्दों का उन्होंने प्रयोग किया है वह अत्यन्त असंसदीय थे और उनको यह नहीं चाहिये था कि इस किस्म के शब्द अपने साथियों के विरुद्ध इस्तेमाल करते। इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग अपने साथियों के विरुद्ध अत्यन्त अनुचित और असंसदीय है और मैं मिश्र जी से निवेदन करूंगा कि वह अपने शब्दों को कृपा कर वापस लेलें।

श्री जे० पी० मिश्र--

मैंने श्रीमन्, निवेदन किया था कि माननीय नेता विरोधी दल ने जो बयान अखबारों में दिया था उसको पढने का मुझे मौका मिला ....

श्री अध्यक्ष--

आपने जो जयचन्द शब्द का प्रयोग किया है उसको वापस लीजिये।

श्री जे० पी० मिश्र--

श्रीमन्, मैंने कोई शब्द ऐसा नहीं कहा जो हिस्टोरिकल न हो। हिन्दुस्तान की हिस्ट्री में जो शब्द लिखे हैं वही मैंने कहे हैं। मेरा मन्शा केवल यह था कि जिस परिस्थिति में यह प्रस्ताव आ रहा है उसको देखकर प्रदेश और देश के लोग यह न कहने लगे कि ये गद्दार हैं।

श्री अध्यक्ष---

मिश्र जी, जिस प्रकार की भावना आपने व्यक्त की है उससे यह ध्वनित होता है कि आप इनके ऊपर आक्षेप करते हैं। आपके लिये शोभा की बात यही है कि जिन शब्दों का आपने प्रयोग किया है उनको आप वापस ले लें। मैं प्रार्थना करूंगा कि आप उन शब्दों को वापस लें लें।

श्री जे० पी० मिश्र--

मैं आप के हुकुम से हाउस के बाहर भी जा सकता हूं। मुझे आप का हुकुम मानने में कोई आपत्ति नहीं है।

श्री अध्यक्ष--

तो इन शब्दों को वापस कर लीजिये।

श्री जे० पी० मिश्र--

मुझे आपका हुकुम मानने में कोई आपत्ति नहीं है।

श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी--

माननीय अध्यक्ष जी, मैं आप की आज्ञा से यह अविश्वास का प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं कि यह सदन वर्तमान मंत्रि-परिषद् में अपना अविश्वास प्रकट करता है ।

श्रीमन्, इस के पहले कि मैं इस विषय पर आऊं, मैं अपने उन जवानों को बधाई देना चाहता हूं सारे विरोधी दल की ओर से, जिन्होंने माता की लाज इस माने में रखी कि उसके लिये वे अपना रक्त बहा रहे हैं, अपना शौर्य उन्होंने दिखाया उस की रक्षा में और आज जो उस का प्रमाण सामने आ रहा है, जो बहादुरों के नाम आ रहे हैं, जैसे कीलर आदि, वह हमारी माता के लिये गर्व का विषय है । मैं उस के लिये बार बार परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह उनका शौर्य बढ़ायें और उन को और यश प्राप्त हो और वे अपने उस शौर्य, बल, साहस और धैर्य से अपनी माता की रक्षा करें । हम सब उन के पीछे हैं ।

साथ ही मैं अपनी केन्द्रीय सरकार की भी प्रशंसा करता हूं कि जिस ने पाकिस्तान के प्रति अपनी एक दृढ़ नीति अपनायी ।

अब श्रीमन्, मैं इस अविश्वास के प्रस्ताव पर आता हूं । इस के पहले कि मैं कुछ कहूं, जो वातावरण उत्पन्न हो गया है उसके बारे में, मुझ जो कुछ कहना होगा वह मैं बाद में, उत्तर के समय कहूंगा । लेकिन एक बात मैं अभी कहना चाहता हूं कि इस अविश्वास के प्रस्ताव की गंभीरता कितनी है, कितना हमारी सरकार इस पर विचार करती है और कितना उसे महत्व देती है, यह केवल इस एक बात से प्रमाणित है कि हमारे मुख्य मंत्री जी आज यहां नहीं हैं । कोई भी कारण नहीं दिया जा सकता कि वह इस अविश्वास के प्रस्ताव की बात सुनने के लिये यहां क्यों न मौजूद रहें । अगर यह बात हो कि कानूनन मंत्री वह हों और वास्तवविक मुख्य मंत्री कोई और हो तो बात दूसरी है, यह बात उन तक पहुंच जायगी, लेकिन मुझे इसका महान दुख है कि वह आज इस अवसर पर यहां न रहें ।

एक बात और कहना चाहता हूं कि इस अविश्वास के प्रस्ताव को क्यों मूव किया गया । आज मैं आप के द्वारा इस प्रश्न को प्रदेश की जनता के सामने और सदन के सामने कहना चाहता हूं कि मेरी भावनाय और मेरी से मतलब हमारे सारे विरोधी दल की भावनायें बहुत ऊंची है । 'जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरत तिन देखी तैसी ।' यदि किसी ने हमारे विचारों के लिये क्षोभ प्रकट किया तो उसके लिये मुझे कुछ कहना नहीं है, लेकिन विरोधी दल का हर एक व्यक्ति ऐसा है कि जो मातृ भूमि के लिये अपना सर्वस्व अर्पण कर देगा । यह बात सही है कि इस संकट के समय में हमें सरकार का साथ देना चाहिये और हम सरकार का साथ देंगे । यह भी सही है कि हम सरकार का साथ और सहयोग देना चाहते हैं चाहे वह सरकार केन्द्र की हो अथवा प्रान्त की, जहां तक युद्ध के साधनों को जुटाने का प्रश्न है, उसमें हम अपनी केन्द्रीय सरकार का हाथ मजबूत करना चाहते हैं और उस में हम अपना पूरा-पूरा सहयोग देंगे, लेकिन मैं अविश्वास के प्रस्ताव के संबंध में कह रहा था कि उसको लाने न लाने को लेकर हमारे सामने एक समस्या पैदा हो गयी है । लोगों ने कहा, लेकिन लोगों ने नहीं सोचा होगा कि विरोधी दल आखिर यह अविश्वास का प्रस्ताव क्यों लाता है । विरोधी दल के पास और कोई चारा नहीं रह गया है, कोई दूसरा मार्ग नहीं है कि वह और कुछ कर सके । मैं आप के सामने सारी बातें रखूंगा । आज हमारी सरकार ऐसी है कि इतना सब कुछ होने पर भी, इतने संकट में भी आकांक्षा तो करती है कि हम उसे सहयोग दें, लेकिन क्या सरकार एक भी अवसर ऐसा बता सकती है कि जब उसने हमारे विरोधी दल की विभिन्न पार्टियों के नेताओं को परामर्श आदि के लिये बुलाया हो, कभी सलाह ली हो ? आखिर हमारे मन में कैसे विश्वास हो कि आप हमारा विश्वास और सहयोग चाहते हैं ।

हम चाहते हैं कि प्रदेश की जनता सोचे, समझे जो जनता आलोचना करने के लिये तैयार है कि क्यों अविश्वास का प्रस्ताव रखा । क्या वह जनता जिसको जनता जनार्दन कहते हैं, समझती है कि हमारी सरकार का रवैया क्या है ? क्या सरकार ने एक भी कदम उठाया जिससे.

मालूम हो कि वह विरोधी दल का सहयोग चाहती है ? मैं तो कहूंगा कि सबसे बड़ा दोस्त वह है जो अपने दोस्त के अवगुण उसके सामने रखे ताकि भविष्य में सुधार हो। लड़ाई के जमाने में ही इंगलैण्ड में चैम्बरलेन को निकाल कर बाहर किया गया। मैं एक जुमला पढ़ना चाहता हूं, २–३ लाइन का। मैं कहना नहीं चाहता था, लेकिन एक माननीय सदस्य ने हमारी उन भावनाओं को उभारा। जिस समय इंगलैण्ड में भीषण परिस्थिति थी जैसे कि हमारे यहां है, उस समय लार्ड ऐमरी ने कहा था—

"You have sat here for too long for any good that you have done. Depart, I say. Let us have done with you. In the name of God, go."

मैं आपसे कहता हूं कि ये परिस्थितियां आपने उत्पन्न कर दी हैं अपने व्यवहार से। यही कारण है कि हमारे दल ने तो ऊबकर राष्ट्रपति के पास एक टेलिग्राम भेजा और हम कल उनसे इस संबंध में मिलने जा रहे हैं कि इस मंत्रिमंडल से यह कार्य-भार निभाया नहीं जा रहा है।

अब प्रश्न हमारे सामने आया कि क्या यह सरकार युद्ध के प्रयत्नों में सफल हो सकती है या सफल योगदान दे सकती है या हम लोगों का सहयोग प्राप्त कर सकती है ? अविश्वास के प्रस्ताव के समय बहुत सी बातें ऐसी हैं कि जनता को खयाल हो सकता है कि आखिर यह इस अवसर पर क्यों लाया गया। इसलिये इस अविश्वास के प्रस्ताव की आवाज इस सदन में नहीं सुनानी है, बल्कि जनता तक पहुंचानी है। परम मित्र वही है जो अपने मित्र के अवगुण स्पष्ट करे। हम तो कहेंगे कि "दि किंग इज डेड, लांग लिव दि किंग। लेट दिस मिनिस्टरी गो एंड लेट एन अदर डेमोक्रेटिक मिनिस्टरी कम अप।" हम पूछना चाहते हैं कि क्या आज मंत्रिमंडल ऐसा है जिसका आपस में विश्वास है ? आज कलेजा जल गया है इस मिनिस्टरी को देखते देखते। एक अखबार पढ़ा, उसमें इतनी खराब बातें थीं, वह मैंने रख लिया। उन्होंने कहा है इक्के वाले से कि तुम इनका सामान ले जाना बन्द कर दो, इन्होंने देश का सामान बन्द कर दिया। बीवियों को कहा कि खाना परोसना बन्द कर दो। तो भावना किधर जा रही है आज ? आप घर में बैठे लड़ रहे हैं। हमें आज जयचन्द कहा गया। जयचन्द कौन है, यह समय बतायेगा। मैं कटु शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहता। आज जो विपत्ति आयी है आपके कारणों से उसके लिये मैं उन्हें क्या संज्ञा दूं, यह आप ही बताइये।

दूसरी बात यह है कि आज इस मंत्रिमंडल में क्या ज्वाइंट रेस्पांसिबिलिटी है ? क्या एक दूसरे पर विश्वास है ? मैं इस पर अधिक विस्तारपूर्वक नहीं कहूंगा। थोड़े दिन पहले आपके सामने आरोप प्रत्यारोप लगाये गये, एक दूसरे पर छींटें फेंके गये। अविश्वास की भावनायें आपस में यहां तक पहुंच गयीं कि एक मंत्री, शर्मा जी के टेलीफोन टैप होते हैं, उनके शैडो से पूछा जाता है उनके बारे में। मंत्रियों के चरित्र पर, मुख्य मंत्री के चरित्र पर छींटाकशी की गयी, किसी को नहीं छोड़ा। यह क्यों हुआ ? यदि आपका हृदय शुद्ध होता, आपके सामने राष्ट्रीय संकट का सवाल होता तो आप समझते कि हमारी जिम्मेदारी एक है, हम इन गन्दी बातों से ऊपर उठें, आज राष्ट्रीय संकट है, आज हम में परिवर्तन होना चाहिये। तो क्या सरकार को मालूम है कि हमारे देश पर राष्ट्रीय संकट है ? सरकार की किसी कार्यवाही से आज यह आभास नहीं मिलाता कि यह सरकार यह महसूस करती है कि आज राष्ट्रीय संकट है।

तीसरी बात मैं यह कहना चाहता था कि यह मंत्रिमंडल, यह सरकार किस मानी में सफल हुई है ? देश की रक्षा के लिये ऐसे समय में दो फ्रन्ट हुआ करते हैं एक फ्रन्ट तो वह है जहां लड़ाई चल रही है, दूसरा होम फ्रन्ट है। होम फ्रन्ट में आपकी आपस में सिविल वार छिड़ी है। विनोबा भावे ने ठीक कहा है कि अगर इस मंत्रि मंडल को अस्त्र शस्त्र दे दिये जायं तो यह सब सफाया कर दे। आपकी करनियों से, आपके कार्यों से, जो हम आज नतीजा निकालते हैं, उसके आधार पर हम कैसे कहें कि हमें आपके ऊपर विश्वास है। आपके काले कारनामों को हम कहां तक

[श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी]

नजरन्दाज करें। हम जनता को कैसे विश्वास दिल यें, अगर आज हम आप में विश्वास करें तो हम देश के साथ विश्वासघात करेंगे, जनता के साथ विश्वासघात करेंगे। इसलिये श्रीमन्, मजबूर होकर हमें सही बात को कहना ही पड़ता है।

पिछली बार, श्रीमन्, हमने कोआपरेशन आफर किया था। उस वक्त हमारा आन्दोलन चल रहा था, हमने उसे वापस लिया। माननीय हुकुम सिंह ने खड़े होकर यहीं कहा था कि जन संघ ने तो इसलिये वापस ले लिया था कि वह फिजिकल आऊट हो चुका था। हमारी भावनाओं को इस तरह की ठेस लगायी जाय और कहा जाय कि हम लोग सहयोग करेंगे। इनका कौन सा कार्य ऐसा है जिसके लिये हम सहयोग करें।

चौथी बात श्रीमन्, यह है कि इनमें कोई भी मैजारिटी को कमान्ड नहीं करता। यह सरकार अपना कार्य अब सम्भाल नहीं सकती। पिछली बार अविश्वास के प्रस्ताव पर जो बातें कही गयी थीं, मैं उनको इस बार नहीं कहूंगा, कुछ मुख्य मुख्य बातों को ही कहूंगा, और जो सैद्धान्तिक बातें हैं उनकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करूंगा। कुछ मोटी मोटी बातों की ओर ही कहूंगा। आज श्रीमन्, सेक्रेटरिएट सरकार पर हावी है, वह इनको कन्ट्रोल कर रहा है, ये सेक्रेटरिएट कन्ट्रोल नहीं कर रहे हैं। घोड़ा आज गाड़ी पर हावी है, गाड़ी घोड़े पर नहीं है। यह प्रयास हो रहा है कि किसी तरह आइ० ए० एस० आफिसर को खुश रखो, हमारा विभाग किसी तरह से ठीक रहे। आज इस बात के स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं कि कौन सा आफिसर कहां रखा जाय।

एक बात यह है कि यह मैजारिटी की बात आज अपनी गुटबन्दी के कारण सुनने तक को तैयार नहीं हैं। इनके काले कारनामों के कारण सारी एडमिनिस्ट्रेटिव मशीनरी करप्ट हो गयी है। आज इनमें सरकार चलाने की क्षमता नहीं रह गयी है। दूसरी किसी की भी सरकार बने, चाहे कोई आदमी प्रदेश के बाहर का आ जाय, वह मंत्रिमंडल बनाये, या चाहे राष्ट्रपति शासन ही हो। कुछ हो, मगर इस सरकार से अब यह शासन सम्भल नहीं सकता। आज एडमिनिस्ट्रेटिव मशीनरी कितनी भ्रष्ट हो गयी है उसके लिये मैं माननीय चरण सिंह जी के स्टेटमेंट का कुछ हिस्सा पढ़कर सुनाना चाहता हूं—

"The State suffers from want of efficient administration. One third of the vast bureaucracy of some 4 lakh people is sitting practically ide and the remaining 2:3 is not inspired by any sense of mission or purpose iln as much as it receives no guidance from the top.....Two of the reasons for this inefficiency can be traced to the lack of determination on the part of the Government to enforce correct standards of administrative integrity and efficiency... ....There is no attempt on the part of the political leadership to diagnose the malaise from which the State is suffering."

मैं कोई मुख्य प्रशंसा की बात नहीं कहता। मैं आपको संक्षेप में बताता हूं जो माननीय चरणसिंह जी ने कहा है। मैं उनकी बुद्धिमत्ता का सदैव हामी रहा हूं। हम लोग आज इस राजकीय सरकार की अकुशलता से किस प्रकार बीमार हैं उसमें जो नौकरशाही है चार लाख की उसमें से एक तिहाई तो चुपचाप बैठे हैं। वे काम नहीं करते। दो तिहाई के पास कोई प्रेरणा नहीं है कि वे काम कर सकें और न वे ऊपर से प्रेरणा पाते हैं और न कोई प्रेरित करता है कि काम करो और इनकी अकुशलता और अयोग्यता का कारण यह है कि हमारी सरकार का कोई इरादा नहीं कि हमारी जो प्लान्स हैं उनको हम एन्फोर्स करें। मैं बल देकर कहता हूं कि इस प्रशासन का स्तर और इसकी ईमानदारी और कुशलता बहुत गिरी गई है। यह हमारी राजनीतिक लीडर शिप है। यह नहीं करते कि देखें कि मर्ज क्या है और कहां है। मैं समझता हूं कि ऐसे लोग जनता की सेवा कर सकते हैं जो निर्भय हो कर जन-समाज के सामने अपने विचार

रक्खें। मैं श्रीमन्, यह इसलिये कह रहा था कि आप वकील रह चुके हैं। जब किसी के सामन कोई बात रक्खी जाती है तो प्रमाण दिया जाता है। जब रैंक ऐन्ड फाइल से ही एफीशियेन्सी आ जाय तो मुझे कहने की जरूरत नहीं। मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि ये आपस में लड़ते हैं और कहते हैं कि हमें फुर्सत नहीं। इनको जरा पूछिये कि कितनी बार अपने पैसे से ये दिल्ली गये। यह छोटी बात नहीं है। हम भी जाते हैं। परन्तु किसी भी गलत बात को सही नहीं कहा जा सकता है। आप कितनी बार पब्लिक काज के लिये गये, अपनी पार्टी के काज के लिये गये। आज यह पब्लिक का रुपया आरोप प्रत्यारोप के लिये खर्च हो रहा है। संसार के परदे पर आपने देखा कि आज अपनी चीज के पेश करने के लिये पब्लिक के रुपये के आधार पर जाया जाता है। अपनी पार्टी के प्रोपेगेन्डा के लिये पब्लिक के रुपये को खर्च करके जाते हैं। नाना प्रकार के प्रोग्राम बनाये जाते हैं, आपने कभी सोचा ?

दूसरी बात आपको टाईम नहीं था, नोटिस नहीं हुआ। पहले दिन जब असेम्बली आई टल गया कि इसका नोटिस नहीं। इनको कहां टाइम। ये तो बेकार के पचड़े में फंसे हुये हैं। इनको पब्लिक से कुछ मतलब नहीं। इनको पैसा मिल जाना चाहिये पब्लिक के काम से कोई मतलब नहीं। हाउसिंग ऐक्ट आया, इसलिये पोस्टपोन हो गया कि नोटिस नहीं दिया। दूसरे दिन आया तो मिनिस्टर मौजूद नहीं। तीसरे दिन आया तो इस पर झगड़ा हो गया कि डिप्टी मिनिस्टर को क्यों इजाजत नहीं दी। टैक्नीकल चीज दूसरी है और योग्यता पर बात रखना दूसरी है। लेकिन आपने कौनसी अपनी रिस्पान्सिबिलिटी निबाही। आपने क्यों नहीं किया ? ज्वाइंट रिस्पान्सिबिलिटी में यह चीज रहती नहीं और एक आदमी को दोष नहीं। नतीजा इसका क्या हुआ कि ब्यूरोक्रेसी छूटकर खेल रही है। मैं यह दावे के साथ कहना चाहता हूं कि ब्यूरोक्रेसी की हालत यह है कि मिनिस्टरों की ओर देखें तो अमुक मिनिस्टर का एक गोल है तो उनकी ब्यूरोक्रेसी अपनी ही है दूसरे मिनिस्टर की ओर देखें तो उनका दूसरा ही गोल है। इनको तो अपने गोल से मतलब है, अपनी पार्टी से मतलब है, पब्लिक से मतलब नहीं। तो मैं यह कह रहा था कि आज इनकी यह स्थिति है। मैं सच कहता हूं कि चाहे आप जुडीशियरी लीजिये चाहे आप लेजिस्लेचर लीजिये किधर किधर जांय। एक मर्तबा मैं यह कह रहा था कि दर्द किधर होता है, एक जगह हो तो बताऊं किधर होता है।

हमारे ऊपर इल्जाम लगाया जाता है, भगवान कल्याण करे इस देश का। पोलिटिकल प्रेशर की हद हो गई है। मैं यह बताता हूं कि ट्रांसफर्स, प्रमोशन, मैरिट के आधार पर नहीं होते हैं। एक मामूली आदमी टैरीलीन की कमीज पहनता है। वह कहता है कि ईमानदारी को हम चाटें, उसकी पोजीशन है। कांग्रेसी एम०एल०ए० उसके साथ हैं। जवानों की आप बात करते हैं। जवान सोचते हैं कि उनका बाप मजे में है, उनके बच्चे मजे में हैं और सब शान्ति है। हमारे पीछे जनता है तो इस तरह फौजी जनता के जीवन के साथ यह छूट कर खेल रहे हैं। और कहते हैं कि हम अविश्वास का प्रस्ताव न लायें। हम से आप चाहते हैं कि हम मन को दबाये बैठे रहें और आप करोड़पति हो जायं।

अभी एक अभियान चला जिसमें लाखों कांग्रेस के सदस्य बनाये गये। इसमें क्या हुआ ? ए० डी० ओ० को रसीद बही दे दी गयी कि मेम्बर बनाओ और नहीं बनाया तो नाराज हो गये। मैं नाम तो किसी का नहीं लूंगा, लेकिन एक दरोगा को आपने दिया और वह आपके लिये मेम्बर बनाता फिर रहा है। चार आने का मेम्बर। इसके लिये मैं माननीय कृपालानी जी को चेलेंज करता हूं। इस से पहले भी मैंने कहा कि हमारे यहां के जिस बी० डी० ओ० ने इलेक्शन में काम किया है, उसको बदल दिया जाय लेकिन आज तक कुछ नहीं हुआ। इस प्रकार से आफीशियल्स से आपने मेम्बर बनाने का काम किया। एक दल ने नहीं, दोनों दलों ने दूसरे दल की क्या कहूं। अगर उसमें ईमानदारी होती तो वे इस समय हमारे साथ होते लेकिन इस प्रकार से डेमोक्रेसी का मजाक उड़ाया जा रहा है। बताइये जब आपके यहां ऐसा अंधेर है और आप सुनते नहीं हैं तो हम क्या करें ? उसको बताने के लिये ही हम सदन के सामने रो रहे हैं और फिर हमको ऐसे शब्दों के द्वारा पुकारा जाता है और कहा जाता है कि हम उस प्रकार के विशेषण के अधिकारी थे।

[श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी]

एक व्यक्ति एम०एन०ए० होना चाहता था। वह फैजाबाद से चला और आखिर में वह बोर्ड आफ रेवेन्यू में हो गया। अनेक मिसालें मेरे पास हैं, लेकिन इन सबके बारे में मैं क्या कहूं। के० के० शर्मा और मि० नागर के ट्रांसफर के बारे में कई बार कहा गया। डेढ़ वर्ष में कितने ट्रांसफर हुये? कई बार मंत्रियों से कहा गया, लेकिन कोई सुनने के लिये तैयार नहीं है। माननीय हुकुम सिंह जी से कहिये तो वे हंस कर उड़ा देंगे। तो फिर आपसे किस रूप से कहें। दिल को कराह हम कहां और कैसे निकालें। चारों तरफ भ्रष्टाचार और बेईमानी हो रही है, सारे तालाब को गन्दा कर दिया है। यह मैं मानता हूं कि इस परिस्थिति में सब ओर अमन और शान्ति रहे। वार टाइम में हमें बहुत से कानून भी बनाने होंगे। लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि पिछले अविश्वास के प्रस्ताव के बाद इंटरनल अशान्ति कहां हुई? कदाचित इलाहाबाद में माननीय मुख्य मंत्री ने कहा कि अपराध की स्थिति को हम सम्भाल नहीं पा रहे हैं, वह हमारे काबू के बाहर की होती जा रही है। फर्रुखाबाद में भी अपनी असमर्थता बताई। अब जरा इंटरनल सिक्योरिटी की ओर देख लीजिये। पाकिस्तान ने हमला किया और आज उनको यह नया इलहाम हुआ। पाकिस्तान के हमलों की बात हम लोग बहुत पहले ही कहा करते थे। लेकिन केवल इस वक्त जा कर आपने सही कदम उठाया है। मुख्य मंत्री जी ने मई के महीने में कहा था कि कई लाख पाकिस्तानी यू०पी० में अवैध रूप से आये हुये हैं। लेकिन उसके बाद शान्ति प्रसाद जी, आई० जी० ने कहा कि हमने १०० पाकिस्तानियों को पकड़ लिया है। लाखों में १०० को पकड़ लेना कितनी कार्यकुशलता और योग्यता की बात है। लेकिन जो कार्यकुशलता दिखायी जाती है वह दिखाई जाती है दूसरी पार्टी वालों को पकड़ने में। मेम्बरों को कहा जायगा कि जरा बाहर निकलो तो देख लेंगे। इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि यह सरकार इंटरनल सुरक्षा में भी असफल रही है।

आपकी सी० आई० डी० भी है, लेकिन उससे भी उचित स्थानों पर काम नहीं लिया जाता है। उतरौलिया में विस्फोट हुआ और वहां भी वही कम्पनी पायी गई जो लखनऊ में पकड़ी गयी थी। बदायूं में, नौगढ़, जिला बस्ती में हुआ, बरेली में हुआ, सब जगह विस्फोट होते हैं और कहते हैं कि हम सिक्योरिटी खूब संभाल रहे हैं। वह जनता का सहयोग चाहते हैं और स्वयं कहते हैं कि हम असहाय हैं। अगर वह असमर्थ हैं तो आप बगल होइये, कुर्सी छोड़िये, उससे चिपटे न रहिये जैसे कि खाद्य मंत्री जी भी चिपटे हैं। अनेक बार आपको जनता देख चुकी है। एक शाहजहांपुर के सदस्य के खिलाफ सी० आई० डी० की रिपोर्ट है, आजमगढ़ के एम०एल०ए० के खिलाफ भी सी० आई० डी० की रिपोर्ट है, लकिन आज तक सदन के सामने कोई चीज नहीं आई और कोई कार्यवाही नहीं की गई आपने उनके खिलाफ क्या किया, आप कब तक इस तरह से सारे प्रदेश को धोखा देते रहेंगे? एक कैंसर को आप पहले पालते रहे और उसका नतीजा यह हुआ कि आपने पाकिस्तान बना दिया और अब भी आप इस तरह से सोते हैं। आप कहते हैं कि हम आन्तरिक सुरक्षा संभाले हैं। आंतरिक सुरक्षा का हाल यह है कि चीनी सैनिक माना दर्रे में चले आये और आपको उसकी खबर नहीं। वह कहते हैं कि हर साल मर्डर्स का एक्चिटल आंकड़ा होता है इसलिये डकैती और वारदातें बढ़ती हैं, लेकिन आप साथ ही पुलिस के कार्य को बहुत बढ़िया बताते हैं। आपके सामने प्रश्न आये डाके में पुलिस के लोग पकड़े जाते हैं, मैं कोई खराब वाक्य इस्तेमाल नहीं करूंगा और केवल इतना ही कहूंगा कि जो जिसका भोजन हो उसी पर उसकी रखवाली पर रखने वाली बात है। मंत्री जी अपनी इस पुलिस पर गर्व करते हैं। आज मंत्री जी की स्थिति तो ऐसी है कि यदि स्वयं कोई हरिश्चन्द्र बनकर भी विरोधी दल वाले कुछ कहें तो वह उसको मानने के लिये तैयार नहीं हैं। वह तो केवल इतना चाहते हैं कि सब लोग सरकार में विश्वास करते रहें, हमारे पास भी दिल है, हमारा दिल भी घटनाओं के दुख दर्द को देखकर पसीजता है। आपसे कैसी भी सही बात कही जाय आपको विश्वास नहीं होता, लेकिन आप चाहते हैं कि जनता हमेशा आपको विश्वास पात्र बनी रहे, लेकिन जनता के कष्ट को आप नहीं समझेंगे, न समझें, उसको भगवान अवश्य समझेंगे।

गोरखपुर की फायरिंग हुई, ४ सदस्य वहां गये और सबके सामने यादव जी ने वहां की पूरी दशा सुनाई लेकिन आपने जांच की कोई बात नहीं कही। अभी कौंसिल में माननीय पीताम्बर दास जी ने कहा कि एक साहब नरही में भैया जी नाम के पीटे गये, उस पर उनसे कहा गया कि आप जाओगे तो आप भी पीटे जायेंगे भावनायें व्याप्त करने में क्या लगता है? गृह मंत्री जी भगवान की कुदृष्टि से मंत्री भी नहीं हुये, पीछे के दरवाजे से यहां आ गये, लेकिन आप मंत्री होने के योग्य थे, बने, विचार और व्यवहार से तो आप इस योग्य थे नहीं। कभी भी आज तक उन्होंने विरोधी दल की किसी बात को सम्मान नहीं दिया। ६-६ प्रार्थना पत्र दिये गये कि श्री शर्मा जौनपूर से बदले जाय, लेकिन उनको नहीं बदला गया। ज्वाइंट जिम्मेदारी है, एक मंत्री कुछ कहता है, मुख्य मंत्री दूसरी बात कहते हैं, एक ग्रुप दूसरे पर अन्यान्याश्रित है। वह कहते हैं कि अविश्वास का प्रस्ताव इस समय न लाओ, यह हमारे साथ अन्याय है, लेकिन हम कहते हैं कि बराबर हमारे साथ हमारी आत्मा के साथ अन्याय होता है, आज सारी जनता खिलाफ है और कोई परवाह सरकार किसी के कुछ भी कहने की नहीं करती।

यह तो मैंने इंटरनल सिक्योरिटी के बारे में कहा। दूसरी बात मैं कहना चाहता था फूड सिचुएशन के बारे में। इस पर बहस हो चुकी है और जो कहा जा चुका है वह पर्याप्त है, केवल मंत्री जी से मैं इतना कहूंगा कि उन्होंने भी माननीय गृह मंत्री जी की तरह अपनी एक आदत सी बना ली है कि इधर से कोई कुछ भी कहे विश्वास न करो, जवाब भी अब बड़े उछल कर उत्तर देते हैं। कई बार हमने उनको पत्र लिखा, लेकिन हमारे पत्र का जिस आदर के साथ उन्होंने उत्तर दिया वह मैं जानता हूं। उसके लिये मैं क्या कहूं वह दिल में समझने के लिये रहने दिया जाय। उनके आर्डर के खिलाफ सप्लाई अफसर एक एक जगह मुद्दतों से डटे हुये हैं, गलत इंटरप्रिटेशन उनके आदेशों के हो रहे हैं। पब्लिक लूटी जा रही है उसके पास पैसा भी नहीं है, अन्न भी नहीं है। फूड सिचुएशन के बारे में मैं और अधिक मैं नहीं कहूंगा।

एडमिनिस्ट्रेशन के बारे में मैं कहना चाहता हूं कि यह बिलकुल खराब है, इनएफिशियेंट है और उसके हृदय में जन सेवा की भावना नहीं है। यहां से बदल कर इलाहाबाद चले गये। फर्क कुछ नहीं पड़ता है। कहते हैं कि हमारे माननीय मंत्री जी जिन्दा रहें हमारा क्या बिगड़ सकता है। आपको चाहिये कि प्रदेश में सुरक्षा बनाये रखें, जिससे जवान जो मोर्चे पर डटा हुआ है अपने को मजबूत महसूस करे। इसलिये मैं आपसे सच कहता हूं कि इन बातों पर आपको विचार करना चाहिये। देहात में जाता हूं तो वहां पर ब्रांचेज को देखता हूं। कम्युनिटी डेवलपमेंट, ब्लाक डेवलपमेंट और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को छोड़ दीजिये। जब सारा प्रान्त लुट गया, अध्यापकों की नियुक्ति में लुट गया तब आप प्रदेश में अध्यादेश लायें मैं समझता था कि पुनर्वास शब्द जमींदारी एबोलिशन में आया, लेकिन अब यह एक राजनीतिक पार्टी को रिहैबिलिटेट किया जा रहा है। उनके जितने भी पुराने आदमी हैं, जो मंत्री, उप मंत्री या पार्लियामेंटरी सेक्रटरी नहीं बन सके हैं, उनकी एक तालिका बना कर देखिये। आप देखेंगे कि आज सारे प्रान्त में उन्होंने उनको रिहैबिलिटेट किया, तो हम क्या समझें कि दुनिया में और कोई योग्य नहीं रहा? सारी जनता समझती है कि ये अपने दल को पनपाते हैं। ये पब्लिक की चिन्ता नहीं करते हैं। मेरा व्यक्तिगत विरोध नहीं है। कांग्रेस पार्टी ने एक नया चरण निकाल दिया है, रिहैबिलिटेशन का। आचार्य जुगल किशोर, चेयरमैन गोल्डस्मिथ और रिहैबिलिटेशन और इवैल्युएशन इंक्वायरी कमेटी के हो गये हैं। माननीया प्रकाशवती जी इवैल्यूशन प्लान की क्या हो गई हैं, हमारे मंगलाप्रसाद जी चेयरमैन स्पोर्ट्स एसोसियेसन और बद्रीनाथ टैम्पिल कमेटी के हो गये हैं और माननीय रऊफ जाफरी यू०पी० कोआपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन के कुछ हो गये हैं। श्रीमन्, ये तो खिचड़ी के दो एक चावल हैं। मेरे पास एक लम्बी लिस्ट है ऐसे-ऐसे व्यक्तियों की। मैं किसी पर व्यक्तिगत आक्रमण करना नहीं चाहता हूं, लेकिन आज मैं कसौटी पर खड़ा हुआ हूं। मैं पूछना चाहता हूं कि प्रदेश की जनता तुमसे क्या कहेगी, तुम सुनना क्या चाहते हो? मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि अब यह परिस्थिति है और मैं यह चाहता हूं कि सारी यू० पी० की पब्लिक सोचे कि उन्होंने अपने भाईबन्दी और कुनबापरस्ती का धंधा बना रखा है। वह यह भी सोचे कि जो पिछड़े लोग हैं, गरीब हैं जो निर्धन हैं उनको कोई काम नहीं

[श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी]

मिलता है। इन सबकी सूची मेरे पास है उनके नाम नहीं लेता हूं क्योंकि भगवान का अगर नाम लेता तो कुछ हो भी जाता। एक बात मैं यह भी कहना चाहता था कि हमारी सरकार अपने कर्तव्य का पालन क्या करती है। मैं कुछ लेजिस्लेटिव वर्क्स की तरफ इशारा करना चाहता हूं। एग्जीक्यूटिव इज रेस्पांसिबिल फार आफ आफ दि फेल्योर। पुलिस की बात तो कुछ पूछिये नहीं। कल आप बिगड़ गये जब मैंने कहा कि आ गये। आ गये पर तो आप इतना बिगड़ गये लेकिन आज हमारे लिये जो शब्द इस्तेमाल किये गये उनको श्रीमन्, वापस कराने में आपने क्या किया यह भी सदन ने देखा। इसलिये मैं कहता हूं कि मेरी आवाज केवल आप तक है, यदि आप रक्षा नहीं करते तो यह भी मैं नहीं कह सकता। आप लाल बत्ती जला दें और मेरा कहना समाप्त हो सकता है। आप मेरे हित की रक्षा करें, मैं कुछ लेप्सेज की बात कर रहा हूं।

प्रीवेंशन आफ डिस्सीपेशन हिन्दू रिलीजस ऐन्डाउमेंट प्रापर्टी एक्ट बनाया चार वर्ष पहले लाखों रुपया उनसे सम्बन्धित संयुक्त प्रवर समिति पर खर्च हुआ, खूब लोग घूमें, ऐक्ट ऐक्सपायर कर गया तो एक्ट की अवधि बढा दी, लेकिन रूल्स आज तक नहीं बने। उनको फुर्सत नहीं मिली, क्या करें घर में झगड़े के कारण। ऐक्ट कंट्रोल ऐंड इविक्शन आर्डर इतना डिफेक्टिव है कि ढेर लग गया हाई कोर्ट की रूलिंग का। गवर्नर साहब तक के ऐड्रेस में कहा गया था कि एक ऐग्जास्टिव रेंट कंट्रोल ऐक्ट ला रहे हैं, मगर अभी तक लाने का अवसर नहीं मिला। दूसरी बात कह रहा हूं हिन्दी के बारे में, मुझे क्षमा करेंगे, कुछ बातों से मेरी ऐसी भावना हो गयी है कि माननीय मुख्य मंत्री बड़ी पवित्र भावना में कह देती हैं कि हिन्दी में काम होगा, लेकिन खुद कितना करती हैं तो मैं उस अनुपात में बहुत कम पाता हूं। इसलिये मैं कहना चाहता हूं राजभाषा कानून आदि बना लेने से ही हिन्दी में काम नहीं होने लगेगा। आप देखें कि आज भी जिलों में जितने सर्कुलर्स जाते हैं सब अंग्रेजी में जाते हैं, सचिवालय में भी सारा काम अंग्रेजी में चल रहा है। मैं तो यह नहीं समझ पाता कि जो गद्दी पर हैं उनको अंग्रेजी से इतना प्रेम क्यों है? जाहिर है कि जिसको जिससे प्रेम होता है उसमें ही वह काम करता है। हमारे मुख्य मंत्री अंग्रेजी में ही दस्तखत करती हैं। हमारे चीफ सेक्रेटरी साहब जो हैं उनसे दो बार अप्वाइंटमेंट किया लेकिन भेंट नहीं हुई। चीफ सेक्रेटरी साहब हमारे हिन्दी नहीं जानते हैं, मगर सारे प्रान्त का कार्य संचालन करते हैं। जितने सचिव हैं जो परिपत्र भेजते हैं आप मालूम करें कि कितने हिन्दी जानते हैं। कोई हिन्दी ट्रांसलेटर है जिनका नाम श्री बागची है जो दसवीं तक पढ़े हैं, हिन्दी नहीं जानते मगर हिन्दी में अनुवाद का काम करते हैं।

ट्रिपिल बेनिफिट स्कीम चलायी शिक्षकों के लिये, लेकिन अभी तक रूल्स नहीं बने। अरे इंजीनियर आप में विश्वास नहीं रखते हैं, अध्यापक विश्वास नहीं रखते हैं, पे स्केल्स जो बनाये हैं उनसे कर्मचारी असंतुष्ट हैं, जनता विश्वास नहीं रखती। विरोधी दल का विश्वास रखने का तो कोई कारण ही नहीं है। आप बतायें फिर कैसे सरकार पर विश्वास हो? इनके और पुराने, जो अंग्रेजों का एडमिनिस्ट्रेशन था, उसमें कोई फर्क नहीं है। आप श्रीमन्, ताईद करेंगे कि ढांचा कोई बदला नहीं है। इतना ही नहीं गिरावट हुई है, उस वक्त की सर्विसेज की जो धारणा थी उनमें जो क्लीनलीनेस थी वह भी गायब हो गयी है। यह जनहित में कुछ नहीं सोचते। फेमिन रिलीफ ऐक्ट आज तक तैयार नहीं हुआ। अंग्रेजों ने काश्तकारों की जो भलाई सोची थी वही हुकुमसिंह ने सोची और कोई फर्क नहीं सोचा। शराब वही बोतल बदल गई। जिस पहलू पर चलिए अंग्रेजों का नक्शा बैठा हुआ है। कहते हैं कि हम बड़ा कल्याणकारी राज्य कायम कर रहे हैं किसानों के लिए। ४९ पैसे में एक पैसा कम क्षति हो जाय तो राहत देने का नाम नहीं। रिपोर्ट आ गयी कि ६० फीसदी क्षति हुई है। मुझे एक कलेक्टर ने बुलाया, नाम उसका नहीं लूंगा, तो वह रिपोर्ट वापस चली जाती है कि ४५ फीसदी कर दो क्योंकि छूट देनी होगी। यह इतना कल्याणकारी राज्य है। अगर ४० परसेन्ट क्षति होती है गरीब जनता की तो ४० परसेन्ट राहत दीजिए, १० परसेन्ट क्षति होती है

तो १० परसेन्ट राहत दीजिए। हम कहेंगे तो हमको तो गैर जिम्मेदार करार दिया जायगा, लेकिन जनता कहती है कि कितनी लूटमार मची हुई है। बस्ती जिले का नक्शा आपके सामने है। इतनी बातें हैं जिनका कोई वार पार नहीं। जनता से मैं पूछना चाहता हूं कि यह सरकार आज इन परिस्थितियों में राज्य कर रही है जब कि उधर लड़ाई हो रही है। हमारे मरने मिटने का प्रश्न है। हमने अपनी माता के भाल को समझा है। आज हमारी मां पर हमला हुआ है। आज उसे नोचा जा रहा है। सारे देश में हलचल मची हुई है। मां बहिनों ने अपने आभूषण, श्रंगार के सामान उतार कर देना शुरू कर दिया। मां की लाज रखने का सवाल आज हम सबके सामने है। इसके अलावा ऐसे ही परिवारों के लोग मैदान में लड़ रहे हैं। उनके परिवार के लोगों के जीवन को सम्भालने की जो बागडोर इस सरकार के हाथ में है क्या वह उसे सम्भाल सकती है? वकील की तरह तर्क दे दें, हमारी बातों का आप जवाब दे दें यह और बात है जैसे माननीय हरगोविन्द सिंह दे दिया करते हैं। विरोधी दल का एक-एक व्यक्ति अपने अनुभव के आधार पर आपसे कहता है और सरकारी अधिकारियों से कहता है कि इस तरह से राज काज चलने वाला नहीं है। (कुछ लोगों के हंसने पर) फिर आप हंसते हैं। माननीय सदस्य हंस रहे थे जिस समय हम पर विशेषण इस्तेमाल किया गया कि हम जयचन्द हैं। मैं भी उस हंसी को देख रहा था। हंसी कई प्रकार की होती है। जब कोई सुखी होता है तो हंसता है। अट्टहास की हंसी होती है जब कोई रौद्र रूप धारण करता है। जब कोई किसी पर कटाक्ष करता है तब हंसता है। हमारे ऊपर कोई बात कह दी, जयचन्द का विशेषण इस्तेमाल कर दिया और हंसने लगे। मैं अपने दल की ओर से कहता हूं कि मां के सामने हम अपना मस्तिष्क हमेशा झुकायेंगे। जीवन के जितने मूल्य हैं उनको हमारी मां ने हमको दिया, इसी भूमि ने हमको दिया; महापुरुषों को पैदा किया और उस पर हम गर्व करते हैं। उसके लिए हम अपने सर्वस्व को निछावर करेंगे और कुछ बचा नहीं रखेंगे। क्यों आपको विश्वास नहीं होता, क्यों दिल काला है? "जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरत देखी तिन तैसी"। आप इन बातों को सोचें। मन इन भावनाओं से ओतप्रोत होकर सच्चे मित्र के नाते अवगुणों को आपके सामने रखा है और मैं एक शब्द आपके सामने रखता हूं कि भगवान के लिए आप छोड़ कर चले जाइए, जो होगा वह देखा जायगा। यह मत सोचिए कि आप चले जायेंगे तो हम इस परिस्थिति से निकल नहीं सकते हैं। बहुत से लोग चले गए। यह नहीं हो सकता है कि आपका मन्त्रिमण्डल नहीं रहेगा तो कौन सम्भालेगा? नियम हैं, कानून हैं, और लोग सम्भालेंगे। अब ज्यादा गुंजायश नहीं है। ईडिन जैसे आदमी मामूली सी गलती पर चले गए, चैम्बरलैन मामूली गलती पर चले गए। लेकिन आपकी पहाड़ जैसी गलतियों के बाद भी हमने आपको अपनी छाती पर रखा, इसलिए कि आप भी माता के लाडले हैं। हम तो आपको रास्ता दिखाते हैं तो आप हमें दुश्मन की तरह सम्बोधित करते हैं।

दूसरी बात यह कि माननीय हुकुम सिंह जो इतने वरिष्ठ मन्त्री बैठे हैं उनके मुंह से आवाज नहीं निकली। उनके दिल में खुशी हो रही थी कि दुश्मन को खूब कहा। सब लोग हंस रहे थे कि दुश्मन को खूब कहा। लेकिन मैं यहां खड़े हो कर कहता हूं कि हम चाहे लड़ लें, लेकिन समय पड़ने पर आपको रास्ता बतायेंगे। अगर अच्छा रास्ता हो तो आप उस पर चलिए।

माल मन्त्री (श्री हुकुमसिंह विसेन)—

हम थे कहां?

श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी—

अगर हमारा बताया रास्ता गलत हो तो उसको मत अपनाइए। प्रमाण से जो चीज ठीक मालूम होती हो उसको कीजिए। खुश मत होइए। माननीय हुकुम सिंह जी कहने के आदी हैं कि बड़ी देर से हम कलेजे पर पत्थर लगाए सुन रहे थे। लेकिन विरोधी दलों ने सुना ही नहीं है, सहा भी है और उनके समर्थकों ने भी सहा है। लेकिन श्रीमन्, इसकी भी कोई सीमा होती है। आपका हमारे ऊपर विश्वास नहीं है। आप हमको डकैती या किसी भी चीज

[श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी]

में फंसा सकते हैं। अगर हम एस० पी० के खिलाफ कुछ कहें तो आप कह देंगे कि झूठ बोलते हैं यानी मेरे कहने का मतलब यह है कि आप हमारी बात को मानेंगे नहीं। आप तो उनकी ही बात मानेंगे जिनकी वजह से शासन चल रहा है। हम कहते हैं कि भगवान के लिए आप सत्ता छोड़िए भगवान जैसा करेंगे वैसा होगा। आप तो जाइए।

(इस समय १ बजकर ३६ मिनट पर अधिष्ठाता, श्री जगदीशप्रसाद, (मुरादाबाद) पीठासीन हुए।

श्री नवलकिशोर (जिला बरेली)—

अधिष्ठाता महोदय, जब सारे देश का वातावरण इतना गम्भीर है और आज राष्ट्रीय संकट हमारे सामने है और आपत्तिकालीन स्थिति है, ऐसे मौके पर माननीय नेता विरोधी दल ने यह उचित समझा कि मन्त्रि मण्डल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव लाए। मान्यवर, आज ही नहीं बल्कि १३, १४ साल से न जाने कितने अविश्वास के प्रस्ताव इस मन्त्रि मण्डल के सामने आए। मैं उन लोगों में से हूं जो इस बात को मानते हैं कि विरोधी दल का यह अधिकार है कि वह जब चाहे तब अविश्वास का प्रस्ताव सरकार के विरुद्ध ला सकता है और मेरा यह भी विश्वास है कि अगर विरोधी दल मन्त्रिमण्डल को हटा नहीं सकता है तब भी उसे सेन्सर करने का अधिकार है और उसके लिये यह भी एक तरीका है। लेकिन माननीय त्रिपाठी जी क्षमा करेंगे यदि मैं कहूं कि मुझे खेद हुआ कि आज विशेष परिस्थिति के होते हुए भी जिसका उन्होंने भी अहसास किया है, फिर भी उन्होंने मुनासिब समझा कि अविश्वास का प्रस्ताव लायें। मान्यवर, आज जब हमारे पास खबर आई है कि पाकिस्तान ने हमारे ईस्टर्न सेक्टर पर बाम्बिंग शुरू कर दी है। कलकत्ता के पास (कलकुन्दा) में भी बाम्बिंग की खबर आई है। जब चारों तरफ से महायुद्ध का वातावरण हमारे सामने है और ऐसे मौके पर यह वातावरण पैदा किया जाय कि उनका सरकार के ऊपर विश्वास नहीं है ठीक नहीं है। मैं मान सकता हूं कि हम बहुत जमाने से आमने-सामने बैठते हैं, सरकार हमारी गलतियां कर सकती है। उसे हजारों काम करने होते हैं और अगर ५ फीसदी भी गलती हो तो हजार में ५० गलतियां हो जाती है। लेकिन कभी-कभी राष्ट्रीय संकट के समय ऐसे मौके आते हैं जबकि सरकारी पक्ष तथा विरोधी पक्ष दोनों को आपस में मिल कर काम करना पड़ता है। मुझे विरोधी पक्ष के अधिकार पर कोई आपत्ति नहीं है मगर उस अधिकार का गलत समय पर इस्तेमाल करना विरोधी पक्ष का एक मखौल सा हो जाता है, उसकी गम्भीरता व पवित्रता अपनी जगह पर समाप्त हो जाती है। मुझे इस बात की खुशी है कि माननीय नेता विरोधी दल ने अपनी यह भावना शुरू में ही व्यक्त थी कि इस संकटकालीन स्थिति में वह इस देश के उन बहादुर नौजवानों को बधाई देते हैं जिन्होंने अपनी भारत माता की रक्षा के लिए अपना सब कुछ लुटा रखा है। मुझे खुशी है कि आज सारे देश की एक ही भावना है और उसको उन्होंने व्यक्त किया है। उन्होंने यह भी कहा कि केन्द्रीय सरकार को मैं इस बात के लिए बधाई देता हूं कि उन्होंने कश्मीर के मसले पर एक सख्त और अमली कदम उठाया है। परन्तु केन्द्रीय सरकार के अन्तर्गत बैठ कर ही प्रादेशिक सरकारें तमाम देश का शासन चलाती हैं। आप केन्द्रीय सरकार में विश्वास करें और प्रादेशिक सरकार में अविश्वास करें, ये दोनों बातें अपनी जगह पर मेल नहीं खाती हैं।

(व्यवधान)

मान्यवर, कितनी छोटी-छोटी बातें उठायी गयी हैं। माननीय त्रिपाठी जी ने कहा कि यह बड़े दुख और खेद की बात है कि आज अविश्वास के प्रस्ताव के समय मुख्य मन्त्री यहां मौजूद नहीं हैं। वे जानते हैं कि इस राष्ट्रीय संकट के समय प्रधान मन्त्री ने एन० डी० सी० की मीटिंग बुलायी है और उस सिलसिले में तमाम मुख्य मन्त्रियों को भी बुलाया है ताकि उनके सहयोग से केन्द्रीय सरकार देश की रक्षा के लिए समुचित व्यवस्था कर सके। आज उत्तर प्रदेश की मुख्य मन्त्री भी वहीं गयी हैं, कोई तफरीह के लिए वे दिल्ली नहीं गयी हैं। जहां तक केन्द्र के विरोधी पक्ष की बात है, उन सबने वहां खड़े होकर प्रधान मन्त्री से कहा है कि हम सभी देश की रक्षा में अपना खून

तक बहाने को तैयार हैं, लेकिन यहां का विरोधी पक्ष कोई न कोई बहाना लेकर इस प्रकार की मांग करता है कि उसका इस सरकार में विश्वास नहीं है। मैं आपसे अपील करता हूं कि माननीय टम्बेश्वरप्रसाद जी....

श्री टम्बेश्वर प्रसाद—

उन्होंने कहा कि देश की रक्षा के लिये सरकार जो भी कदम उठाएगी उसमें हम सरकार के बिलकुल साथ हैं।

श्री नवलकिशोर—

माननीय टम्बेश्वरप्रसाद जी, एक तरफ तो आप कहें कि अपने देश की रक्षा के लिए हम अपना खून देने को तैयार हैं और दूसरी तरफ आप उसी क्षण खड़े होकर यह कहें कि तमाम काम जो उत्तर प्रदेश की सरकार ने किया है या कर रही है उसमें हमें अविश्वास है। तो ये दोनों विरोधी बातें हैं। देश की रक्षा के लिए यही आवश्यक नहीं है कि केवल खून ही बहाया जाय या खून दिया जाय, बल्कि देश की रक्षा के लिए यह भी आवश्यक है कि देश का आर्थिक विकास हो, अधिक से अधिक प्रोडक्शन हो, औद्योगीकरण हो और तमाम योजनायें साथ-साथ चलती रहें, तभी देश का स्तर ऊंचा हो सकता है। रक्षा के माने केवल खून देने या चन्दा इकट्ठा करना ही नहीं होता है। इसके लिए आवश्यक है कि जितने हमारे आपसी मतभेद हों वे दूर कर हम सब मिल कर एक साथ काम करें।

जहां तक चैम्बरलेन का नाम उन्होंने लिया कि ऐसे मौके पर उनको भी गद्दी छोड़नी पड़ी थी, उस सम्बन्ध में मेरा निवेदन यह है कि उनको हटाया नहीं गया था, बल्कि उनकी पार्टी ने ही तय किया था कि इस स्थिति में वे राष्ट्र का नेतृत्व नहीं कर सकते हैं और तब वे हटे थे और चर्चिल आए थे।

मान्यवर, उन्होंने यह भी कहा कि हममें आपस में गुटबन्दी है। मान्यवर, जिस पार्टी के तमाम प्रदेशों में शासन हो तथा केन्द्र में शासन हो तथा जिसका देश में संघीय शासन हो, उसमें यदि कोई मतभेद हो तो यह कोई ताज्जुब की और आपत्ति की बात नहीं है। इस प्रकार के छोटे-छोटे मतभेद होना स्वभाविक ही है, जहां पर विचारों की स्वतन्त्रता होती है, वहां पर मतभेद हुआ ही करते हैं। मैं विरोधी पक्ष के नेता से पूछना चाहता हूं कि क्या उनको सभी विरोध पक्षों का विश्वास प्राप्त है? नहीं, आपके विरोध पक्ष में भी तरह-तरह के मतभेद हैं। विरोध पक्ष इसी लिए बना हुआ है कि पार्टियों के अन्दर पार्टियां बनी हुई हैं। तो इस तरह की बातें कहने से काम नहीं चलता है। मैं इस बात को छिपाता नहीं हूं कि इसमें मदतभेद है, किन्तु कितने ही मतभेद हों ये आपसी मतभेद हैं, उनका फायदा आप नहीं उठा सकते। आप तो इस धोखे में आ गए कि इन मतभेदों का फायदा उठाकर अविश्वास का प्रस्ताव उपस्थित कर दें। किन्तु आप निश्चिन्त रहें, आपका इससे कोई फायदा होने वाला नहीं है। आपने हमारे कांग्रेस के प्रदेशीय अध्यक्ष माननीय कमलापति त्रिपाठी का कल अखबारों में बयान नहीं पढ़ा, उन्होंने तमाम प्रदेश के कांग्रेसियों और प्रदेशवासियों का आह्वान किया है कि वह सारे मतभेद भुलाकर देश की रक्षा के लिए एक गुट होकर खड़े हो जायें। आपने वह भी नहीं पढ़ा, जो कांग्रेस पार्टी के मुस्लिम साथी थे, उन्होंने एक स्वर से यह प्रस्ताव पास किया है कि हम खून की एक-एक बूंद रहते देश की रक्षा करेंगे और हिन्दुस्तान की रक्षा के लिए अपना खून बहा देंगे। क्या आपने उस अपील के प्रस्ताव को भी नहीं पढ़ा जिसमें कहा गया है कि आज से हमारी सारी गुटबाजी दफन होती है और एक साथ हम खड़े होंगे? आपने तो पुरानी बातों का जिक्र कर दिया, किन्तु अब तो फिजां बदल गयी, दिशा बदल गई, हवाएं बदल गयीं दिमाग बदल गये, टम्बेश्वर प्रसाद जी। तो हम कहना चाहते हैं कि जिस चीज पर आपने अटैक किया उससे आपको फायदा होने वाला नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि यहां की कांग्रेस सरकार की रीति नीति के खिलाफ राष्ट्रपति को उन्होंने शिकायत भेजी है और मांग की है कि प्रदेश के मंत्रिमण्डल को भंग कर यहां पर राष्ट्रपति की व्यवस्था की जाय और यहां पर चुनाव

[श्री नवलकिशोर]

की पुनः व्यवस्था हो। यदि ऐसा था तो आप थोड़ी प्रतीक्षा करते और मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव न लाते, इसको लाने की तो आपको आवश्यकता ही नहीं थी। आपको तो यह चाहिए था कि राष्ट्रपति से भेंट करने के बाद, सफलता न मिलने पर अविश्वास का प्रस्ताव लाते। हो सकता है वह आपकी बात मान लेते तब तो यह सरकार स्वयं ही चली जाती।

एक बात उन्होंने यह कही कि इस सरकार में तो चारों ओर अविश्वास ही अविश्वास है। सरकारी कर्मचारियों को भी विश्वास नहीं है। हमने तो सरकारी कर्मचारियों के लिए, अफसरों के फायदे के लिए उनकी तनख्वाहें बढ़ाकर १५ करोड़ की मदद की है और फोर्थ प्लान में ९५ करोड़ यह खर्च होने वाला है कि इतना करने के बाद भी सरकारी अफसरों का हममें अविश्वास हो यह बात विश्वासनीय नहीं है। इंजीनियर्स एसोसिएशन और अन्य तमाम सर्विस एसोसिएशन ने इस बात के प्रस्ताव पास किए हैं कि इस राष्ट्र के संकट की घड़ी में हम पूर्ण रूप से सरकार के साथ खड़े हुए हैं और देश की हर कीमत पर रक्षा करेंगे। तो एक ओर तो आप प्रस्ताव पेश करते हैं कि हम पर आपका अविश्वास है और देखिए दूसरी तरफ हमारे साथ, विश्वास के साथ सारे प्रदेश की जनता खड़ी है वह जिस वर्ग की भी हो। तो आप सत्य बात कहिए गलत बात मत कहिए।

श्री उग्रसेन--

तो फिर इंजीनियर्स काला बिल्ला लगाए क्यों घूम रहे हैं?

श्री नवलकिशोर--

मान्यवर, उन्होंने नौकरशाही के सम्बन्ध में कहा। इस सम्बन्ध में उन्होंने चौधरी साहब का एक कोटेशन भी कोट किया। मैं नहीं जानता कि उसे उन्होंने कहां से कोट कर दिया, किन्तु जो यह आउट आफ कांटेक्स्ट कोट कर दिया तो उसके कोई माने नहीं रह जाते। चौधरी चरणसिंह ने किस सम्बन्ध में यह बात कही थी आप उसे भूल गए।

ब्यूरोक्रेसी पर बड़ा प्रहार किया जाता है, किन्तु अफसर सारे बेईमान ही नहीं हैं और सारे अयोग्य ही नहीं हैं, उनमें से अधिकांश ईमानदार और योग्य हैं, एक से एक बढ़कर। इसके बावजूद इनएफिशियेन्सी है, करप्शन है, लेकिन मान्यवर, यह इनएफिशियेन्सी और करप्शन कहने से तो जाता नहीं। मैंने कई बार कहा है कि जब तक विरोधी पक्ष और सरकारी पक्ष अपने दिमाग इस चीज में नहीं लगायेंगे तबतक करप्शन और इनएफिशियेन्सी दूर नहीं होगी। हमारी प्रथम, द्वितीय और तृतीय पंचवर्षीय योजनायें चलीं और पूरी भी हुयीं। यह बात दूसरी है कि जितनी सफलता उनमें मिलनी चाहिए थी, नहीं मिली, लेकिन यह बात अपनी जगह ठीक है कि जो फिजिकल टार्गेट तय किये थे, वह बावजूद इनएफिशियेन्सी और करप्शन के पूरे हुये। मगर मान्यवर, इसका मतलब यह नहीं है कि मैं करप्शन या इनएफिशियेन्सी का हामी हूं। मैं चाहता हूं कि वह मिटे और आइए हम आप साथ-साथ चलें और करप्शन और इनएफिशियेन्सी को मिटावें।

श्री अधिष्ठाता--

आपस में बहुत बातें हो रही हैं।

श्री नवलकिशोर--

त्रिपाठी जी ने यह चार्ज लगाया था कि नौकरशाही डिवाइडेड है। मैं नहीं जानता इससे उनका क्या मतलब था। सरकारी पक्ष का तो उलटा यह चार्ज है कि सरकारी अधिकारी जितनी विरोधी दल के लोगों की बात मानते हैं उतनी हमारी नहीं मानते, लेकिन चाहे वह इधर के हों चाहे उधर के हों, शासन का काम है सब की बातों को सुनकर उचित कार्यवाही करना। इसमें डिवाइडेड की बात कहां आती है?

एक बात उन्होंने और कही कि बस्ती जिले में कहीं पर किसी थानेदार ने कांग्रेस के सदस्य बनाए हैं, मुझे उसका ज्ञान नहीं है, लेकिन बरेली में जैसे मेरे छोटे से डिस्ट्रिक्ट में मैं त्रिपाठी जी से कहना चाहता हूं कि अगर वह यह साबित कर दें कि वहां किसी छोटे से छोटे सरकारी कर्मचारी ने एक भी मेम्बर बनाया हो तो मैं उनके सामने सिर झुकाने के लिए तैयार हूं।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद--

अगर प्रदेश में कहीं पर सरकारी कर्मचारियों ने यह काम किया है और मैं साबित कर दूं तो क्या सरकार इस्तीफा देगी ?

श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी--

अगर माननीय नवलकिशोर जी मेरे साथ चलें और मैं उनसे प्राइवेट में बता दूं और उसके बाद वे मुझे झूठा कह देंगे, तो मैं मान लूंगा।

श्री नवलकिशोर--

मैं, माननीय त्रिपाठी जी, आपके लिए यह कहने का साहस भी नहीं कर सकता, लेकिन टम्बेश्वरप्रसाद जी ने जो सरकार को इस्तीफा देने के की बात कही तो सरकारों का इस्तीफा कोई इतनी आसान बात नहीं हुआ करती।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद--

अगर हम सिद्ध कर दें कि सरकारी कर्मचारियों ने कांग्रेस के सदस्य बनाए हैं तब तो आप हटेंगे और आप तो मन्त्री भी नहीं हैं।

श्री उग्रसेन--

देवरिया जिले में तो मास्टरों ने कांग्रेस के सदस्य बनवाए हैं।

श्री नवलकिशोर--

मैं बड़े अदब से कहता हूं कि जहां ५५ या ६० लाख सदस्य बने हैं, हो सकता है कहीं ऐसा हो. लेकिन जहां तक मेरी जानकारी है मैं इस बात को निरर्थक और निराधार मानता हूं।

एक बात उन्होंने यह कही कि होम मिनिस्टर साहब ने यह कहा कि कई हजार पाकिस्तानी यहां हैं....

श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी--

चीफ मिनिस्टर ने कहा था।

श्री नवलकिशोर--

मैं बड़े अदब से कहता हूं कि इतनी लड़ाई के बावजूद भी आज तक पाकिस्तान डिप्लोमेटिक सम्बन्ध उनसे टूटे नहीं हैं। यह बात सही है कि अय्यूब साहब ने कहा है कि हम भारत के साथ युद्ध कर रहे हैं परन्तु इसका जो भी इन्टरप्रिटेशन हो, लेकिन जब हमारे डिप्लोमेटिक रिलेशन्स उनसे हैं, तब लोग आते हैं, लोग जाते हैं तो यह बात भी सही है कि काफी लोग अनअथराइज्ड ढंग से आये हैं, लेकिन ऐसे जो लोग हैं। आपका और हमारा फर्ज है, पुलिस का तो है ही कि आप सरकार की उसमें सहायता करें। इस सरकार की डिफेंस की जिम्मेदारी है, तमाम इन्तजाम लड़ाई का करना है, तो नागरिक के नाते हमारा आपका फर्ज है कि चाहे आप और हम किसी पार्टी में हों, कुछ भी हमारे मतभेद हों उनको भूलकर हम सरकार की मदद करें।

श्री टम्बेश्वरप्रसाद--

मैं खुद यह सूचना ले कर माननीय गृह मन्त्री के पास गया था, लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई।

श्री नवलकिशोर--

उससे क्या होता है, मैं आपको दावत देता हूं कि आइए हम सभी नागरिक इस बात की चेष्टा करें कि सिविल डिफेंस का जो भी काम हो उसको हम सब मिल कर करें। लोगों की कमेटी बने और उसका यह काम हो कि शांति मेन्टेन रखें और सही वातावरण पैदा करें और साथ ही साथ अगर किसी स्थान पर एन्टी नेशनल ऐक्टीविटी मालूम हो तो उन पर हावी होने की कोशिश करें। यह हमारा फर्ज होना चाहिये कि ऐसे मौके पर जब कि पाकिस्तान की फौजें हमारे बार्डर पर लड़ रही हैं, तो हर तरह से सावधान रहकर साम्प्रदायिक हारमनी मेन्टेन रखें।

एक बात यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी पुलिस के अन्दर लोग अच्छे भी हैं और बुरे भी हैं, लेकिन इसका उत्तर प्रदेश को गर्व है और आपको भी गर्व होना चाहिये कि उत्तर प्रदेश की पी० ए० सी० जहां भी भेजी गई, कश्मीर में भेजी गई, नेफा में भेजी गई और हैदराबाद में भेजी गई सब जगह उसने उत्तर प्रदेश का नाम ऊंचा किया है।

एक बात उन्होंने ओल्ड मिनिस्टरों की कही कि उनको कमेटियों में रखा है। हमारे यहां मंत्रिमंडल की संख्या पिछले दिनों में घटाई गई है और उसमें कुछ लोग जो पहले थे, आज नहीं हैं। । अगर उनमें से किसी अनुभवी आदमी को किसी कमेटी में रख दिया गया और कमेटी उनके अनुभव से लाभ उठा सकती है तो त्रिपाठी जी को किसी शिकायत का मौका नहीं होना चाहिये।

हिन्दी के बारे में कुछ बात कही गई। हमारे यहां से इस बात की घोषणा हो चुकी है कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और हमारे सदन की भाषा है। आपके कहने से मुख्य मंत्री जी ने उस आडिट रिपोर्ट को भी वापस ले लिया जो अंग्रेजी में थी क्योंकि वह हिन्दी में नहीं थी। मगर मैं एक बात कहना चाहता हूं कि हिन्दी के बारे में सभी की एक भावना है मगर फिर भी उसको बहुत ज्यादा प्रेस करना राष्ट्रीय भावना के साथ बहुत ज्यादा न्याय नहीं होगा। इस बात पर हमको ध्यान देना चाहिये। त्रिपाठी जी ने जो अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया है उसके लिये मुझे शिकायत नहीं है, लेकिन अच्छा होता कि जितने वह गंभीर है, जितनी राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत हैं उसको देखते हुए वह हमारी सरकार के प्रति अविश्वास के प्रस्ताव को इस संकटकालीन समय में पेश न करते। आखिर आपने पेश कर दिया तो ऐसी कोई बात न कही जाय जिससे प्रदेश का वातावरण दूषित हो। इस संकट के समय में हमारा और आपका सबका यह कर्तव्य है कि भारत भूमि की रक्षा के लिये अपना एक-एक खून की बून्द बहाने के लिये तैयार हों और पाकिस्तान के रेडर्स को यहां से निकाल कर फेंक दें इसी में हमारा कल्याण है।

*श्री गयाप्रसाद (जिला वाराणसी)--

अधिष्ठाता महोदय, मैं माननीय नवल किशोर जी की बात सुन रहा था। उन्होंने अपने दल की और सरकार की खूब वकालत की, पर फिर भी कुछ सभा जमा नहीं। कुछ फीका रहा। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि इस अविश्वास के प्रस्ताव को लाने का इससे बढ़कर और कोई उपयुक्त समय नहीं हो सकता था क्योंकि इस समय देश को ऐसी सरकार की आवश्यकता है जो वे सब गुण रखती हो। वे गुण आपके अन्दर नहीं हैं।

(व्यवधान)

एक निवेदन आप से है। (व्यवधान)

श्री केशरीप्रसाद पाण्डेय (जिला जौनपुर)--

कांग्रेस के सदस्य प्रोवोक कर रहे हैं कि अपोजीशन से वैसी ही बातें कही जायं।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

(व्यवधान)

श्री गयाप्रसाद—

श्रीमन्, मैं सबसे पहले यह निवेदन करना चाहता हूं कि जो हमारी सेना सीमा पर लड़ रही है उसे हम मुबारकबादी देना चाहते हैं। जिस प्रकार हमारी सेना लड़ रही है वह किसी से छिपा नहीं है। हम अविश्वास का प्रस्ताव लाकर जनता का मनोबल गिरा रहे हैं यह केवल भ्रम बढ़ाने वाली बात है। मेरी आप से प्रार्थना है कि हमारे जो जवान जख्मी हुए हैं उनके परिवारों का सरकार की ओर से पूरा प्रबन्ध किया जाय और उन्हें उचित पेंशन दी जाय। इस समय प्रदेश में जो वातावरण है उसके रहते हुए न तो इस प्रदेश की जनता का मनोबल ऊंचा होगा और न ही इस लड़ाई में हम कोई सहायता कर सकेंगे ऐसी कि जिससे जवानों को बल मिल सके। आज स्थिति यह है कि गुप्त जी और त्रिपाठी जी एक साथ बैठ नहीं सकते, बहुगुणा जी और बनारसी दास जी और रामायण राय जी और रामचन्द्र विकल जी एक साथ बैठ नहीं सकते। इतनी ज्यादा गुटबाजी है जिस सरकार में, वह हमसे कहे कि हम उसे सहयोग नहीं दे रहे हैं यह एक ऐसी बात है कि जिस की सत्यता सरकार और, इस प्रदेश की जनता खूब अच्छी तरह से जानती है। इस सरकार के रहते इस प्रदेश की जनता का मनोबल ऊंचा नहीं होगा और न वह कोई ऊंचा काम ही कर सकेगी।

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि इस प्रदेश में महंगाई इस तरह से बढ़ रही है कि पिछले चार, पांच दिनों में जो घी का टिन १७ रुपये में आता था वह २१ रुपये का हो गया है। इसी तरह से नमक, दाल आदि के दाम भी बढ़ रहे हैं। मैं खाद्य मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि क्या कोई ऐसा कार्यक्रम या योजना है जिस के तहत इन देशद्रोहियों पर कार्यवाही की जा सके। सरकार उदासीन है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आज आपने डाक्टर लोहिया और २००० अन्य लोगों को जेल में डाल रखा है और ऐसा करके आप किसका सहयोग चाहते हैं? अभी-अभी समाचार मिला है कि शायद वह छूट गये हैं, सुप्रीम कोर्ट ने छोड़ा है। आप सोचें कि डी० आई० आर० में कितना गलत मुकदमा उन पर चलाया गया। सालिग्राम जायसवाल और छन्नन गुरु जैसे लोगों को जेल में रख दें और ऐसा कर के आप हमसे मदद चाहते हैं? क्या मदद चाहते हो, हम क्या कर सकते हैं? पहले तो इनको परिभाषा नहीं मालूम कि सरकार क्या है, राष्ट्र क्या है, राज्य क्या है। इनको भेद ही नहीं मालूम। हम राष्ट्र के साथ हैं, लेकिन इस सरकार के साथ नहीं है? इस भ्रम को जनता के बीच फैलाने का प्रयत्न जो आप कर रहे हो उससे ही इस देश का मनोबल गिरेगा। इस सरकार के साथ सहयोग हो सकता है?

विरोधी दल के समस्त सदस्यों ने मिलकर एक मांग की कि गोरखपुर के फर्टीलाइजर कारखाने में गोलीकान्ड हुआ और उसकी एक न्यायिक जांच करायी जाय। सरकार ने उसको टर्नडाउन कर दिया, गृह मंत्री ने उस मांग को स्वीकार नहीं किया। उसकी जांच के सिलसिले में कांग्रेसी और जनसंघ के सदस्यों के साथ मैं भी गोरखपुर गया था और उग्रसेन जी और मधुकरलिमे भी गये।। वह ऐसी घटना नहीं है जिसकी आग हमारे सीने से कभी बुझ जाय। ७०–८० वर्ष का बूढा जब खड़ा हुआ तो उसने कहा कि ५ मील के जिस घेरे में कारखाना खुला उसमें हमारी जमीन चली गयी, किसानों की चली गयी। आज हमको बताओ कि हम अगर सरकार की गोली न खायें तो क्या खायें? क्या रक्खा हुआ है खाने के लिये? जिस दर्दनाक तरीके से बयान दिया कि क्या कहा जाय। हम लोग वहां से इस उम्मीद पर आये थे कि दोबारा प्रयत्न करेंगे और वहां के अफसरों का जो जालिमाना तरीका रहा है, जो गोलियां इन्होंने चलायी हैं उनके ऊपर जिनके पास थ्री नाट थ्री की गोली नहीं थी तो उनके ऊपर कत्ल का मुकादमा चलाना चाहिए। जो कारखाने के चपरासी तथा और जो लोग गये थे उनको किसी की हत्या करने का कोई

[श्री गयाप्रसाद]

अधिकार उनको नहीं है। उनक ऊपर ३०२ का मुकदमा चलना चाहिये था। लेकिन हमारी यह मांग अनुसुनी कर दी गयी।

मैं आपसे भ्रष्टाचार के संबंध में क्या कहूं। इसी मंत्रिपरिषद् के अन्दर ऐसे व्यक्ति मौजूद ह जो पाकिस्तान की हिमायत कर रहे हैं, जो जाने अनजाने तरीके से हमारे मुल्क का पैसा भिजवा रहे हैं। इसका एक उदाहरण बताता हूं। इलाहाबाद में बस स्टेशन बनाने के लिये एक खन्डहर की एक जमीन ली गयी जिसकी कीमत इंजीनियर ने ३६,००० रुपया आंकी थी। उसी खन्डहर और जमीन की परिवहन मंत्री ने अपने एक संबंधी को जो कि पाकिस्तान चला गया रुपये के साथ, उसको ९६,००० रुपया दिलवाया। (विरोधी दल से शेम शेम की आवाजें) मैं पूछता हूं कि मैं किस सरकार के साथ, किस मंत्रिपरिषद् के साथ जाऊं, मेरे सामने यह सवाल है?

मैं कहना चाहता हूं कि चीन की लड़ाई के समय में वाराणसी की जिला परिषद् के अध्यक्ष तथा कुछ माननीय सदस्यों और वहां के कांग्रेसी सदस्यों के जरिये से डेढ़ लाख रुपये का गबन हुआ जिसका मुकदमा दायर है। मैं उस अंश को नहीं कहूंगा। लेकिन वह नीचे की अदालत से और सेशन से हारे और वहां एक फैसले में लिखा है कि ये लोग बिहाइन्ड बार क्यों नहीं हैं? लेकिन हाई कोर्ट में जाकर सरकार ने अपील करके मामले को वहीं दबा दिया। ऐसे भ्रष्ट लोगों के रहते हुए क्या हम आशा करें कि देश के लोग इस लड़ाई के मैदान में लड़ने के लिये तैयार होंगे, अपना रक्त देंगे, अपने बेटों को सीमा पर भेजेंगे? इसलिये जरूरत है कि यह सरकार बदले। वाराणसी के एक प्रमुख नेता हैं, वह अब एम० एल० सी० भी नहीं रहे हैं, अध्यक्ष भी नहीं रहे हैं, उन्होंने ४७ राशन की दुकानें ली हैं, ६ सीमेन्ट की दुकानें ली हैं, और पूरे जिले के स्प्रिट के वे होलसेल डीलर हैं, उसके वे लाइसेन्सी हैं। तो पैसा तो सब आपके कांग्रेस वालों के पास चला गया, मंत्रियों के पास ४-४ मकान हो गये, हमारी सूखी हड्डियों से आप सहयोग चाहते हैं? फिर भी हम तैयार हैं, हम किसानों को लेकर सीमा पर लड़ने के लिये तैयार हैं, और अगली पंक्ति में रहेंगे, आजादी की लड़ाई में भी हमने आगे रहना सीखा है। इन लोगों ने तो लड़ाई लड़ी ही नहीं है। इन लोगों से तो देश का मनोबल गिरेगा। हम आगे रहने को तैयार हैं। आज यह नारा बुलन्द होना चाहिये 'देश बचाओ, कांग्रेस हटाओ,।" इन लोगों के हाथ से देश नहीं बचेगा।

श्री चन्द्रसिंह रावत (जिला गढ़वाल)--

श्रीमन्, आज देश बहुत बड़े संकट से गुजर रहा है और इस समय हमें बहुत सोच विचार कर काम लेना है। मैं यह मानता हूं कि हमें सरकार पर विश्वास होना चाहिये। हमारा यह भी दृढ़ विश्वास है कि इस लड़ाई में हम सफलता प्राप्त करेंगे। मगर जब मुल्क में परिस्थितियां बदली हैं, देश संकट में है, तो शासन में भी इस तरह की तब्दीली होना चाहिये जिसे राष्ट्र चाहता है। जिसकी मांग आज की परिस्थितियां करती हैं। हर व्यक्ति हर परिस्थिति के लिये और हर काम के लिये उपयुक्त नहीं होता। कोई व्यक्ति शांति के लिये उपयुक्त होता है, कोई व्यक्ति संकट की घड़ी का सामना करने के लिये उपयुक्त होता है। मैं सरकार को चेतावनी देना चाहता हूं कि जिस रफ्तार से मुल्क चल रहा है, उसको देखते हुए जिस तब्दीली की आज जरूरत है उसकी स्पष्ट छाया दिखाई देने लगी है। जब मुल्क संकट की घड़ी में हो, उस समय घूसखोरी, भ्रष्टाचार आदि को बन्द करने के लिये सख्त कदम उठाने की जरूरत होती है। मैंने २२ अक्तूबर, १९६२ को पंडित नेहरू को लिखा था कि अगर आप मुल्क को बचाना चाहते हैं तो जो ब्लैकमार्केटियर्स हैं उनको खत्म कर देना चाहिये, सख्त से सख्त सजा उनके लिये होना चाहिये। मुल्क के अन्दर आप बन्द कर सकते हैं इस चोरबाजारी को, वर्ना जेल या जुर्माना इसको ठीक नहीं

कर सकते। इसलिये जरुरत है और मैं चाहता हूं कि हमारे प्रधान मंत्री शास्त्री जी जल्दी से इसकी व्यवस्था करें। अगर कोई भी देशद्रोही देश के साथ विश्वासघात करता है उसको गोली से उड़ा देने की सजा होनी चाहिये। हम नहीं चाहते कि किसी भाई को गोली मारी जाय, लेकिन चालीस करोड़ भाइयों की रक्षा के लिये बल्कि हिन्दुस्तान के व्यक्तियों को ऐसे आदमी को उड़ा देने का अधिकार है। आपको मालूम होगा जान अमेरी का किस्सा। उसको जर्मनी में गिरफ्तार कर लिया गया और उसको प्रचार करने के लिये रेडियो स्टेशन पर भेज दिया गया कि तुम इंगलैन्ड के खिलाफ प्रचार करो। उसको इंगलैन्ड के खिलाफ प्रचार करना पड़ा। लेकिन लड़ाई के बाद जब रिपैट्रिएशन हुआ और जब अमेरी ने इंगलैन्ड की भूमि पर पांव रक्खा तो उसके हाथों पर बेड़ियां पड़ गईं और उसको अदालत का में लाया गया और इससे सवाल किये जाते हैं कि तुमने मातृभूमि के खिलाफ प्रचार किया। इस तरह से तुमने इंगलैन्ड के खिलाफ विश्वासघात किया है देश द्रोह किया है, इसलिये तुमको फांसी की सजा होनी चाहिये और उसको फांसी की सजा दी गई। इसी तरह से अगर कोई हिन्दुस्तान के अन्दर देशद्रोह का अपराध करता है, तो ऐसे शख्स को गोली से उड़ा देना चाहिये, यह हमारे मुल्क का कानून हो। दिस शुड बी दि ला आफ दि लैन्ड।

दूसरी बात यह है कि जिस वक्त मुल्क जंग में जुटा हुआ हो तो भी ला डिमान्ड करता है कि ऐसे आदमियों को जेल की सीखचों में बन्द करना चाहिये जो मुल्क के काम में किसी भी किस्म की बाधा डालते हैं। अगर मुल्क को सम्हालना है तो हम चाहते हैं कि जब गरीब लोग अपनी जमीनें दे सकते हैं, अपने जेवर दे सकते हैं, अपनी औलाद लड़ाई में भेज सकते हैं, अपनी जायजाद दे सकते हैं, तो जितने कैपिटलिस्ट हैं उन सबको जो नोटों को बैन्कों में जमा करना चाहते हैं उनके साथ ऐसा ही बर्ताव किया जाना चाहिये जो देशद्रोही के साथ होता है। जब तक ऐसी कार्यवाही नहीं होगी तब तक देश के अन्दर शांति नहीं होगी। मैं आपसे दरख्वास्त करना चाहता हूं कि आप हमारे सन्देश में बधाई के तौर पर शास्त्री जी और उनकी फौजों के लिये सन्देश भेजें, उन्होंने जो काम किया है, लाहौर पर जो बहादुरी से हमला किया है और देश की सावरैन्टी को बचाने के लिये जो कदम उठाये हैं उसके लिये वे सब बधाई के पात्र हैं। या तो हम उनको सबक सिखाकर रहेंगे वरना हमें खुद सबक सीखना होगा। इस सारी लड़ाई के पीछे इंगलैन्ड का हाथ है और मैं आपको बताना चाहता हूं, वह चाहता है कि इंटरनेशनल टेरीटरी काश्मीर को बना दिया जाय ताकि इंग्लैन्ड और यू० एस० ए० अपनी फौजी चौकियां रूस का मुकाबला करने के लिये वहां पर बना सकें। जिसने राजनीति को पढ़ा है वह जानता है कि इंगलैन्ड कितना खतरनाक है? वह धोखेबाज भी है। यह इंग्लैन्ड और अमेरिका किसी भी देश को शांति के साथ बैठने नहीं देना चाहते। वह अन्डर डेवलप्ड कन्ट्रीज की एकोनामी को लोन्स एण्ड ग्रान्टस देकर मिसगाइड करते हैं।

इसलिये मैं निहायत अदब के साथ दरख्वास्त करना चाहता हूं कि कोई बात नहीं है अगर अविश्वास का प्रस्ताव आये। लेकिन यह अविश्वास का प्रस्ताव रैटिफिकेशन के लिये नहीं होता, यह रेक्टिफिकेशन के लिये होता है। अगर उससे हमारा रेक्टिफिकेशन होता है, सरकार को चेतना मिलती है कि वह सही रास्ते पर चले तो इसमें कोई बुरा मानने की बात नहीं है, एक नहीं हजार अविश्वास के प्रस्ताव आयें, हम उनका स्वागत करेंगे अगर उनसे हमारी सरकार का रेक्टिफिकेशन होता है। मैं समझता हूं कि जो भाई इधर बैठे हैं या उधर बैठे हैं वह सब विश्वास के पात्र हैं, कोई भी इस मुल्क के अन्दर ऐसा प्राणी नहीं होगा जो मुल्क का अहित चाहता हो। लेकिन कुछ ऐसे व्यक्ति भी मुल्क में होते हैं जो कान्सेशियल आबजेक्टस होते हैं। नैतिक समर्थन उनका नहीं होता है। ला आफ दि लैन्ड कहता है कि उनको जेल के सीखचों के अन्दर बन्द किया जाना चाहिए, फेमिली एलावेन्स और मेन्टीनेंस का प्रबन्ध करके, उनको जेल में डाल देना चाहिये। सन् १९१४

[श्री चन्द्रसिंह रावत]

की लड़ाई में जर्मनी का एक जनरल था जो ज्यू था और जिसको ब्राइब करके इंग्लैन्ड ने युद्ध जीता था। युद्ध में हर टैक्टिस और स्ट्रेटेजी इस्तेमाल होती है। एवेरी थिंग इज फेयर इन लव एन्ड वार। किसी भी तरह से लड़ाई जीतनी चाहिये। पुराने जमाने में आप जानते हैं और हमारे यहां भी लड़ाई के मैदान को फतेह करने के लिये विष कन्याओं का इस्तेमाल किया जाता था। जर्मनी जापान और चाइना ने भी इन सब टैक्टिस का इस्तेमाल किया है।

अन्त में मैं बड़े अदब के साथ एक दरखास्त करना चाहता हूं कि बहुत जल्दी असेम्बली बन्द की जानी चाहिये और पान्डेय जी जैसे नवजवान लोगों को फ्रंट पर चले जाना चाहिये। जो उनके लिये उपयुक्त जगह है वहां चले जाना चाहिये। भानु प्रताप सिंह को तमाम सप्लाई का आफीसर बना दिया जाना चाहिए। इनके और इनके साथियों के पास गेहूं बहुत है, वह सब लड़ाई पर जायगा। यहां जितने भाई इधर के और उधर के बैठे हैं वह सबफ्रंट पर जायेंगे, सबसे पहले हम जायेंगे ये सब तो तनख्वाह लेकर जायेंगे, हम बिना तनख्वाह लिये जायेंगे।

संकट में एक अभिशाप दिखाई देता है, लेकिन वह बाद में मुल्क की अच्छाई में बदल जाता है। इससे मुल्क को होशियार होने का मौका मिलता है। हम और आप लड़ते हैं इन कुर्सियों के लिये। आज हमको इन कुर्सियों के लिये नहीं सोचना है कि ये रहेंगी या नहीं, अगर मुल्क नहीं रहेगा तो कुर्सियां कहां से रहेंगी? क्या, अधिष्ठाता महोदय, आप अपने को इन कुर्सियों पर सेफ समझते हैं? यह हमको सोचने और समझने की जरूरत है। हमको पीछे कदम नहीं उठाना है। हमको अपनी कौम की आवाज को पहचानना चाहिये। हम समझते हैं कि हर व्यक्ति के लिये आज जरूरी है कि वह मुल्क के लिये आहुति दे, चाहे वह पैसे की हो या शारीरिक हो, कैसी भी हो। जब पहले चीन को लड़ाई हुई और उसके लिये चन्दा हुआ तो जिनके पास करोड़ों की दौलत थी उन्होंने नहीं दिया, जोकि उनको देना चाहिये था। दूसरी ओर, गरीबों ने सब कुछ दे दिया, जेवर उतार कर दे दिये, अपने बच्चों लड़ाई में भेज दिये। हमारे मुल्क में यदि ऐसे लोग हैं जो लड़ाई के चन्दे को हड़प जाते हैं, भले ही यह सरकार उनका कुछ न करे, लेकिन भगवान् की अदालत में उनका ट्रायल होकर उन्हें जरूर सजा मिलेगी। इसलिये अन्त में मैं सब भाइयों से यह याचना करता हूं कि आप इस असेम्बली को बहुत जल्दी बन्द करें ताकि लोग अपने इलाकों में जाकर जनता को एजूकेट करें कि इस समय क्या करना है।

श्री विजयपालसिंह (जिला मुजफ्फरनगर)—

अधिष्ठाता महोदय, मैं सबसे पहले अपनी और अपने दल की ओर से अपने उन फौजी भाइयों को जो इस लड़ाई में शहीद हुये हैं, श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और साथ में अपनी सरकार को और भारत की फौज को मुबारकवाद पेश करता हूं, धन्यवाद देता हूं, कि उन्होंने अबकी बार जो साहस और वीरता दिखाई है वह इन १८ सालों में देखने को नहीं मिली। तन, मन, और धन से अपने फौजी भाइयों के साथ हम हैं।

साथ ही मैं देश के मुसलमानों का, और खास तौर से कश्मीर के मुसलमानों का, तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूं, मुबारकवाद पेश करता हूं, कि उन्होंने पाकिस्तान के उन मंसूबों को फेल किया है जिनको लेकर वह काश्मीर में घुसा था। उसने पाकिस्तान को मुंह तोड़ जवाब दिया है कि हिन्दुस्तान और काश्मीर का मुसलमान किस तरह से देश के साथ मुहब्बत रखता है। यह खयाल कि पाकिस्तान की फौज काश्मीर में घुसी तो वहां का मुसलमान बगावत करेगा, इस बात को उन्होंने गलत साबित कर दिया है, चूंकि उनमें देश का जजबा है।

मैं अफसोस जाहिर करता हूं अपने साथी मिश्र जी की बात पर। उन्होंने बाद तो बहुत अच्छी कही कि यह समय.....

श्री अधिष्ठाता--

जब उन्होंने वह वापिस ले लिया तो उसका जिक्र करना अच्छा न होगा ।

श्री विजयपालसिंह--

मैं उनसे लड़ूंगा नहीं और न मेरी ऐसी आदत हैं । मैं सिर्फ यह कह रहा हूं कि उन्होंने जो बात कहीं वह खूबसूरत और अच्छी थी । ऐसे मौके पर जब कि हमारे नौजवान सीमाओं पर शहीद हो रहे हों, हमारे लाखों फौजियों की मातायें और बहनें अपने घरों में २४ घंटे यह सोचती हों कि हमारा बेटा या भाई जिन्दा है या नहीं, ऐसे अवसर पर हम इस हाउस में बैठकर नमक मिर्च के झगड़ों की बातें करें तो यह शोभा नहीं देता । हम ऐसी बातें फिर कर सकते हैं । आज इसके लिये वक्त अच्छा नहीं है । लेकिन जो तरीका उन्होंने अपनाया वह अच्छा नहीं था । जो कुछ उन्होंने कहा और अगर वही बात माननीय कमलापति त्रिपाठी, माननीय मुख्य मंत्री जी, या हमारे बुजुर्ग नेता ठाकुर हुकुमसिंह, या दूसरे नेता अपील करते कि आज मौका नहीं है कि हम इन बातों की चर्चा करें जिससे हमारे देश और प्रदेश का नुकसान हो सकता है, तो मुझे उम्मीद है कि अपोजीशन उसे मानने के लिये तैयार हो जाता । लेकिन हमारे नेताओं ने वैसा नहीं किया ।

इस बात को सभी मानते हैं कि घमासान युद्ध हो रहा है, भले ही दलबन्दी के कारण या किसी दूसरे कारण से हम एक दूसरे पर लांछन लगावें । लेकिन मैं मानता हूं कि हिन्दुस्तान का एक-एक नागरिक यह महसूस करता है कि देश की रक्षा की जिम्मेदारी हर आदमी की अलग अलग है । सब महसूस करते हैं कि लड़ाई को हम कन्धे से कन्धा मिलाकर जीतें । हमारी सरकार जानती है कि इस अदम एतमाद से वह उलटने वाली नहीं है, और हम भी इसे अच्छी तरह जानते हैं । लेकिन यह सिर्फ आलोचना करने के लिये होता है । आज इस सरकार की मुख्य जिम्मेदारी थी कि इस प्रदेश में एक वातावरण पैदा किया जाता कि देश को पाकिस्तान से लड़ाई जितनी है भले ही कुछ भी हो । क्या यह वातावरण सरकार ने पैदा किया ? कौन सी अपील हमारी सरकार ने जारी की ? कौन सा आपका सरकारी कर्मचारी महसूस करता है कि देश में लड़ाई है, इसलिये रिश्वतखोरी बन्द कर दें ? क्या गुटबन्दी खत्म हुई ? हमारे नेता लोग जब जवाब दें तो वे बतावें कि इन १५, २० दिन में हमारी सरकार ने सिविल डिफेंस में क्या किया, जनता में जोश पैदा करने के लिये, मनोबल ऊंचा करने के लिये क्या कदम उठायें, कोई मीटिंग की हैं, जलसे किये हैं या जलूस निकाले हैं ? आज से १० दिन पहले हमारी पार्टी के डिप्टी लीडर, माननीय चन्द्रजीत यादव, मुख्य मंत्री जी के पास गये और उनसे आशा की कि वह सभी दलों के नेताओं को बुला कर, उनसे डिसकशन करके, एक प्रस्ताव पास कर पूरे प्रदेश में बटवायेंगी, केन्द्रीय सरकार के पास भेजेंगी, जिसमें यह हो कि पूरा उत्तर प्रदेश एक है, हम सब एक हैं पाकिस्तानी हमले का मुकाबला करने के लिये । यह अदम एतमाद कोई ऐसी बात नहीं है । हम और आप लड़ाई के मैदान में एक हैं । लेकिन यह देखना और सोचना होगा कि लड़ाई के बाद जिन स्थितियों से देश मजबूत होता है, उनके लिये सरकार ने कोई कदम उठाया है या नहीं, आज क्या स्थिति है ? आज एक तरफ घमासान लड़ाई हो रही है और यहां दूसरी ओर ब्लेक मार्केटिंग हो रहा है । अगर वह पाकिस्तान के हमले से जरा भी नीचे उतरा हो तो मान सकता हूं कि लोगों में देश भक्ति है और सरकार ने उस तरफ कोई कदम उठाया है । यह मैं कह सकता हूं कि इन दस दिनों में ब्लेकमार्केटिंग घटा नहीं है । मैं कह नहीं सकता कि वह बढ़ा है या नहीं क्योंकि न तो मैं अपने इलाके में गया हूं और यहां लखनऊ में बाहर मैं जाता नहीं हूं । लेकिन यहां का व्यापारी तो यह समझ रहा होगा कि आज जो बाजार है उससे कल तेजी आयेगी और उसमें और भी अधिक ब्लैक मार्केटिंग करने को मिलेग । आज अनाज की क्या स्थिति है, जंग की स्थिति में क्या आपने उस पर विचार किया ? जंग की वजह से क्या हमें आवश्यकता होगी और उसको किस प्रकार से पूरा किया जायगा, क्या उसके लिये आपने कोई आर्डर्स दिये हैं ? क्या इस बारे में आपने कलेक्टरों से पूछा है ? क्या विभिन्न दलों के नेताओं से इस बारे में विचार-विमर्श किया है ? अगर गल्ले का ठीक प्रबंध नहीं हो सका तो हम जंग लड़ेंगे या गल्ले को इकट्ठा करेंगे ? क्या हमारी सरकार ने उसके लिये कोई अपील निकाली ? क्या सरकार ने कोई

[श्री विजयपालसिंह]

ऐसी अपील निकाली कि सरकारी नौकरों तुम हमारे कहने से रिश्वतखोरी से बिलकुल बाज तो न आओगे, लेकिन जब तक जंग चल रही है, उस वक्त तक के लिये तुम हलफ उठा लो कि हम रिश्वत नहीं लेंगे क्योंकि हमारे ही देश के नौजवान मोर्चे पर शहीद हो रहे हैं ? लेकिन मैं देखता हूं कि यह रिश्वत बिलकुल भी कम नहीं हुई है। मैं अपने ५ दिन के दौरे से अपने क्षेत्र से आया हूं । मेरे सामने और सारी जनता के सामने वहां का तहसीलदार रिश्वत लेता है : मैंने तहसीलदार और नायब तहसीलदार से कहा कि ऐ कम्बख्तों, इस रिश्वत को इस समय तो बंद कर कर दो । लेकिन कोई सुनने को तैयार नहीं है ।

सारी जनता में उत्साह है, लेकिन नेताओं की ओर से उसको कोई हुक्म ही नहीं मिल रहा है । सरकार कुछ बोल ही नहीं रही है । या तो वह स्थिति को गंभीर ही नहीं समझ रही है या वह यह समझती है कि हम काफी शक्तिशाली हैं किसी की ओर आवश्यकता नहीं है ।

(इस समय २ बजकर ३५ मिनट पर, उपाध्यक्ष श्री होतीलाल अग्रवाल पीठासीन हुये ।)

दूसरी किसी पार्टी की आवश्यकता नहीं है । हमारे नेताओं को कोई चिन्ता नहीं मालूम पड़ती है ।

उपाध्यक्ष महोदय, एक बात की ओर मैं और आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं कि जब चीन का हमला हुआ था तो हमारे देश के किसानों और मजदूरों ने देश का तन-मन-धन से साथ दिया था और उसकी तारीफ पंडित नेहरू तक ने की थी । लेकिन जहां देखिये वहां कारखाने बन्द पड़े हैं और मजदूर बेकार हो रहे हैं । जिन्होंने देश के संकटकाल में देश का साथ दिया आज वही मजदूर बेकार हो रहा है और देश का उत्पादन घट रहा है । उस ओर सरकार का ध्यान नहीं है । क्या आप मिल मालिकों को डी० आई० आर० में बन्द नहीं कर सकते ? संकट के समय में जो कोई ब्लेकमार्केटिंग करे उसको डी० आई० आर० में बन्द कर दो और मिलों को चालू कराओ, मजदूरों को काम दिलाओ ।

आज चाहे हम किसी दल के हों हमें अपने भेद भाव भुला कर, एक होकर, तमाम पार्टियों के नेताओं से विचार विमर्श करना चाहिये और एक रास्ता निकाल लेना चाहिये ताकि देश के संकट के समय हमारे प्रदेश में अमन कायम हो सके । इससे जनता का मनोबल बढ़ेगा, पैदावार बढ़ेगी । इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात को खत्म करता हूं और आशा करता हूं कि हमारे माननीय मंत्रिगण और दूसरे कांग्रेसी नेता बजाय इस के कि हमारे इधर के लोगों पर लांछन करें अपनी गलतियों और खामियों को स्वयं देखें क्योंकि हम तो गुमराह हो सकते हैं, लेकिन आप की जिम्मेदारी ज्यादा है, आप की गलतियों को जनता नजरअन्दाज नहीं कर सकती । इसलिये आप आज की घड़ी में अपने अन्दर साहस पैदा करें और हमें सबक सिखायें ताकि हम भी सही रास्ते पर चलें । इस संकट के समय में कांग्रेसी नेता जिनको संकट का मुकाबला करना पहले से आता है और जो बहादुरी के साथ अंग्रेजों से लड़े हैं और जिनसे शासन की बागडोर उन्होंने सम्भाली है उनको आज चाहिये कि तमाम दलों को साथ लेकर इस संकट का मुकाबला करें जो आज देश के सामने खड़ा है ।

*श्री केशभान (जिला गोरखपुर)---

माननीय उपाध्यक्ष, मैं आज अविश्वास के प्रस्ताव पर विश्वास प्रकट नहीं कर सकता तो इस अविश्वास का प्रस्ताव रखने वाले लोगों में गम्भीर विश्वास रखता हूं । मेरा यह कहना कुछ अटपटा सा जान पड़ेगा लेकिन मेरी यह बात सारहीन नहीं है । हमारे देश की सदा ही ऐसी परम्परा रही है कि हमने साकार में निराकार के और निराकार में साकार के दर्शन किये हैं, हम ने अमूर्त में मूर्त के और मूर्त में अमूर्त के दर्शन किये हैं । आज फिर हमारे सामने वही क्षण

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

है वही घड़ी है जब हमें अपने विरोधी पक्ष के लोगों में और उन के अविश्वास में भी अपने बल के दर्शन करने हैं । अभी हमारे एक माननीय सदस्य ने एक तथ्य, एक सत्य की ओर संकेत किया है, उन्होंने बताया कि सरकार और जनता में राज्य और पब्लिक में अन्तर होता है । जरूर अन्तर होता है, किन्तु एक समय ऐसा भी अवश्य आता है जब हमें इस तथ्य को मानना पड़ता है कि सरकार और जनता में कोई अन्तर नहीं है । मेरा यह विश्वास है कि वह समय आ गया है कि जब हमें कहना पड़ेगा । और मानना पड़ेगा और उस पर चलना पड़ेगा कि सरकार और जनता में इस वक्त कोई अन्तर नहीं है ।

एक दिन था जब इस सदन के माननीय सदस्य मंत्रिपरिषद् के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव लाये थे, उस समय से आजकल कौन सा परिवर्तन हुआ, कौन सी नई परिस्थिति आई ? जब हम इस पर विचार करते हैं और बहुत सोचा और ढूंढ़ा तो केवल एक बात सामने आती है और वह यह कि आज पाकिस्तान और अपने देश के बीच संघर्ष छिड़ गया है । इसके अलावा कोई और परिस्थिति नहीं है । इसलिये उस समय जिस मापदंड से इस अविश्वास प्रस्ताव की जांचपड़ताल की गई थी आज हमने उस मापदंड को ताक में रख दिया । उस दिन सरकार के पक्ष में हमें जानना चाहिये कि सरकार के पक्ष में २ सौ, ३ सौ और अधिक मत आये और विरोध के पक्ष में कम आये और हमें सरकार में विश्वास प्रकट करना पड़ेगा ।

मैं शिक्षक रह चुका हूं, आज मुझे एक आभास होता है और उस नाते मुझे एक बात याद आती है । मेरा एक विद्यार्थी था उसको मैंने एक प्रश्न दिया, उत्तर उसका आया वह इतना सुन्दर था कि मैं स्वयं भी इतना सुन्दर न लिख पाता जितना उसने लिखा । लेकिन फिर भी अगर उस प्रश्न के १० नम्बर थे तो उसको मैंने १० नम्बर नहीं दिए बल्कि ७ या ८ नम्बर दिये । उस लड़के ने जब पूछा कि इससे भी बढ़कर क्या कोई उत्तर हो सकता था तो मैंने उस से कहा कि इतना बढ़िया उत्तर तो मैं भी नहीं दे सकता था, लेकिन मेरी कल्पना यह है कि तुम इससे भी बढ़िया उत्तर दे सकते हो । मैं कल्पना करता हूं कि इतनी क्षमता तुममें हैं । मैं ने उससे कहा कि इससे बढ़ कर क्षमता तुमने आ सकती है । जब राज्य में शान्ति हो, राज्य पर पर कोई संकट न हो तब इस लोकतंत्र राज्य में बिरोध पक्ष उस शिक्षक की भांति है कि सरकार कितना ही अच्छा काम करे और कितनी ही अच्छी हो, फिर भी इस सरकार की आलोचना करना उनका कर्त्तव्य है । विरोध पक्ष की कल्पना है जितना अच्छा काम हमारी सरकार कर रही है, उससे भी अच्छा काम करने की कल्पना उनकी है । विरोधी पक्ष चाहे स्वयं उतना सुन्दर प्रश्न का उत्तर न दे सके, उतनी अच्छी और सुन्दर सरकार न बना सके, लेकिन यह उनकी कल्पना होती है कि जितना अच्छा काम सरकार कर रही है वह इससे अच्छा कार्य करें ।

आज मैं अपनी सरकार से भी दो शब्द कहना चाहता हूं और वे यह हैं कि उसे अपने आपको भी सुधारना पड़ेगा । जनता में विरोधी पक्ष भी आता है । इस संकट काल में हमें विरोधी पक्ष को साथ लेना है जिससे हम आये हुये इस संकट को टाल सकें । विरोधी पक्ष में भी एक पावर होती है, एक जादुई शक्ति होती है । उस शक्ति की आज मैं भीख मांगता हूं । जो सरकार के पास नहीं पर आपके हृदय में है । सरकार को भी अपने बल से, सहयोग से, और विश्वास से काम करने की आवश्यकता है । आज बड़े ही विनम्र शब्दों में विरोधी पक्ष के लोगों से प्रार्थना करता हूं कि वे अपने हृदय में विश्वास रखें और उनका विश्वास ही जादू का काम करेगा ।

एक माननीय सदस्य ने थोड़े से संकेत में कहा कि कैसे हम इस सरकार पर विश्वास कर सकते हैं । माननीय चन्द्रभानु गुप्त और माननीय कमलापति त्रिपाठी यहां की कांग्रेस के २ बड़े महारथी हैं । वे आपस में झगड़ा करते हैं, लेकिन आप विश्वास रखिए वे दोनों ही लोकतंत्र के पोषक हैं जो लीलाधर के अंशावतार हैं और जो शांत होते हुए इस प्रकार का रस लेते हैं लेकिन इस धर्मसंकट में परस्पर विरोध होने के बावजूद भी हमारा पूरा विश्वास है कि माननीय चन्द्रभानु गुप्त और माननीय कमलापति त्रिपाठी आपके सामने साबित कर देंगे कि यद्यपि देह दो है किन्तु प्राण एक है, हमारा यह निश्चत विश्वास है ।

*श्री दीपनारायणसिंह (जिला फतेहपुर)--

इस समय जो अविश्वास का प्रस्ताव आया है मंत्रि मंडल के विरुद्ध वह स्वयं मंत्रि मंडल की आपस की लड़ाई का प्रमाण है। मंत्रि मंडल के अन्दर जो गन्दगी है उसी का स्वरूप रखने के लिये विरोधी पक्ष ने यह प्रस्ताव रखा है ताकि जब पाकिस्तान का हमला हो रहा है, हमारा देश विकट संकट में फंसा हुआ है उस समय, इनकी सच्ची शक्ल को जगाये और ताड़ना दे। मैं ने इस प्रस्ताव को यही समझा। कोई भी लड़ाई नेतृत्व, जनबल और सैन्यबल से ही लड़ी जाती है। अगर नेतृत्व ठीक नहीं है तो नेता देश को खंदक में डाल सकता है, इसलिये ऐसे नेता को सदा समाप्त करना पड़ता है। इतिहास में हमेशा यह देखा गया हैकि गद्दार नेताओं को, गुटबन्दी पैदा करने वाले नेताओं को, देश की जनता ने संकट के समय खत्म कर दिया है। आज अविश्वास का प्रस्ताव उस समय में आया है और यह लड़ाई का खतरा महीनों पहले था, लेकिन कितनी चरमसीमा तक मंत्रि मंडल में स्वार्थ बढ़ गया कि एक दूसरे पर चरित्र का आरोप लगाने लगे, महिलाओं तक को भी आरोप लगाने से नहीं छोड़ा। मंत्रि मंडल के लोग जब इतने नीचे स्तर तक उतर आये हों भला वह मंत्रि मंडल कैसे अपने में सुधार कर सकता है, एकता ला सकता है? क्या आप संकट काल में देश का नेतृत्व कर सकते हैं? मैं जानता हूं इनमें से अधिकांश ऐसे आदमी हैं जिनके साथ हमने अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी है, जेलें काटीं, माननीय गुप्ता जी और कमलापति स्वयं बड़े त्यागी रहे हैं, लेकिन कितने शरम की बात है कि हमारे अन्दर पद लोलुपता आपस में इतनी बढ़ गयी है कि उसके कारण आपस में लड़ते हैं, एक दूसरे पर गंदे से गंदा आरोप लगाते हैं। देश सुरक्षा का काम, योजना, कृषि उत्पादन, औद्योगिक उत्पादन का काम कैसे ऐसे मंत्रि मंडल के नेतृत्व में चल सकता है जो स्वयं अपने में लड़ रहा हो? आज माननीया मुख्य मंत्री जिस मंत्रि मंडल की नेता हैं जिसमें चारों तरफ घोड़े अपनी अपनी तरफ खींच रहे हों तो कैसे वह उस रथ का संचालन कर सकती हैं, इसीलिये वे आज अचेत हो गयी और यहां सदन में मौजूद नहीं है। क्योंकि वे सोचती हैं मेरी खुद इज्जत आबरू इन्होंने ले डाली है, ये वे लोग हैं जो अपने मुख्य मंत्री तक की इज्जत नहीं करते हैं, जो उत्तर प्रदेश के कांग्रेस के प्रध्यक्ष की इज्जत नहीं करना चाहते हैं। विधान मंडल के नेता के अधीन नहीं चलना चाहते। बिल्कुल उच्छृन्खल हो रहे हैं जिन पर लगाम लगाने की अति आवश्यकता है। माननीय गोंदासिंह जी, आप बड़े अच्छे घोड़े हैं, लेकिन खराब नस्ल के घोड़ों में जा कर खराब हो गये है इसलिये खराब घोड़ों की लगाम कसने की जरूरत है। इसलिये यह अविश्वास का प्रस्ताव जब आप एक दूसरे पर कीचड़ उछालते, है, झगड़ते हैं तो फिर कलेक्टर और एस० पी० आपका कहा कैसे मानेंगे?

मैंने भी आजादी की लड़ाई लड़ी है १५ साल तक जेल काटी है और २१ साल वकालत की है। मैं विश्वास दिलाता हूं कि पाकिस्तान से लड़ने के लिये हम सभी तैयार हैं, लेकिन आप अपने को शुद्ध कर लें, बेईमान और भ्रष्ट आदमी मंत्रिमंडल से निकाल बाहर किये जायं। आज संकट काल है और इस संकट काल में केन्द्र तथा प्रदेश में मिली जुली राष्ट्रीय सरकार होनी चाहिये। अगर आप इतना भी करने को तैयार नहीं हैं तो जो दो ग्रुप्स आज प्रदेश में हैं उनमें ईमानदार लोग जो हों उनको लेकर मिनिस्ट्री बनाइये और जो अगुवा बने उसके अनुशासन में रह कर काम करिये। गोविन्दसहाय रूलिंग पार्टी पर आक्षेप लगाते हैं कि वह पूंजीपतियों से पैसा ले कर फर्जी मेम्बर बना रही है और रूलिंग पार्टी संगठन पर यह आरोप लगा रही है कि संगठन फर्जी मेम्बर बना रहा है। एक दूसरे पर भ्रष्टाचार के आरोप लगा रहे हैं और इनके द्वारा चुनी हुई नई सरकार ६७ में भी बनेगी। समय का तकाजा है कि जनता में ऐसे संकट काल के समय स्फूर्ति भरने के लिये, नया जोश लाने के लिये सबसे पहला काम हम यह करें कि मंत्रिमंडल में जो भ्रष्ट लोग हैं उनको निकाल कर उसे शुद्ध करें। ऊपर से आज शुद्ध करने की जरूरत है जबकि नन्दा जी नीचे से शुद्ध करना चाहते हैं। मैं आज असेम्बली में अप्रत्यक्ष रूपसे कांग्रेस के प्रेसीडेंट

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

कामराज से, लालबहादुर शास्त्री जी से और नन्दा जी से अपील करता हूं कि अपने भ्रष्ट घोड़ों के जरिये इस रथ को न चलायें, शुद्ध घोड़ों के जरिये चलायें ताकि वे विजय प्राप्त कर सकें, तेज गति से चल सकें ।

१८ साल के भ्रष्टाचार का नतीजा यह हुआ कि आज गेहूं १८ छटाक का, चावल आध सेर का और घी डेढ़ छंटाक का हो गया है। क्या इसी घासलेट को खा कर हम विजयी बन सकेंगे ? फिर कौन मिनिस्टर रहे इसको लेकर सुचेता जी से खींचतान दोनों गुटों में होती रहती है। मेरा कहना है कि मुख्य मंत्री को हक है कि उसी आदमी को मंत्रिमंडल में रखे जिस पर उनका विश्वास हो, यह नहीं कभी इधर वाले फुफकारें और कभी उधर वाले फुफकारें। सुचेता जी ईमानदारी के साथ अपने मंत्रिमंडल को सुधारें। मैं उन लोगों में से हूं जो चाहते हैं कि माननीया सुचेता जी आयें और अपने मंत्रिमंडल में से अशुद्धता को निकालें और शुद्धता लायें। संसार का इतिहास बताता है। आपने इगलैंड को प्रजातंत्र की माता माना है। यह भी आप लोगों को मालूम है कि महारानी विक्टोरिया का स्वर्ण युग रहा है। लेकिन आज माननीया सुचेता जी के लिये क्या कहा जा रहा है ? यह बड़े शर्म की बात है। उपाध्यक्ष जी, यह बातें बड़ी गम्भीर हैं। इन गम्भीर बातों को देखकर मुझ जैसे आदमी के दिल में और आत्मा में माननीय बनारसीदास जी के प्रति बड़ा भारी प्रेम है, लेकिन उनका प्रेम कानपुर के मिल मालिकों से है। मेरी उनसे बहुत ज्यादा मुहब्बत है, क्योंकि वे हमारे पुराने जेल के साथी हैं और स्वतंत्रता संग्राम के सच्चे सैनिक हैं। फिर भी मैं कहूंगा कि वे जरा अपनी नीति को ढीली कर दें और अक्ल की गांठ को खोल दें। यह नहीं होना चाहिये कि मैं उन पर भद्दे चार्ज लगाऊं और वे मुझ पर चार्ज लगायें। यह कहां तक ठीक हो सकता है ? अब आप लोग ही बताइये कि ऐसी स्थिति में कौन महिला हमारे यहां आयेगी। इन लोगों ने वह वातावरण पैदा कर दिया है जिसने बता दिया है कि हम लोग अपनी मां बहिनों की इज्जत नहीं रखते। जब हम अपनी मां बहिनों की इज्जत नहीं कर सकते तो फिर भारत माता की इज्जत कैसे रख सकते हैं। इसलिये आज समय का तकाजा है कि हमारे यहां का शुद्ध मंत्रिमंडल हो और लोगों का शुद्धता का नारा हो। अशुद्ध लोगों को मंत्रिमंडल से निकाला जाय, चाहे वे कितने ही बड़े से बड़े आदमी क्यों न हों।

इस संकट कालीन स्थिति में आप लोग वनस्पति घी खाना खत्म करके शुद्ध देशी घी वही भैंस वाला पुराना घी खाना शुरू करें। नेगी जी का खुद का घी तो वनस्पति का घी हो होगा, पर होना चाहिये उनके बाबा वाला घी। हमारे यहां से अशुद्धता खत्म हो और शुद्धता के साथ भारत माता की रक्षा करने का प्रयास करें। मैं फिर से कहता हूं कि आप हम लोगों को बुलाइये और एक जगह बैठकर बातचीत कीजिये और कहिये कि हम तुमको यह काम देते हैं। अगर हम ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ संकट इस काल में काम न करें तो फिर कहिये कि हम नालायक हैं। आपका दिमाग, दिल और बोली अलग है। इन तीनों को आप एक कीजिये। जीत तभी होती है जब आपस में एकता हो और दुश्मन में फूट हो। आज पाकिस्तान को हराने के लिये हमें चाहिये कि उनके अन्दर दुश्मन पैदा कर दें।

मैं हमेशा से कहता आया हूं जवाहर लाल जी और लालबहादुर जी से कि अपने पुराने साथी खान अब्दुल गफ्फार खां का साथ दो जिसने देश की आजादी की लड़ाई लड़ी थी और पाकिस्तान बनने के बाद भी सच्ची आवाज उठाई जिसके कारण वे वर्षों जेल के सींकचों में रहे। आज वह काबूल में है और पख्तूनिस्तान का नारा दे रहे हैं। क्या हमारी सरकारनहीं कर सकती थी। अपने पुराने साथी के नेतृत्व को मजबूत करती और पख्तूनिस्तान के नारे को यह मजबूत करती। लेकिन आज यह तो अपने दल में ही विभक्त हैं। इनके दल में ही एकता नहीं है। फिर यह कैसे हमारा सहयोग ले सकते हैं ? क्या हम अपना सहयोग इनको देकर अपने को भ्रष्ट करें ? जयहिन्द।

श्री रामलखन शुक्ल—

आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, यह सर्व विदित है कि विरोधी पक्ष द्वारा अविश्वास का प्रस्ताव तथा अन्य तरीकों से सरकार को ठीक रास्ते पर लाने का प्रयास करना एक सर्वमान्य सिद्धांत है।

[श्री रामलखन शुक्ल]

परन्तु जहां ऐसी व्यवस्था व मान्यता है उनके साथ ही साथ परिस्थितियों की शर्त, वातावरण की शर्त, और आवश्यकता की अनुकूलता की शर्त भी सदैव ही लगी रहती है। मैं अत्यन्त नम्रतापूर्वक नेता विरोधी पक्ष तथा अपने अन्य माननीय मित्रों से निवेदन करना चाहता हूं कि क्या ईमानदारी के साथ अपना हृदय टटोलने के बाद वे इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि यह उपयुक्त समय है सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव लाने का। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि वे ईमानदारी के साथ इस पर विचार करेंगे तो मेरे प्रश्न का उत्तर निषेधात्मक ही होगा। मैं यह समझता हूं और मेरी यह मान्यता है तथा दृढ़ विश्वास है कि देश को बचाने के लिए सरकार और सरकारी पक्ष की जितनी जिम्मेदारी है, तथा देश के लिए मर मिटने की जितनी उनकी लालसा व कामना है उससे किसी भी अंश में विरोधी पक्ष की कामना कम नहीं है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि क्या यह ऐसा अवसर है जब कि आपने अविश्वास के प्रस्ताव को यहां पेश करके उस पर विचार करने के लिए वातावरण को उपादेय समझा?

माननीय नेता विरोधी दल ने अविश्वास के प्रस्ताव पर बोलते हुए अपने जवानों को बधाई दी तथा केन्द्रीय सरकार की भी तारीफ की। परन्तु मेरा निवेदन यह है कि ऐसे अवसर पर केन्द्रीय सरकार के हाथों को मजबूत करने का साधन तथा अपने जवानों के मनोबल को ऊंचा करने का सब से अच्छा तरीका यही समझा कि अपने घरों को ही बर्बाद कर दें, अपने घरों को ही बुरा कहें तथा शासन के इन्तजाम को ही बुरा कहें कि वह नेस्तनाबूद हो जाय? यदि यह उचित है तो यह सोचने की बात है कि इस तरह से हम अपनी लोकतांत्रिक संस्थाओं को कहां तक बचा सकते हैं। मैं इस बात को मानता हूं कि विरोधी पक्ष को अविश्वास का प्रस्ताव लाने का अधिकार है, लेकिन अविश्वास के प्रस्ताव की गम्भीरता का भी अनुभव किया जाना चाहिए। साधारण छोटी-छोटी बातों पर सरकार के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव लाने से उसका जनता के ऊपर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। वैसी हालत में जनता समझने लगती है कि इस देश या प्रदेश की सरकार तथा विरोधी पक्ष दोनों ही नालायक हैं। मैं आपसे पूछता हूं कि यदि यहां कोई सरकार न रहे तो क्या माननीय विरोधी पक्ष के सदस्य सरकार विहीन प्रदेश को चलाने की कल्पना करते हैं? यदि विरोधी पक्ष की यह कल्पना हो कि यहां सरकार न रहे तो क्या उसके सामने कोई आल्टरनेटिव सरकार की कल्पना है? सरकार के न रहने पर अराजकता की कल्पना की जा सकती है और उस परिस्थिति में नतीजे क्या होंगे इसकी भी कल्पना क्या विरोधी पक्ष के माननीय सदस्यों ने की है?

(व्यवधान)

जहां तक केरल जैसी स्थिति होने की बात है, इस सम्बन्ध में तो आगे अवसर आने पर मैं बतलाऊंगा।

श्रीमन्, मैं कह रहा था कि अगर राजनीतिक इतिहास को देखा जाय तो क्या आज के अवसर पर यह आवश्यक था कि इस सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव लाया जाय? मैं समझता हूं कि यदि माननीय सदस्य इस पर गम्भीरता से विचार करेंगे तो विरोधी पक्ष को ऐसे अवसर पर शासक दल का हृदय से समर्थन करना चाहिए। जहां कहीं भी ऐसे संकट के अवसर आए हैं वहां विरोधी पक्ष ने शासन दल के साथ बराबर ही सहयोग किया है। माननीय विरोधी पक्ष के सदस्य शायद यह समझते हैं कि सरकार के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव उपस्थित करके वे सरकार के विपरीत जनता के ऊपर प्रभाव डाल सकेंगे और इसी लिए उन्होंने बार-बार जनता का रेफरेंस अपने भाषण में दिया। इस बात को बतलाने का उन्होंने प्रयास किया कि उनका यह काम जनता के हित में है, जनहित में है। मैं उनसे दृढ़ता के साथ निवेदन करना चाहता हूं कि क्या आज इस बात का अवसर नहीं था कि हम जगह-जगह सभायें करके जनता को इस बात को समझाते कि ऐसे संकट के समय हम अपने छोटे-मोटे मतभेदों को भूल जायं और अपने द्वारा प्रस्तुत अविश्वास के प्रस्ताव को वापस लेकर उनसे कह सकें कि देखो, इस राष्ट्रीय संकट के समय

हमने भी सरकार के प्रति अविश्वास के प्रस्ताव को वापस ले लिया है ? उनको चाहिए था कि राष्ट्रीय संकट के निवारण के लिए वे सरकार से सहयोग करने का शुभारम्भ करते और जगह-जगह सभायें करके जनता को समझाते तथा उनका नेतृत्व करते कि सब लोग सरकार को हर तरह से सहयोग दें। मैं आपसे पूछता हूं कि इस राष्ट्रीय संकट के अवसर पर आपके सहयोग देने का क्या यही स्वरूप है ? क्या इस मौके पर आप हमको लताड़ कर और कोड़ेबाजी करके ही अपने सहयोग का सबूत देना चाहते हैं ? आज जनता के अन्दर अगर आप यह खयाल पैदा करें कि इस देश की सरकार इस लायक नहीं है कि हम उसे सहयोग दे सकें, तो यह कोई सहयोग देने का स्वरूप नहीं है। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इस प्रश्न पर आप पुनर्विचार करें। श्रीमन्, मैं ऐसा समझता हूं कि इस अवसर पर अविश्वास का प्रस्ताव ले आने का जनता पर बड़ा बुरा असर पड़ेगा, हमारे विरोधी दल के माननीय सदस्यों और हमारे मित्रों के बारे में लोग क्या सोचेंगे। अभी हमारे एक वक्ता महोदय ने कहा कि वह हमको ठीक रास्ते पर ले आने के लिए यह प्रस्ताव कर रहे हैं। अगर ठीक रास्ते पर लाने के लिए यह कर रहे हैं तो क्या ठीक रास्ते पर लाने का एक मात्र यही उपाय था जो इस अवसर पर अपनाया गया है, या ठीक रास्त पर लाने के लिए अविश्वास के प्रस्ताव को पेश करने का यही उपयुक्त अवसर था ? आज आवश्यकता इस बात की थी कि जनता का साहस और मनोबल बढ़ाते तथा सरकार के प्रति उनका विश्वास और सहयोग बढ़ाते, जिससे एक ऐसा वातावरण बनता, जिसके फलस्वरूप, राष्ट्रीय संकट का सामना करने की शक्ति हमारे पास होती, जिसकी आज सर्वाधिक आवश्यकता है। किन्तु आपने अपने इच्छित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए ठीक रास्ते को न पकड़कर एक गलत रास्ता अपनाया है जिससे हमारा नुकसान हो सकता है, राष्ट्र के संकट से हमारा ध्यान हट सकता है। आपने तो उस डाक्टर के समान यह कार्य किया है जो डाक्टर मरीज को देखकर उसका जो निदान है उसकी दवा न देकर दवा और कुछ देता है और अपने मरीज से कहता है कि तुम्हारी दवा नहीं हो सकती और तुम्हारी हत्या कर देनी चाहिए।

श्रीमन्, यह भी कहा गया कि ऐसे मौके पर हम उनके साथ असहयोग करते हैं, उनके सहयोग की कोई आकांक्षा नहीं रखते हैं और उनके सहयोग को मांगने के लिए कोई इसके लिए उनसे प्रार्थना नहीं की गयी। श्रीमन्, यह काम केन्द्रीय सरकार ने प्रारम्भ कर दिया है। केन्द्रीय सरकार ने सभी दलों के लोगों को बुलाया, उनकी मीटिंग की और उनसे विचार विमर्श भी किए, केन्द्रीय सरकार ने प्रदेशों के मुख्य मन्त्रियों को भी इस हेतु बुलाया है, उनकी मीटिंग हो रही हैं। मेरा विचार है कि वहां से लौटने के बाद मुख्य मन्त्री जी आप लोगों के सहयोग की अवश्य आकांक्षा करेंगी। जब पहले इस प्रकार का संकट आया था तो उस समय भी सरकार ने आप से सहयोग मांगा था और आपने सहयोग दिया भी था। ऐसे समय में ऐसी कोई भी प्रजातन्त्रीय सरकार नहीं हो सकती जो कि विरोधी पक्षों के माननीय सदस्यों को, जनता के प्रतिनिधियों को साथ लेकर न चले, उनके विचारों का आदर न करे। पहले से ही इस बात की कल्पना कर लेना कि सरकार हमारा सहयोग नहीं ले रही है, ठीक नहीं है। अब भी मौका है, इस आदरणीय सदन से ऐसा वातावरण पैदा किया जा सकता है कि हम सब एक हैं।

अभी कहा गया कि कांग्रेस पार्टी में मतभेद और फूट है, किन्तु क्या यह कमी आपके अन्दर नहीं है, इस बात पर आपको ध्यान देना चाहिए। इसका एक मौका था। अविश्वास का प्रस्ताव आया, उसके बाद डेवलपमेंट हुये, घटनाएं घटीं और आज अविश्वास का प्रस्ताव पेश होने के पहले बातें हुईं, अम्बाला और पटियाला आदि में दुश्मनों ने अपने छापामार पैराशूट उतारे हैं और कई महत्वपूर्ण हमारे स्थानों पर दुश्मन द्वारा जोरों की बमबारी भी की गयी। इन तमाम विपरीत संकटों का हमारे ऊपर क्या असर पड़ा और विरोधी पार्टियों पर क्या असर पढ़ा और जनता पर क्या असर पड़ रहा है, इसे जनता जानने के लिये लालायित है। मैं अपने मित्रों से पुनः उम्मीद करता हूं कि वह इस पर ठंडे दिल से विचार करेंगे कि अब इस प्रस्ताव की कोई आवश्यकता नहीं है। शत्रु के साथ जिस तीव्रता से हमारा संघर्ष आगे बढ़ रहा है,

[श्री रामलखन शुक्ल]

उसको देखते हुए वातावरण दूषित न हो, इस बात की जिम्मेदारी हमें और आप को लेनी पड़ेगी। हम भले ही इसके लिए कोई कारण दे लें, हम भले ही एक दूसरे को कहें, लेकिन जनता हमें क्षमा नहीं कर सकती, भावी इतिहास हमें क्षमा नहीं कर सकता। भावी इतिहासकार जहां सरकार की आलोचना समालोचना करेगा वहां पर वह यह भी लिखेगा कि जिस दायित्व के साथ विरोध पक्ष को काम करना चाहिये था, वह भावना उनमें दिखाई नहीं पड़ी। उनकी यह बात आप को बुरी लगे, लेकिन इतिहासकार इसे लिखेगा और भावी सन्तानें इसे समझेंगी।

इन शब्दों के साथ, श्रीमन्, मैं आशा करता हूं कि माननीय नेता विरोधी दल इस अविश्वास के प्रस्ताव को वापस ले लेंगे और मैं इस अविश्वास के प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्री भगवानदास यादवेन्दु (जिला आगरा)—

उपाध्यक्ष महोदय, माननीय नेता विरोधीदल ने सदन के सामने आज जो अविश्वास का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, उसका मैं समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। किन्तु आज संकट की घड़ी में और इस प्रदेश और देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए इस प्रस्ताव को लाना पड़ा, उसके कारण उन्होंने स्वयं आपके सामने स्पष्ट रूप से बता दिये और उन कारणों को नजरन्दाज नहीं किया जा सकता। साथ ही इसके मैं अपने दल की ओर से देश के उन बहादुर जवानों को जिन्होंने सीमाओं की रक्षा के लिए, छम्ब और हाजी पीर पास और पंजाब के अन्दर मोर्चों पर अपनी जानें दी हैं, श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और जवान जो मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सब कुछ छोड़ कर घमासान युद्ध के बावजूद अपने स्थान पर लड़ रहे हैं, उनकी मैं दाद देता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, अभी यहां व्याख्या की गयी कि पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी में विरोधी दल की जिम्मेदारी सरकार पर अंकुश रखने की होती है। यह प्रजातंत्र की सर्वमान्य मान्यता है और हमारी सरकार के जो भूतपूर्व उपमंत्री रहे हैं उनमें से कई ने अपने भाषणों में दोहराया है। मैं भी यही कहना चाहता हूं कि सरकार के और मंत्रियों के आचरणों को ठीक रखना विरोध पक्ष का कर्त्तव्य है। यही तो बात है कि आज वे भोग विलासिता, निष्कर्मण्यता, स्वार्थ और घरेलू विवाद में फंसे हुये हैं इसीलिये आज विरोधी दल ने जनता के, अधिकारों की रक्षा के लिये और मंत्रिपद पर अंकुश रखने के लिये इस महान् संकट की वेला की आवश्यकता को समझकर ही यह अविश्वास प्रकट करने का प्रस्ताव रखा है।

अभी पूर्ववक्ता जी कह रहे थे कि केन्द्रीय सरकार ने विरोधी दलों से सहयोग की अपील की है लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि आप क्या कर रहे हैं? आपने किस मनोवृति का परिचय यहां पर दिया है। आपको यह ज्ञात होना चाहिये कि केन्द्रीय सरकार के हाथ में रेलवे है, यातायात है तो यहां भी जनता के मनोबल को बढ़ाने में खेतों में, गांवों में, कारखानों में, मंदिरों में, मसजिदों में और गुरुद्वारों में हम सब के सहयोग की आवश्यकता है और उसको हमें बनाना होगा। माननीय मुख्य मंत्री जी इस सदन की नेता हैं। इस प्रदेश की मुख्य मंत्री हैं। उन्होंने महसूस किया होता, आज ७ दिन हो गये, पहली तारीख को यह प्रस्ताव आया और आज ७ को पेश हो रहा है इस बीच में अगर उन्होंने प्रयास किया होता कि यह प्रस्ताव न रखा जाय तो विरोधी दल भी विवश होता इन विचारों पर विचार करने के लिये, लेकिन सरकार ने तो हमेशा विरोधी दलों की उपेक्षा की है, उन तमाम संसदीय परम्पराओं की उपेक्षा की है और प्रजातंत्रीय परम्पराओं पर कुठारघात किया है। केन्द्र में, पार्लियामेंट में कोई सदस्य कुछ कहता है तो उस पर इमीडीयेट होता है, प्रधान मंत्री के पास कोई पत्र लिख दो उसकी तुरन्त जांच होती है, कार्यवाही होती है, लेकिन हमारे मंत्रियों का यह हाल है कि माननीय सदस्य लिखते हैं बड़ी-बड़ी घटनाओं के बारे में, लेकिन मंत्री जी परवाह नहीं करते, उसको रद्दी कागज की टोकरी में फेंक देते हैं और दो-दो महीनों तक जवाब नहीं देते। यहां लेखपाल और थानेदार की बात को मान्यता दी जाती है लेकिन सदन में सदस्यों द्वारा जिम्मेदार से जिम्मे-

वार कही गयी बातों की भी परवाह नहीं की जाती है। मैं कहना चाहता हूं कि जिस वक्त इलाहाबाद की घटना के ऊपर सदन में माननीय गृह मंत्री के सामने खून से लथपथ कपड़े रखे गये थे तो क्या उन्होंने विश्वास उन बातों पर किया था? मैं पूछना चाहता हूं गृह मंत्री जी से कि जिस समय नवलकिशोर जी ने मांग की थी नरही की घटना के सम्बन्ध में इन्क्वायरी करने के लिये, तो क्या उत्तर दिया था? मैं पूछना चाहता हूं कि कि गोरखपुर में जिस समय मिल मालिकों से मिल कर पुलिस ने गोली चलायी थी और उस घटना के विषय में जुडीशल इन्क्वायरी की मांग की गई तो क्या माननीय मंत्री जी ने उसको स्वीकार किया था? उन्होंने क्यों उसको स्वीकार नहीं किया? मैं पूछना चाहता हूं कि माननीय मंत्री जी अगर अपने ऊपर विश्वास करना चाहते हैं तो वर्तमान मंत्रिमंडल को हमारे सामने प्रजातान्त्रिक रूप से सब बातों को रखना चाहिये, हम उनकी बातों को ध्यान से सुनेंगे और सम्मान करेंगे और उनकी बात को मानेंगे, लेकिन मंत्रिमंडल अपने कर्त्तव्य में गिरा है और उसने सामन्तशाही के तरीकों को अपनाया है। इसीलिये ऐसे मन्त्रियों की हमको परवाह नहीं है। जिस प्रकार से ब्रिटिश राज्य में सामन्तशाही मनोवृत्ति से काम चलता था उसी तरह से ये चल रहे हैं। इसलिये इस प्रदेश की जनता को प्रजतांत्रिक तरीकों से और दूसरे तरीकों से इस सरकार को यहां से निकाल कर अलग कर देना चाहिये।

मैं आपके सामने यह रखना चाहता हूं कि पुलिस विभाग में जिस तरह से आज हो रहा है उस की शिकायतों को देख कर ही यह अविश्वास का प्रस्ताव आया है। हमारे प्रदेश में ५४ जिले हैं उनमें ६४८ थाने हैं। हर थाने के ऊपर अगर ३ घटनायें भी होती हैं तो इस तरह से १९४४ घटनायें हो गई। उनमें से केवल ५०० रिपोर्ट लाज होती हैं। उसमें भी १०० पर कार्यवाही होती है बाकी ४०० बेकार पड़ी रहती हैं। १३०० घटनाओं को हमारा पुलिस विभाग छिपाता है। इससे उनकी अकर्मण्यता मालूम होती है। इसलिये मैंने निवेदन किया कि सरकार अपनी विलासिता और सुविधा में लगी है। मैं कह सकता हूं कि इस प्रकार का शासन और इस प्रकार की सरकार जनता के बीच में ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकती है।

जहां तक देश की सुरक्षा का सवाल है अभी हमारे समाजवादी भाई ने कहा था कि सरकार में अविश्वास करना कोई गद्दारी नहीं है। देश के प्रति अविश्वास करना गद्दारी है। सरकार और उधर के बैठनवाले लोग हमारे ऊपर विश्वास नहीं करते हैं, लेकिन तब भी हम अपने देश की रक्षा करने के लिये तत्पर हैं। मैं यह कह सकता हूं कि आप ने इस प्रदेश में कितने प्रिवेन्टिव मेजर लिये? इस युद्ध के चलते भी एक सप्ताह से अधिक हो गया और युद्ध ने भयानक शक्ल अख्तियार कर ली है, लेकिन आपने कौन सा ऐसा काम अभी तक किया है? हिन्दुस्तान के पूर्वी साइड में कुछ घटनाएं हुई हैं और करांची पर भी घटना भयानक हुई है। इस तरह की घटनाओं को एक सप्ताह हो गया, लेकिन हमारी सरकार ने अपने प्रदेश में सिविल डिफेन्स की तैयारी के लिये कितने कदम उठाये हैं। कोई मंत्री आकर कहे कि हमने इतने कदम उठाये हैं। मैं कहता हूं कि यहां पर बहुत से पाकिस्तान के लोग हैं जो पासपोर्ट से आये हुये हैं। वे यहां पर तरह-तरह की खबर सुनते हैं। रोज मैं देखता हूं कि शाम को ८॥ बजे के बाद हिन्दुस्तान की खबर खत्म होती है, उसके बाद पाकिस्तान से जनरल अयूब का समाचार सुनते हैं। मैं आगे और कह दूं कि अगर कोई पाकिस्तानी नागरिक जो मंत्रि परिषद् में किसी सदस्य का रिश्तेदार हो तो एक साधारण व्यक्ति भी हिम्मत कर सकता है कि वह पुलिस को रिश्वत दे कर यहां की नागरिकता प्राप्त कर ले। अगर यह गलत है तो आप जवाब दें। अगर यह बात सही है तो सरकार को उस के लिये स्टेप लेना चाहिये। लेकिन सरकार आज ऐसा कर नहीं पा रही है।

जहां तक अविश्वास के प्रस्ताव का संबंध है वह अपने में वजन रखता है। उसमें सच्चाई है और उसके पीछे एक जन भावना है। उसके पीछे करोड़ों इन्सानों की जो सरकार के रवैये से, भय से असंतोष, बीमारी, और बेकारी के शिकार हैं, उनकी भावना है। लेकिन मैं स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि इसके पीछे कोई दुर्भावना नहीं है। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने बार बार कहा था कि जब चीन का आक्रमण हुआ तो देश की रक्षा के लिये जितना सहयोग

[श्री भगवानदास यादवेन्द्र]

गरीबों से मिला था, उतना बड़े आदमियों से नहीं मिला। इस प्रदेश की कई बड़ी-बड़ी मिलें बन्द हैं, लेकिन सरकार का उन पर कोई नियंत्रण नहीं है, वह उनको चलवा नहीं सकती। एक तरफ आप मिल बन्द करायें और दूसरी तरफ वक्तव्य यह दें कि मजदूर बेकार हैं, उनको भड़का कर हड़ताल करा दी गयी है जब कि शास्त्री जी दूसरी तरफ ऐलान कर रहे हैं कि हमको उत्पादन बढ़ाना है, ऐसी स्थिति में मैं श्रम मंत्री जी से कहूंगा कि उनका यह विश्लेषण कहां तक सही है? इन तमाम बातों को देखते हुए इस संकट कालीन स्थिति में मंत्रि परिषद् को इस्तीफा देना चाहिये और मैं समझता हूं कि इस सदन को बन्द कर देना चाहिये। इस पर ६,००० रुपया रोज खर्च होता है। आपकी मैजारिटी है, अगर आप सदस्यों को राजी कर लें तो यह हो सकता है। मंत्रिगण सोना नहीं खाते। आप देखें कि पिछली बार मंत्रियों ने क्या-क्या दिया? इस समय भी मंत्रिगण अपने व्यक्तिगत स्वार्थों में रत हैं। अगर ये चाहें तो अपनी पूरी तनख्वाह राष्ट्र को दे सकते हैं। कल माननीय कमलापति जी ने ५,००० रुपया सादिक साहब को भेजा है। आप भी इस तरह का उदाहरण प्रस्तुत करें। किन्तु आप लोगों में आत्म-शक्ति नहीं है, आप वास्तव में आज उस तरह के हुक्मरां हो गये हैं जैसे सामंतवादी हुआ करते थे। जब राजा भोगविलास में पड़ जाता है तब प्रजा भी वैसी ही हो जाती है। आज इस प्रजातंत्र में मंत्रिगणों का आचरण गिर गया है, वे भ्रष्ट हो गये हैं और विरोधी दल जनता को सही दिशा देने के लिए तथा सरकार को सही दिशा में चलाने के लिये आवश्यक समझता है कि उसके खिलाफ इस प्रकार का अविश्वास का प्रस्ताव लाये और प्रजातंत्र में जनता की आस्था स्थापित करे। यह तभी हो सकता है जब जनता को पता लग जाय कि सरकार तानाशाह नहीं है और जनता के प्रतिनिधियों को आजादी के साथ अपनी भावनायें व्यक्त करने की स्वतंत्रता है।

श्री कृष्णचन्द शर्मा (जिला झांसी)—

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं विरोधी दल के नेता द्वारा जो अविश्वास का प्रस्ताव इस मंत्रिपरिषद् के विरुद्ध लाया गया है उसका विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं। श्रीमन्, इस बात को पूर्णरूप से जानते हुए भी कि राज्य, राष्ट्र और सरकार में राजनीति शास्त्र के अनुसार भेद है और यह बात जानते हुए भी कि कोई व्यक्ति सरकार की तीव्र आलोचना करने के बाद भी राष्ट्र के प्रति वफादार हो सकता है और राष्ट्र की सेवा कर सकता है, मैं समझता हूं कि आज यह प्रस्ताव नितान्त अनुपयुक्त है और इस समय नहीं आना चाहिए।

यह बात सही है कि गत महायुद्ध के अवसर पर नैवाइल चैम्बरलेन को अपदस्थ करके विंस्टन चर्चिल को लाया गया, लेकिन वह पृष्ठभमि दूसरी थी। इंगलैंड की उस समय की और आज भारतवर्ष की और इस प्रदेश की स्थिति दूसरी है।

(व्यवधान)

राजनीति का छात्र होने के नाते अधिक नहीं तो अपने मित्रों के बराबर अध्ययन मैंने भी किया है। उस समय जो तीव्र मत-भेद इंगलैंड में था वह यह था कि चैम्बरलेन हिटलर के आगे घुटने टेक चुके थे और कंजरवेटिव पार्टी जिसके एक नेता चर्चिल भी थे वह समझती थी कि आत्मसमर्पण करने के बजाय हिटलर से लोहा लेना चाहिए। यह तीव्र और सैद्धान्तिक मतभेद था जिसके आधार पर नैवाइल चैम्बरलेन को हटा कर चर्चिल को लाया गया। श्रीमन्, मैं समझता हूं कि इस देश और प्रदेश में ऐसी कोई स्थिति पैदा नहीं हुई है, ऐसा कोई सैद्धान्तिक मतभेद पैदा नहीं हुआ है। ऐसी कोई कल्पना भी फील्ड मार्शल अयूब के समक्ष झुकने की नहीं की गयी है। इसलिए यह आवश्यक है कि जब युद्ध भारतवर्ष के किनारे पर आ गया है, जब कि युद्ध की ज्वालाएं बड़े नगरों में फैलती जा रही हैं, जब कि भारतवर्ष की आजादी खतरे में है, ४० करोड़ों लोगों का जीवन-अस्त-व्यस्त होने को आ गया है, ऐसे समय आवश्यक है कि हम एक आवाज के ऊपर, एक झंडे के नीचे, एक नेतृत्व के नीचे खड़े हो कर फील्ड मार्शल अयूब का मुकाबला करें।

सरकार को बदलने की बात राष्ट्र के प्रति विश्वासघात नहीं है, यह सैद्धान्तिक तथ्य है, लेकिन कभी-कभी ऐसे अवसर आते हैं राष्ट्र के जीवन में जबकि सरकार को बदलने की बात राष्ट्र के प्रति वफादारी की बात नहीं कही जा सकती। आज इस देश में ऐसी ही स्थिति है। अगर इस सरकार को बदला जाय, श्री लाल बहादुर शास्त्री की सरकार को बदला जाय, सुचेता कृपालानी की सरकार को बदला जाय तब स्थिति यह होगी कि कोई दूसरा विकल्प इस देश और प्रदेश के सामने नहीं होगा। (श्री ब्रह्मदत्त मायर के कुछ कहने पर) श्रीमान्, मायर जी, मैं जानता हूं कि आलोचना आप यहां पर कर सकते हैं, लेकिन आज की परिस्थिति में आप इस प्रदेश के शासन का भार संभाल नहीं सकते हैं। तो जब कोई आल्टरनेटिव सरकार बनाई ही नहीं जा सकती है, कोई राजनीतिक दल, कांग्रेस के बराबर संगठित और शक्तिशाली इस देश और प्रदेश में नहीं है तब यह नितान्त सत्य है कि इस देश की सरकार को चाहे वह जैसी ही हो, इस संकट के समय हिला देने के अर्थ इस देश और प्रदेश में अराजकता पैदा करना है और फील्ड मार्शल अय्यूब को इससे ज्यादा और क्या खुशी होगी कि देश में अराजकता के बीज बोये जायं, शासन की निन्दा हो, आलोचना हो, और जन-जीवन का संघर्ष शिथिल हो, कमजोर हो।

श्रीमन्, आज इस देश एवम् प्रदेश की राजनीतिक स्थिति के संदर्भ में राष्ट्र और सरकार एक ही चीज है, उसका संबंध खून और हड्डी तथा मांस की तरह है। हम चाहते हैं कि विरोधी दल शक्तिशाली होता और उसमें इतनी क्षमता होती कि वह एक आल्टरनेटिव सरकार का नक्शा पेश करता। अगर आप चाहते हैं कि सुचेता जी की सरकार हट जाय, लाल बहादुर शास्त्री की सरकार हट जाये, तो किसमें आल्टरनेटिव सरकार बनाने की क्षमता है? अगर आप शक्तिशाली नहीं हैं तो उसके लिये कांग्रेस जिम्मेदार नहीं है, इसकी जिम्मेदारी आपकी, विरोधी दल की ही है। अगर आप में यह ताकत नहीं है कि आप सरकार बना सकें तो इस संकट के समय एक सुव्यवस्थित सरकार को हटाने का प्रस्ताव लाकर आप एक अराजकता स्थिति पैदा करना चाहते हैं। इसी लिये मैं इस अविश्वास के प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

श्रीमन्, अब मैं सरकार से भी कुछ कहना चाहता हूं। आज आवश्यकता इस बात की थी कि इस राष्ट्रीय संकट के समय, इस सदन में उन साधनों पर विचार होता जिनकी आज आश्यकता थी। विरोधी दल के नेता लोग, और हम सब आपसे में बैठ कर विचार करते कि आज हमें क्या करना है? अयूब ने कहा है कि पाकिस्तान आज टोटल वार पर है। आज जरूरत है साधनों को इकट्ठा करने की, जनता का मनोबल बढ़ाने की, सैनिकों में उत्साह पैदा करने की। लेकिन मुझे अफसोस है कि आज १० दिन हो गये, जन जीवन को जागृत करने की ओर इस भीषण युद्ध की विभीषिका से निपटाने के लिये, कोई कदम इस सरकार की ओर से नहीं उठाया गया। आज प्रदेश में, जिले जिले में, इस गम्भीर परिस्थिति का अहसास नहीं हो रहा है। माननीया मुख्य मंत्री जी अपने कार्य से इस समय दिल्ली में हैं, किन्तु दूसरे मंत्री और उप नेता सदन यहां हैं, मैं चाहता हूं कि विरोधी दलों के नेताओं को बुलाया जाय और आज की स्थिति पर विचार विमर्श किया जाय और इस संघर्ष से निपटने के लिये, जो मोर्चे पर काम कर रहे हैं उनका मनोबल बढ़ाने के लिये, हमें क्या करना है, इस पर विचार किया जाय। मैं मायर साहब से कहना चाहता हूं कि आज भी ऐसी बात नहीं है कि हमने अपने मौलिक अधिकारों को छोड़ दिया है। आज मंत्रि परिषद् के प्रति हमारी शिकायतें हैं। प्रदेश के मंत्रिमंडल के स्वरूप के बारे में, उसकी कार्यप्रणाली के बारे में, उसकी मनोवृत्ति तथा उसके तौर तरीकों के संबंध में हमारा तीव्र मतभेद है, इसमें कोई सन्देह की बात नहीं है। हम चाहते हैं, यह मेरे अकेले की बात नहीं है, मैं अपने सभी साथियों की ओर से यह बात कहता हूं, सरकार को अपने दृष्टिकोण तथा तौर तरीकों में परिवर्तन करना होगा। मेरे जैसे कांग्रेस वालों को ही नहीं बल्कि उन कांग्रेस-विरोधी दलों को भी जिनमें देश-भक्त हैं अपने साथ लेकर चलना पड़ेगा।

श्री कृष्णचन्द्र शर्मा---

यदि सरकार उनके सम्मान और प्रतिष्ठा के अनुरूप उनसे बात करती है और उनकी सलाह से काम करती है, तब इस संकट का मुकाबला किया जा सकता है। किन्तु इस बात के लिये अधिक इस बात की आवश्यकता है कि मंत्रि परिषद् पार्टीबन्दी और दलबन्दी को एक तरफ रख दें और प्रशासन को राष्ट्र की भलाई को ध्यान में रखते हुये चलायें।

श्रीमन्, आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि हम साम्प्रदायिक तत्वों को न उभरने दें क्योंकि आज हमारा मुकाबला एक साम्प्रदायिक देश से है जिसने कि राष्ट्रीय वृत्तियों को रखने वाले हमारे देश पर आक्रमण किया है। ऐसे समय साम्प्रदायिक तत्व उभर सकते हैं। ऐसे साम्प्रदायिक तत्व को, चाह उनका रंग कोई हो उनका मजहब कोई हो, उनको उभरने न दें बल्कि उनको कुचल दें। यह संघर्ष या युद्ध हमारे देश के लिये चुनौती नहीं बल्कि उन सब मूल्यों की चुनौती है जिन्हें हमने गांधी और नेहरू की प्रेरणा से आज तक संजोकर सुरक्षित रखा है। हमने नेहरू के नेतृत्व में धर्मनिर्पेक्ष राज्य की स्थापना की है। यदि हम उन उसूलों पर दृढ़तापूर्वक कायम रह सकें, तो मैं कहना चाहता हूं कि भारतवर्ष अक्षुण रहेगा, भारतवर्ष अमर रहेगा गांधी व नेहरू अमर रहेंगे, लेकिन उसके लिये इस संकट के समय आवश्यकता है कि हम एक लक्ष्य रखें तथा एक दिमाग, एक दिल तथा एक नेतृत्व एवं एक झंडे के नीचे चल कर पाकिस्तान की चुनौती का मुकाबला करें।

चौधरी अब्दुल हसीब खां (जिला बहराइच)---

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह जो आज का प्रस्ताव मंत्रिमंडल और सरकार के खिलाफ आया है, इससे पहले भी ऐसे प्रस्ताव आ चुके हैं और मैं समझता हूं कि यह प्रस्ताव गिर जायेगा और इसलिये कि यह जिन लोगों के खिलाफ है वह बहुमत में हैं।

मान्यवर, यह कहा जाता है कि इस वक्त जबकि हिन्दुस्तान लड़ाई की आग की लपेट में है उस वक्त यह अविश्वास का प्रस्ताव नहीं आना चाहिये। मैं समझता हूं कि इस वक्त और ज्यादा जरूरत है क्योंकि हमारे देश को ऐसी सरकार और ऐसी मंत्रिमंडल की जरूरत है जो स्थिति पर काबू पा सके।

मान्यवर, मेरे कुछ साथियों की ख्वाहिश है और इसरार है कि मैं शायराना ढंग से पेश करूं। मैं अपनी बात को बाद में कहूंगा। अफसोस की बात है कि कुछ साहबान मौजूद नहीं हैं फिर भी वजीर साहबान तवज्जह करें---

यह चांदी का खुमार आये न आये।
यह सोने की फुहार आये न आये।
यह बैरों की कतार आये न आये।
बहुत लम्बी सी कार आये न आये।
वजारत बार बार आये न आये॥

माननीय न्याय मंत्री और परिवहन मंत्री से माजरत के साथ कहना चाहता हूं ---

हैं जितने चाकू तू उनको रफू कर
हसीनों से सियासी गुफ्तगू कर,
बीयर पी और व्हिस्की से वजू कर।
यह सब सामां उधार आये न आये।
वजारत बार बार आये न आये।

माननीय चतुर्भुज शर्मा को छोड़कर क्योंकि वह मन्त्रिमंडल से निकल गए हैं, बाकी वजीर साहबान से अर्ज है---

बना बामे फलक पर आशियाना।
सुना हुस्नो मुहब्बत का फसाना।

यही है इश्क करने का जमाना ।
किसी लैला का तार आये न आये ।।
वजारत बार बार आये न आये ।।

वजीर साहबान, ख्वाहमख्वाह आप पर अपोजीशन वाले इलाजाम लगाते हैं । आप इधर सुनिये—

कोई बंगला, कोई कोठी, कोई मिल ।
मुहिब्बे कौम को हो कुछ तो हासिल ।।
यह कश्ती है यह दरिया है, यह, साहिल ।
कोई साहिल के पार आये न आये ।।
वजारत बार बार आये न आये ।।

माननीय वजीर साहबान, इनको विरोध करने दीजिये, देखिए नादानी न कीजियेगा । शायर का मशविरा है—

अरे नादां अब किसमत बना ले ।
चले आते हैं सोने के नेवाले ।
इन्हें तू अपने दांतों से चबा ले ।
ये सौगात कल फिर से आये न आये ।
वजारत बार बार आये न आये ।।

माननीय राजस्व मंत्री, जो कि मेरे बुजुर्ग और वालिद के साथी हैं, उनके लिये तो यह सवाल पैदा ही नहीं होता कि वजारत बार-बार आये न आये क्योंकि उनका मामला तो इन्श्योर्ड है । अलबत्ता उनकी चमकदार लम्बी कार के बारे में शायर ने कुछ कहा है । देहात में कार खड़ी थी तो कुछ लोग उसमें मुंह देख रहे थे, आइना समझ कर, तो शायर ने कहा—

मत देख मुंह समझकर आइना, यह मिनिस्टर की कार है प्यारे ।।

मान्यवर, अब देखना यह है कि आज जो मुतलकुल ईनानी, यानी बेलगामी व नौकरशाही, रिश्वतसितानी, नाजायज मुनाफाखोरी और हद् दर्जे की बढ़ी हुई गरानी और बदइन्तजामी, जनता की गाढ़ी कमाई की फजूलखर्ची और जनता के दुखदर्द से लापरवाही और भुखमरी हमारे प्रदेश में जो है इसकी वजह क्या है, इसका कारण क्या है? इसका जिम्मेवार कौन है? यह एक अहम् सवाल, गम्भीर सवाल पैदा करता है । मैं पूरे भरोसे और पूरे विश्वास के साथ कहता हूं कि गैरजिम्मेदाराना निजाम, जानिबदारी व ढील इस बदनज्मी और बेलगामी की जड़ है । सरकार और मंत्रि-मंडल इसकी आज जिम्मेदार है । प्रदेश में एक हाहाकार मचा हुआ है । मैं मंत्रिमंडल से बड़े अदब से कहना चाहता हूं—

हुस्न पाकर हुस्न का बर्ताव कर पाये न आप ।
दो ही दिन में एक आलम को परेशां कर दिया ।।

अभी सिर्फ १८ साल बीते हैं और आज यह हाल हो रहा है ।

आज हमारे विरोधी दल के नेता ने भी बहुत से शेर पढ़े हैं । मैं कहना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश में भ्रष्टाचार का अथाह समुद्र लहरा रहा है और गरीब आदमी उसमें हिचकोले खा रहा है । इसकी वजह क्या है? इसकी सारी जिम्मेदारी इस सरकार पर है । भूख की आग से झुलस कर जो वह गरीब कराह रहा है, क्या यह सरकार उसकी उस आवाज को सुन रही है? ऐसी आवाज देश के कोने-कोने से आ रही है । मंत्री लोग तो आपसी झगड़ों, बखेड़ों में उलझ रहे हैं और जनता दुखों से दुखी हो रही है, क्या यह सही नहीं है? आज अनाज व दूसरी चीजों की गरानी हिमालय की चोटी को छू रही है । देहात और शहरों का गरीब आदमी मरा जा रहा है और जो पैसे वाले हैं और हुक्मरां हैं वे मौज कर रहे हैं । इस सरकार के बड़े

[चौधरी अब्दुल हसीब खां]

लोगों के कुत्तों को जो ऐशोआराम मयस्सर है देहात के गरीब आदमी को वह भी नहीं मिल पाता। एक हिन्दी के कवि ने कहा है--

स्वानों को मिलता है दूध भात, भूखे बालक चिल्लाते हैं।
मां की सूखी हड्डी से चिमट जाड़ों की रात बिताते हैं।

आज ऐसी उल्टी फिजां हो रही है कि न पूछिये। जिधर भी देखिये उधर हुकूमत के लोग, सरकारी कर्मचारी, अधिकारीवर्ग और ठेकेदार और पूंजीपति सब आम तौर से यही सोचते हैं और इस बहती हुई गंगा में डुबकी लगाने की ताक में रहते हैं। आज हर शख्स यह समझता है और उसे इस बेलगाम हुकूमत का कोई खौफ नहीं है। सब का दिल यही कहता है--

बना लो शाखें गुल पर आशियाना, यह बिजली है यूं ही चमका करेगी।

मान्यवर, हम विरोधी लोग ही इस हुकूमत को बुरा नहीं कहते, बल्कि आम जनता के आम लोगों की जबान से यही निकल रहा है। इसलिये--

बुरा कहे जिसे आलम, उसे बुरा समझो,
जबाने खल्क को नक्कारये खुदा समझो।

अब मैं मिनिस्टर साहबान से यह अर्ज करना चाहता हूं कि जो भी अच्छे हुक्मरां या बादशाह हुए हैं वे जब तक कुर्सी पर रहते हैं तब तक भी वह यह नहीं भूलते कि मैं इस कुरसी को छोड़ूंगा, चाहे मर कर छोड़ूं या और किसी तरीके से।

मलिकांकि राहे खुदा दीदा अन्द-खार अजसरे राह बारचीदां अन्द।

जितने भी बादशाह या हुकुमरां ने खुदा की राह को देखा है, वह समझते हैं कि हमको इस कुर्सी को छोड़ना है, इसलिये वे जनता की राह से कांटों को चुनते हैं। लेकिन आज तो कांटे बोये जाते हैं।

अब मैं आपके जरिये से अपने सामने बैठे हुए बगुला ऐसे सफेद खद्दर के कपड़े पहने हुए कांग्रेस के माननीय सदस्यों से कहना चाहता हूं कि वे अपने कल्ब को बदलें, कालिब को न बदलें। किसी हिन्दी के कवि ने कहा है--

मन करिया तन ऊजरा, धरे हैं बगुला भेष।
इनसे तो कागा भला कि भीतर बाहर एक॥

मैं यह मानता हूं कि किसी खानदान, ग्रुप या पार्टी सभी लोगों में खराबी नहीं होती और सब में कोई ऐब नहीं होता, लेकिन किसी कुटुम्ब, खान्दान या दल का अगर एक आदमी भी बुराई करता है तो उसका बुरा असर पूरी पार्टी पर पड़ता है। किसी शायर का इरशाद है कि--

"चूं दर कौमे यके बेदानशी कुनद
न के हरा मंजिल बाशद न राहरा।"

यानी एक कौम में या एक पार्टी में जब एक शख्स नासमझी या कोई बेजा काम करता है तो न छोटे की इज्जत रहती है और न बड़े की। और

"नमी बीनी कि गावे दर अलफ जार,
बे आलायद हमा गावान दहरा।"

यानी क्या तुमने नहीं देखा कि एक गाय चरागाह में अपने साथ दस गायों को कांजी हौज तक ले जाती है। वह अपने साथ बेगुनाहों को भी ले जाती हैं। बस अब मुझे ज्यादा नहीं कहना है।

श्री किशोरी लाल अग्रवाल (जिला लखनऊ)--

उपाध्यक्ष जी, मैं श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत अविश्वास के प्रस्ताव का विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं। आज देश के सामने जो परिस्थिति उत्पन्न हुई है उस में इस तरह के प्रस्ताव का पेश किया जाना उचित नहीं था। विरोधी दल के लिये यह एक कलंक की चीज है कि ऐसा प्रश्न इस समय उठाया है। ऐसे समय में उनको चाहिये था कि सरकार को सहयोग देकर देश के लोगों का मनोबल ऊंचा करते और उनको कहना चाहिये था कि आज से विधान सभा का यह सेशन खत्म किया जाय और सब लोग अपने-अपने क्षेत्रों में जा कर जो लोग युद्ध में मोर्चे पर लड़ रहे हैं उन की सराहना करते और ग्राम स्तर पर जाकर उत्पादन बढ़ाते और छोटे-छोटे कामों को पूरा करते। लेकिन ऐसा न कर के उन्होंने यह प्रस्ताव पेश किया है जिस की इस समय जरूरत नहीं थी। उन को मालूम ही है कि यहां कांग्रेस दल के २८१ सदस्य हैं और उधर उन के साथ केवल १५० ही हैं और इस तरह से वह जानते ही थे कि उनके प्रस्ताव का क्या हश्र होगा। इसलिये अब भी उन को अपना प्रस्ताव वापस ले लेना चाहिये। उन की मंशा तो इस से ही पूरी हो गई थी कि जब स्पीकर महोदय ने पेश करने की अनुज्ञा दे दी थी। उससे उनका कहना भी पूरा हो गया था। आज बेकार के लिये जो इस तरह से यहां हम अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं इस से कोई लाभ न होगा, अच्छा होता कि विरोधी दल के नेता अब भी खड़े होकर यहां कहते कि युद्ध की स्थिति को देखते हुये आज इस बहस को स्थगित किया जाय और जब तक देश पर संकट है तबतक सब लोग अपने-अपने हल्के में जांय और वहां से नौजवानों को भेजें और जितने राजा महाराजा हैं वह अपने ऊपर कम खर्च करें और वह पैसा देश की सैनिक सहायता के लिये भेजें। आज इस चीज की मांग है, जनता की पुकार है यहां से जल्दी से जल्दी जाकर और विधान सभा की बैठक छोड़ कर जनता के संग बैठ कर उनके मनोबल को बढ़ाने में मदद करें।

मैं यह मानता हूं कि हर आदमी में, हर मिनिस्टर में कुछ न कुछ कमियां अवश्य होती हैं तो कौन-सी खास बात हो गयी। आप को यह भी देखना चाहिये कि इनमें कितनी अच्छाइयां हैं। जब आपकी पार्टी आपस में ही झगड़ती रहती है और जब आप लोगों में ही एका नहीं है तो दूसरों को क्यों कुछ कहते हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप एक भी कर के सन् १९६७ तक तो कभी भी गवर्नमेंट नहीं बना सकते हैं। तो फिर यह समझ में नहीं आता है कि आप अपना समय व्यर्थ में नष्ट क्यों करते हैं। आपको इस समय को अच्छे काम में इस्तेमाल करना चाहिये। जहां जहां भी हमारे कारीगर काम करते हैं, उनको जाकर कहें कि वे जन हित में काम करें। अगर आप लोग यह धारणा बना लेंगे तो हमारे माननीय मंत्री जी भी वैसा ही काम करेंगे। मंत्रिगण कोई पत्थर के तो बने हुए हैं नहीं। वे भी हमारे और आप जैसे ही हैं। आज अगर हमारे मंत्री लोग, जैसा कि उनको करना चाहिये, वैसे काम नहीं करते हैं, तो यह आपकी कमजोरी है। कारण उसका यह है कि आप उनको मजबूर नहीं कर पाते हैं। जब आप इस बात का नारा लगाते हैं कि जनता हमारे साथ है तो इसका मतलब यह है कि आप गलत बात कहते हैं। आज भी प्रदेश की और देश की जनता कांग्रेस के साथ है आपके साथ नहीं है। आपने ही अपने मुख से यहां पर हमारे केन्द्रीय सरकार की प्रशंसा की है। उत्तर प्रदेश की सरकार जो है वह भी तो उसी केन्द्रीय सरकार की पार्ट एंड पार्सल है। जो वे आज्ञा देते हैं, उसी के अनुसार यह काम करती है। आप उस पर तो विश्वास करते हैं परन्तु राज्य सरकार पर अविश्वास का प्रस्ताव रखा है तो यह संकटकाल में कैसे सफल होगा। इसलिये आप सब को माया-मोह छोड़ देना चाहिये। आप यह सोचते हैं कि हमको यह स्थान नहीं देते हैं जो कि हमको मिलना चाहिये। वह समय अभी नहीं है। जब यह संकट का समय निकल जाय, जब देश में शांति स्थापित हो जाय उस समय आप अगर कोई मांग करेंगे तो हम भी आपके साथ चलेंगे। सही बात जो होगी उसको सुनेंगे भी, लेकिन अगर आपकी गलत बात होगी तो कोई भी आपके साथ नहीं चलेगा। अन्त में मैं फिर माननीय नेता विरोधी दल से प्रार्थना करता हूं कि वे अपने प्रस्ताव को वापस ले लें।

*श्री कुमार करुणा कृष्ण नायर (जिला बस्ती)---

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो अविश्वास का प्रस्ताव माननीय नेता विरोधी दल ने प्रस्तुत किया है उसके समर्थन में मैं खड़ा हुआ हूं। सब से पहले मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं कि जो जवान हमारी ओर से आज भारत की सीमा पर लड़ रहे हैं, उनको बधाई दूं और उनका मनोबल बढ़ाने के लिये अपनी ओर से शुभ कामनाएं अर्पित करूं। मैं समझता हूं कि जिन मुजाहिदों ने काश्मीर को आजाद करने के बहाने से वहां हमला किया, कश्मीर में घुसकर उनके लिये हमारी ओर से सब से उचित जवाब यही होगा कि जो पखतून लोग हैं पाकिस्तान में जो कुचले जा रहे हैं और जिन्होंने इस देश को आजाद करने के लिये बहुत कुछ काम किया है उनको हमारी फौज जा कर के आजाद कर दे यह हमारा सब से पहला कर्त्तव्य है और हम लोग उनको शुभकामनायें दें।

आज इस सदन में कई सज्जनों ने कहा कि संकटकाल है और इस समय अविश्वास का प्रस्ताव लाना गलत है। संकटकाल में फूट तो गलत है ही, लेकिन विरोधी दल का कर्त्तव्य क्या है? हमारा कर्त्तव्य है कि जो गवर्नमेंट गलत कदम उठाती है उसका विरोध करना ही हमारा काम है। फूट हम नहीं पैदा कर रहे हैं, फूट आपके अन्दर है, आपकी वाणी और करनी में फूट है इसका हम विरोध कर रहे हैं। एक सज्जन ने कहा है चैम्बरलेन को जिस वक्त ब्रिटेन के प्रधान मंत्री पद से हटाया गया था उस वक्त देश की स्थिति दूसरी थी। म्युनिच में जा कर उन्होंने एक समझौता किया था और देश का उसके ऊपर अविश्वास था। मैं पूछता हूं कि हमारे देश में कांग्रेस के राज्य में म्युनिच की कमी रही है। हमारे उत्तर की सीमाओं में चीन ने हमला किया था, कच्छ में म्यूनिच का काम किसने किया था? देहली में जो प्रदर्शन हुआ है और जिसको जनता ने हृदय से स्वीकार किया है और जिसका परिणाम यह था कि भुट्टो साहब को यहां आने से रोका गया। क्या यह म्युनिच का विरोध नहीं था? चैम्बरलेन को जिस कारण से हटाया गया वह कारण आज मौजूद है। जब लड़ाई होती है उसमें वार कैबिनेट बनती है। हम यह नहीं कहते हैं कि वार कैबिनेट बना लीजिये, मगर ऐसे काल में हमेशा यह सोचा जाता है, मैं देहली सरकार के बारे में तो नहीं कहता, लेकिन प्रान्त में जो मौजूदा हुकूमत है वह देश की रक्षा करने के लिये पर्याप्त है कि नहीं।

एक ओर कहा गया है कि बड़ा भारी खतरा है। खतरे के समय विरोधी दल को गवर्नमेंट का साथ देना चाहिये। मैं पूछता हूं इस खतरे का निर्माण करने वाला कौन है। इस देश का विभाजन करने वाला कौन है, कांग्रेस है या विरोधी दल है? यदि विभाजन आज न होता तो क्या आज पाकिस्तान होता? क्या हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की फौजें एक दूसरे से लड़तीं? आपने विभाजन किया, १८ वर्ष इस गद्दी पर शासन किया उसका नतीजा यह है कि कदम कदम पर आप पिछड़ते गये हैं और देश को बड़े भारी संकट में डाला है और आज कहते हैं कि देश संकट में है, हमारा साथ दो। क्या गद्दी पर बैठने के लिये आपके लिये यह बहाना हो सकता है? गद्दी से हटने के लिये सब से बड़ा कारण यह है कि १८ वर्ष के अन्दर आपने परिचय दे दिया है कि आप गद्दी पर बैठने के लिये बेकार हैं और जो काम आपको सौंपा गया है वह करने के लिये आप किसी तरह से लायक नहीं हैं।

एक सज्जन ने यह कहा कि देशद्रोहियों के लिये वध की शिक्षा होनी चाहिये। हमेशा रही है। वध उनका किया गया है। मैं पूछता हूं उनका व्यंग किस पर था? क्या विरोधी दल पर था? इस देश में आज भी गद्दार विरोधी दल के अन्दर नहीं हैं। इस देश के गद्दार आप कांग्रेस में पायेंगे, कांग्रेसी चूजों में पायेंगे। मैं पूछता हूं, एक सज्जन ने कहा कि मैंने इतिहास का अध्ययन किया है। मैं पूछता हूं रोम के इतिहास में एक बड़ा जनरल कोरियालानस था, वह बहुत बड़ा जनरल था, मगर घमन्डी होने के नाते से वह रोम से निकाले गये।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

उसके बाद रोम का सबसे बड़ा दुश्मन वोलस्की बन गया और बोलस्की ने रोम पर हमला किया। उससे मिन्नत की गयी कि यह तुम्हारी जन्म भूमि है, इसे बचाओ। उसने कहा कि मेरा कर्त्तव्य है इस शहर को लेना। उसके बाद उसकी माता और स्त्री रोई और उसके कदमों पर गिर गयीं। और फौज को लेकर लौट गयीं। वोलस्की ने खौरियालानस की हत्या कर दी। उसका गला काट दिया हमारे देश में खौरियालानस की कमी नहीं है। यहां उनके सुपुर्द नेफा का काम सौंपा गया था और चीन के आक्रमण के समय वह नेफा को छोड़ कर दिल्ली चले आये थे। चाहे उनकी गिनती देश द्रोहियो में न हो, लेकिन उस फौज से निकाले गये जनरल की गिनती विश्व में सबसे अधिक वेतन पाने वालों की गिनती में अवश्य है। देश द्रोही कौन है? वह है जो रक्षा मंत्री रहा और देश की सेना की रक्षा न कर सका। वह उस पद से निकाले गये लेकिन आज कांग्रेस के नेता बन कर देश में घूम रहे हैं। देश द्रोही कौन है? वह है जो चीन का प्रोपेगेन्डा करके इस देश में घूमते हैं। ऐसे देश द्रोही आप विरोधी दलों में नहीं पायेंगे, कांग्रेसियों में पायेंगे जो कांग्रेस के स्टूज बन कर रहते हैं और जिन्होंने कहा कि गद्दारों के साथ सख्त बर्ताव होना चाहिये, यही हमारी मांग है।

अब इस प्रस्ताव की जरूरत क्यों है? हमको कभी यह धोखा नहीं है कि इस असेम्बली में यह पास हो जायगा। असेम्बली में कांग्रेस के खिलाफ प्रस्ताव पास भी हो चुका है जहां कांग्रेस के अन्दर फूट हुई है और जिनमें पौरुष था। यहां भी फूट है जिनमें उनमें इतना पौरुष नहीं है कि अपनी राय को रखते हुए मनोबल के साथ हमारा साथ दें। उनको इस गवर्नमेंट में विश्वास नहीं है, लेकिन उनके इतना पौरुष नहीं है कि वे इस प्रस्ताव के पक्ष में सहमति दे सकें। यह जो हमारा अविश्वास का प्रस्ताव है वह एक चिह्न है। जनता का जो आप पर अविश्वास है उसके प्रतीक हो कर हम यहां खड़े हैं।

अविश्वास क्यों है, उसे एक व्यक्ति के शब्दों में रखना चाहता हूं। एक दफा मैं गांव में घूमा तो एक सज्जन गांव के जो पढ़े-लिखे थे मेरे पास आये और कहा कि हमको कांग्रेसियों से सबसे बड़ी एक शिकायत है। मैंने पूछा क्या है, तो उन्होंने कहा कि वे इस बात से नहीं ऊबते हैं कि इस कांग्रेस राज्य में घूस है। उन्होंने कहा कि वह जानते हैं कि इंजीनियर, ओवरसियर घूस लेते हैं, ठेकेदार इमारत, सड़क तथा बांध ठीक नहीं बनाते हैं और वे बैठ जाते हैं। उन्होंने कहा कि वह यह भी जानते हैं कि अस्पताल में गरीबों को दवाइयां नहीं मिलतीं। जिस घर में कत्ल होता है उसके घर वालों से, पड़ोसियों से पुलिस जब पहुंचती है तो उनसे पैसा ले लेती है और १०९, ११० वालों से पुलिस पैसा लेती है और असली मुल्जिम इस प्रकार से छूट जाते हैं और जो पैसा नहीं देता है उनको ही फंसाया जाता है। उन्होंने कहा कि इसे भी वह जानते हैं कि लेखपाल बिना रसीद के चन्दा जमा कर लेते हैं और वह सब हजम हो जाता है। उन्होंने कहा कि शिकायत उनको इस बात की है कि कांग्रेस सरकार ने कोई निरख नहीं रखा। यही कमी है कि ऐंटी-करप्शन कमेटी तो कायम कर दी जिसकी जरूरत नहीं है, लेकिन कोई निरख कमेटी नहीं बनाई। थानेदार किसी को कत्ल से बचाने के लिये कितना रुपया ले ले, इसका निर्ख बांधिये, लेखपाल गलत एंट्री करने के लिये कितना रुपया ले ले इसको बता दीजिये तथा झूठी नकल और झूठी शहादत के लिये कितना रुपया दिया जाय, इसको बता दीजिये। इन सब चीजों के लिये निर्ख तय हो जाना चाहिये। हम किससे शिकायत करें मंत्री खुद रुपया लेते हैं और उनको देने वाले पूंजीपति हैं। उनकी जेब में हमारी जेब से पैसा जाता है। जब कपड़ा खरीदते हैं तो भाव बढ़ा पाते हैं और जब फावड़ा खुर्पी लेने जाते हैं तो भाव बढ़े पाते हैं। हम इन सब से ऊब गये हैं और हम यह भी जानते हैं कि यहां पर घूस बन्द नहीं हो सकती है। इसलिये हर चीज का निर्ख हो जाना चाहिये।

कांग्रेस की सब से बड़ी लीगेसी इस प्रांत में यह रही है कि हर महकमे में घूसखोरी खूब जमा है और जनता में यह विश्वास पैदा कर दिया है कि बिना इसके तुम्हारा काम नहीं चल सकता है और पुलिस का राज्य जिस तरह से चल रहा है वह हमारा देखा हुआ है। डेमोक्रेटिक ट्रेडीशन में पुलिस का काम यह है कि वह जनता की रक्षा करे। लेकिन हमारे गृह मंत्री इसके सर्वथा अयोग्य हैं। उनका रुख एक मंत्री का कभी नहीं रहा। वह अपने को जैसे

[श्री कुमार करुणा कृष्ण नायर]

एक थानेदार अपने थाने के इलाके को मानता है उसी तरह से सारे प्रदेश का दरोगा बनाये हुये हैं और उनका रुख भी वैसा ही है जैसा थाने में दरोगा आदमियों को पिटवाता है और उनका चालान करता है। डेमोक्रेटिक ट्रेडीशन्स को यह अवहेलना है जो बिना पब्लिक की वोट के सदन में बैठता हो, जिसको अधिकार न हो वह यहां आया है सरकार की रियायत से, उसका यह रुख है।

अभी हाल में गोरखपुर गोलीकांड के बारे में उन्होंने कहा कि हम जुडीशियरी द्वारा जांच नहीं कराने देंगे और कहा कि मैजिस्ट्रेट उसकी जांच कर रहे हैं। किस्सा क्या है? किस्सा यह है कि अपने अधिकारों के लिये जिनको गवर्नमेंट ने भी जायज माना है, उसके लिये चन्द आदमियों ने मिल गेट पर एजीटेशन किया, उनके ऊपर गोली चलाई गई। हमारा कहना यहहै कि उनके ऊपर अकारण गोली चलाई गई और क्रुयैलिटी से चलाई गई। उन्होंने कहा कि हमारे पास दूसरी रिपोर्ट आई है। ठीक है, लेकिन हमारी मांग यह है कि जुडीशियल जांच करा ली जाय। उन्होंने कहा कि इसकी जरूरत नहीं है। वह विद्वान् हैं और एक वकील भी हैं, उनसे मैं पूछता हूं कि जिसके लिये उन्होंने कहा है कि जुडीशियल जांच की जरूरत नहीं है क्योंकि मैजिस्ट्रेट की जांच हो रही है, वह काफी है। लेकिन क्या आपने समझा है कि मैजिस्ट्रेट की जांच किस कारण के लिये होती है और उसका परपज क्या होता है? मजिस्ट्रेट इसलिये जांच करते हैं कि गोली किस के सामने चलाई गई और कैसे चलाई गई। मजिस्ट्रेट लिखेगा कि ये लोग फाटक पर आये, पुलिस ने गोली चलाई और उनकी मृत्यु हो गई। अपने अधिकारों के ऊपर चढ़कर गोली चलाई गई। इसको लिखना का उनका कर्त्तव्य नहीं है और न उनका अधिकार है कि सरकारी कर्मचारियों ने अधिकार सीमा को पार करके काम किया है या नहीं। इसके लिये जुडीशियल जांच होती है। उसका उन्होंने विरोध किया है।

इसी तरह से एक यहां पर नरही में भी कांड हुआ है। भैया जी को पुलिस द्वारा पीटा गया। हमने कहा कि इसकी जांच करा लीजिये कि थाने में उनको पीटा गया या नहीं। इस पर उन्होंने कहा कि इस्तगासा दायर कर दीजिये। गृह मंत्री से हमारा परिचय है, उनकी करनी से भी हमारा परिचय है। उनकी करनी से हमारी उतनी शिकायत नहीं जितनी कि हमारी शिकायत इस मंत्रि मंडल से है। उसमें एक ऐसा मंत्री है जो अपने कर्त्तव्य को न समझता हो और जनहित के खिलाफ काम करता हो, उसके ऊपर इस मंत्रि-मंडल का इतना विश्वास है कि कोई भी उनका जवाब काटने के लिये खड़ा नहीं होता है, चाहे मुख्य मंत्री हो या और कोई मंत्री हो। ऐसे शासन से जनता ऊब गई है। अगर हम ऐसे शासन के ऊपर अविश्वास का प्रस्ताव न लाते तो हमारी गिनती भी देशद्रोहियों में होती। आज इस प्रस्ताव को लाना देशभक्ति का परिचायक है। इन शब्दों के साथ मैं इसका समर्थन करता हूं।

*श्री फूलसिंह (जिला सहारनपुर)---

उपाध्यक्ष महोदय, इस प्रस्ताव को पढ़ कर मुझे ऐसा लगा कि अच्छा होता, आज की स्थिति में यह प्रस्ताव न आता। पर मुझे इस बात का अहसास है कि व्यक्ति के विचार स्थिति के मुताबिक बदलते रहते हैं। उदाहरणार्थ, अगर कोई व्यक्ति रेल में सवार होने वाला है तो डिब्बे के अन्दर चाहे कितनी भीड़ हो, वह इस कोशिश में रहता है कि अन्दर घुस जायं। अन्दर घुसने के लिये वह लोगों की बड़ी खुशामद करता है कि उसे आने दिया जाय और अगर उसी समय गार्ड ने व्हीसिल दे दी तो उसके विचार में आता है कि गार्ड को बड़ी जल्दी है, अभी तो गाड़ी और भी खड़ी नहीं हुई है। लेकिन अगर उसे अन्दर जगह मिल जाय तो जगह मिलते ही उस व्यक्ति की धारणा ही बदल जाती है। अन्दर कितनी भी जगह खाली हो और दूसरे मुसाफिर आना चाहें तो वह कहेगा कि सभी इसी में आयेंगे क्या, आगे और डिब्बे

*वक्ता ने अपने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

भी तो खाली हैं। और अन्दर जाते ही अन्दर व्हीसिल देने में थोड़ी भी देर हो गयी तो वह कहता है कि न जाने गार्ड कहां जाकर सो गया। तो मेरा जो अपना जाती विचार था, उस पर मैं बहुत भरोसा नहीं करता। मैंने थोड़ी किताबें उलटी पलटीं, तो ऐसे भी उदाहरण हैं कि संकट के समय में भी ऐसे प्रस्ताव सदन में आये हैं। पिछली लड़ाई में विलायत में भी तीन दिन तक वार स्थिति पर बहस हुई और गवर्नमेंट ने इस्तीफा दिया और गवर्नमेंट बदली। उस दृष्टि से तो मैं समझता हूं कि यह प्रस्ताव बेजा नहीं है, कायदे में है। लेकिन इसका उपयोग क्या है, इसमें मुझे बड़ा सन्देह है। मैंने माननीय त्रिपाठी जी के भाषण को पूरा सुना, तथा अन्य कई माननीय सदस्यों के भाषणों को भी सुना। मैंने नायर साहब का भी भाषण सुना और यह सब कहते हैं कि इस प्रस्ताव से इस गवर्नमेंट को बदलना सम्भव नहीं है।

अगर गवर्नमेंट बदलना सम्भव नहीं है तो इस प्रस्ताव का एक असर हो सकता है। मुझे डर है कि यह प्रस्ताव हमारे सिपाहियों और उन साथियों के उत्साह में कुछ कमी न कर दे जो आज देश के इस नाजुक मौके पर लड़ाई में लगे हुए हैं। यह स्थिति एक बहुत ही अजब स्थिति है। समाज में भी हमेशा ऐसे मौके आते हैं लेकिन बहादुर और अक्लमन्द लोग वही होते हैं जो उस स्थिति का फायदा उठाते हैं। अंग्रेजी में दो शब्द हैं—स्टम्बलिंग stumbling ब्लाक और स्टेपिंग step ing स्टोन। जो अक्लमन्द लोग होते हैं वे स्टम्बलिंग ब्लाक यानी रास्ते के रोड़े को हटा कर उसको स्टेपिंग स्टोन बना लेते हैं। तो उन स्थितियों का लाभ उठाना चाहिये। उदाहरण के तौर से शुरू में यह समझा जाता था कि अगर किसी मुल्क के चारों तरफ पानी हो तो वह मुल्क बड़े घाटे में रहता है। किन्तु चार-पांच सौ साल हुये मान्यता बदल गयी, जब तरक्की शुरू हुई तो वही मुल्क आगे निकल गये, जैसे विलायत। तो समाज और व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर है कि कठिनाई का कैसे हल हो। आज कल रोजाना फैक्टरियों में बात होती है बहुत वेस्ट जा रहा है, किन्तु जो अक्लमंद है, वे उस वेस्ट का उपयोग कर लेते हैं और यह भी देखा गया है कि ये वस्ट से ही इतना नफा उठा लेते हैं कि जो असली नफा है वह भी उस से कम रह जाता है। सवाल यह है कि ऐसे मौके पर क्या होता है। जब ऐसे मौके आते हैं तो यह मौके दो तरह के होते हैं, एक तो है 'टेस्ट' (इम्तिहान) और एक 'अपरचुनिटी'। तो आज मौका है। अपनी योग्यता को दिखलाने का, उस मौके का नफा उठाने का। पर ऐसे मौकों पर भिन्न-भिन्न व्यक्ति भिन्न-भिन्न तरीके से पेश आते हैं। कुछ लोग तो रोना-चिल्लाना शुरू कर देते हैं। मैं नहीं जानता कि यहां पर कितने माननीय सदस्य होंगे जिनके लड़के या भाई इस लड़ाई में शामिल होंगे। मेरा लड़का खुद पैरा शूट कैप्टन है। तो कुछ लोग उससे इस तरह से पेश आते हैं और कुछ लोग उससे घबड़ाते हैं।

यह भी स्पष्ट है रोना चिल्लाना और शिकायतें भी दो तरह की हो सकती हैं, यह नहीं कि बिलकुल जबान बन्द कर लो, बोलो नहीं, उससे भी नुकसान हो सकता है देश का। हो यदि उससे ऐसी आशा हो कि उससे सुधार होकर हम अपनी स्थिति में आ जाएंगे, कुछ लोग ऐसे मौके का प्रचार करने में उपयोग करते हैं। लड़ाई में करना धरना कुछ नहीं, लेकिन लेक्चर देना, प्रचार करना शुरू कर देते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो इस घात में लगे रहते हैं कि कितने तम्बू बिकेंगे, कितने खूंटे बिकेंगे, उनसे कितना लाभ होगा, जो इसी तरीके से मालामाल होने में लगे रहते हैं। कुछ ऐसे लोग भी मुल्क में हैं, जिनको यह बात सूझती है कि किस तरीके से अपनी पवित्र से पवित्र चीज, कीमती से कीमती वस्तु भारत माता पर बलिदान की जाये। किन्तु ऐसे लोग प्रचार नहीं करते, इश्तहार नहीं छपवाते। अंग्रेजी में एक मुहावरा है—

"The candle need not send invitation to moths."

यानी मोमबत्ती "शमां" यह प्रचार नहीं करती कि हम इस समय से इस समय तक फलां दिन जलेंगे, लेकिन परवाने खुद आते हैं और उसमें जलते हैं। परवाने देश के दीवाने ऐसे मौके पर जलते हैं और उनसे देश का और समाज का कल्याण होता है। देश में सभी पवित्र लोग हैं, ऐसा नहीं है, हर तरह के लोग इस देश में हैं।

[श्री फूलसिंह]

इस मौके पर क्या होना चाहिये था, मैं एक चर्चा जरा कर दूं। बाइबिल में यह चर्चा है कि बाइबिल के जमाने में चोर को जमीन में गाड़ने और उस पर पत्थर मारने की प्रथा थी। एक बार एक चोर जमीन में गाड़ा गया और उस पर पत्थर बरसाने के लिये बहुत से आदमी और लड़के तैयार खड़े थे। उस समय हजरत ईसा उस मार्ग से गुजरे और उन्होंने दृश्य को देखा तो हजरत ईसा ने कहा कि ठीक है कि इस चोर को पत्थर से मारना चाहिये। लेकिन पहला पत्थर उसे मारना चाहिये जो खुद चोर न हो। यह कह कर ईसा चले गये और देखते-देखते पत्थर मारने के लिये तैयार खड़े लोग भी धीरे-धीरे अपने हाथों के पत्थर छोड़-छोड़ कर चले गये। तो कहने का मतलब यह है कि कौन गुनाहगार नहीं है, गुनाहगार सभी हैं।

अभी नैय्यर साहब शिकायत कर रहे थे, किसी हादसे की चर्चा की कि फलां आदमी के साथ ज्यादती हुई और सरकार ने उसे सुना नहीं। मुमकीनन ऐसी बहुत सी गलतियां होती होंगी और भी बातें होंगी, लेकिन प्रश्न यह नहीं है कि सरकार को गाली दी जाय या उसकी भर्त्सना की जाय। प्रश्न यह है कि हम क्या काम करें जिससे हम इस नाजुक घड़ी में इस लड़ाई को जीतें। अगर वाकई गलती करने पर सरकार को हटा सकते हैं और उसके बाद अच्छी सरकार बनाने के चांस हों तो जरूर हटा देना चाहिये। अगर इस झगड़े में हम सब समय को खोने लगे तो यह झगड़ा करना देश के हित में नहीं होगा। अंग्रेजी में एक कहावत है कि "Changing the horse in mid-stream" घोड़े को धार के बीच में बदलना। जो लोग गाड़ी चलाते हैं और मैं भी जानता हूं कि अगर बैल पानी के बीच में दरिया में जाकर खड़ा हो जाय और उस वक्त यह सोचा जाय कि बैल को बदल दो तो क्या आप ऐसा कर पायेंगे? अगर आप बैल बदलेंगे तो गाड़ी बह जायगी। तो इस समय नाव मझधार में है। ऐसे अवसर ऐसे काम के लिये नहीं हैं कि इस तरह की बातें कही जायं। यह उपयुक्त मौका नहीं है इन सब बातों के लिये।

मैं यह बात निवेदन करना चाहता हूं कि इस मौके पर क्या-क्या हो सकता है इन बातों की चर्चा इस सदन में हो तो इस मौके का सही उपयोग हो सकता है। मेरा खयाल है कि हरएक आदमी क्या सेवा कर सकता है और क्या काम कर सकता है, यह बात सोचना है। जब चीन का आक्रमण हुआ था उस समय मेरी सेहत अच्छी नहीं थी। आज तब से अच्छी है। मैं यह चाहता हूं कि मैं कोई ऐसा काम देश के लिये करूं जिसको दूसरे लोग करने में घबराते हों। जहां पर दरख्वास्तों की भरमार है वहां जाने की जरूरत नहीं है। वह काम हम देश के लिये करें जिसको करने में दूसरे लोग डरते हों। इस तरह का काम किया जाय तो मेरे खयाल में देश का कल्याण होगा। क्या काम हो सकता है, यह हमको सोचना है। सब से बढ़िया काम यह हो सकता है कि हर खान्दान से एक लड़का फौज में जाय। जिस घर का एक लड़का फौज में नहीं है उस घर ने देश की सेवा नहीं की। राशन और टैंट के ठेके लेने वाले तो बहुत मिल जायंगे, लेकिन खून देने वाले कम मिलेंगे। दूध पीने वाले मजनूं बहुत मिल जायेंगे पर खून देने वाले बहुत कम हैं। अंग्रेजी में एक कहावत है कि "Friends multiply inprosperity, tries adversity tries them." जब किसी की हालत अच्छी होती है तो दोस्तों की भरमार होती है और जब पैसा पास नहीं होता तो कोई पास नहीं आता। यहां सब मजनूं हैं। खून देने वाले कम हैं। दूध पीने वालों की कमी नहीं है।

एक वाकया मुझे याद आ गया। मजनूं जब फकीर हो गया तो लैला को मालूम हुआ कि एक फकीर बैठा भूखों मर रहा है और कमजोर होता जाता है। लैला ने उसके लिये रोजाना दूध भेजना शुरू कर दिया। हम जैसे मुसटंडों को भी मालूम हुआ कि इसके तो बड़े मजे हैं, रोजाना दूध पीने को मिलता है। तो हम भी फटे कपड़े पहन कर वहां पहुंच गये और उसका दूध पीने लगे। वह मजनूं फिर भी कमजोर होता गया। तो एक दिन लैला ने कहा कि एक कटोरा उसका खून ले आओ। उसके आदमी वहां गये और उन्होंने खून जा कर मांगा।

उसने कहा कि हम तो दूध पीने वाले हैं, खून देने वाले नहीं हैं। तो इस वक्त इम्तहान हो जायगा कि कौन खून देने वाले हैं और कौन दूध पीने वाले हैं। मेरा निवेदन है कि जो नौजवान हैं यदि वे स्वयं लड़ाई में पहुंच जायं तो देश का कल्याण हो जायगा। इसका मतलब यह नहीं कि मेरी छूट है। मैं इतनी हिम्मत रखता हूं कि थोड़ा बहुत जवानों के साथ पूरा पाड़ ही दूंगा। लेकिन जो लोग यह नहीं कर सकते उनको सिपाहियों के लिये खून देना चाहिये। अपनी जान देने के बाद दूसरा काम उनके लिये खून देने का है। पैसे से काम नहीं चलता। यह कोई कुर्बानी नहीं है। कुर्बानी वह है जिसे करने में कुछ तकलीफ हो। जब चीन से लड़ाई हुई थी तो किसानों ने बहुत रुपया दिया था, साहूकारों ने नहीं दिया। मैं आशा करता हूं कि इस बार वह भी देंगे, खून रुपया दें जिन के पास रुपया है। लेकिन रुपये की अहमियत इतनी नहीं है। असली बात तो फौज में जाना और खून देना है। अगर यह भी आप नहीं कर सकते तो इलाकों में जाकर वहां अमन और चैन कायम रखें। मैंने अभी सुना कि पाकिस्तान रेडियो ने यह कहना शुरू कर दिया कि करांची पर भी हिन्दुस्तान ने हमला कर दिया। रावलपिंडी पर भी हमला कर दिया। यह सारी अफवाहें इसलिये हैं कि दूसरे मुल्क उनकी मदद के लिये जल्दी से आवें। समाज को ठीक तरह की बात समझाना हम लोगों का काम है और यह हमें करने की कोशिश करनी चाहिये। हमारी सरकार ने बार-बार इस बात को कहा है कि यह लड़ाई पाकिस्तान को फतेह करने के लिये नहीं है, न वहां की सरकार को हटाने के लिये है। यह लड़ाई तो उन अड्डों को बेकार करने के लिये है कि जिनसे बार-बार हिन्दुस्तान पर हमला किया जाता है। हमें पाकिस्तान के लोगों से हमदर्दी है, उनसे दोस्ती है। इसलिये हमारी फौजों ने वहां पहुंच कर भी उनके गांवों को तबाह नहीं किया, मस्जिदों को गिराया नहीं। इसका नतीजा ही यह है कि हमारी फौजों का वहां स्वागत हुआ, खाने को मिला और होटल वाले ने जब पैसे मांगे तो लोगों ने उसे डांटा हालांकि हमारे सिपाहियों ने कहा कि हम पैसे देंगे। तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम समाज में सही तरीके से खबरें फैलायें और इस बात की जानकारी रखें, चेक रखें कि कोई व्यक्ति जो गड़बड़ करना चाहता है, रेलें या सड़कें नष्ट करना चाहता है, उनको नुकसान पहुंचाना चाहता है, वह ऐसा न कर सकें। तो हम लोग यह काम ही करें। हम लोग जब जेलखाने में थे तो बिस्मिल की गजलें गाया करते थे जिस में एक यह थी कि "अब तो एक मिट जाने की हसरत दिले बिस्मिल में है। अब न अगले बलबले हैं और न अरमानों की भीड़" उस जमाने का जोश अब ढीला पड़ गया है, अब कुछ कर नहीं सकते, लेकिन हिम्मत तो यह रखनी चाहिये कि हम मुल्क के लिये मिट जायेंगे। अगर इतना ही रहे तो काम हो सकता है।

अन्त में मैं एक बात और कहना चाहता हूं। यह तो व्यक्तिगत बात हुई। सदन है। इसमें अपोजीशन है, गवर्नमेंट है। गवर्नमेंट में भी ग्रुप हैं। लेकिन जबानी बात स काम चलन वाला नहीं है। रोज अखबारों में बयान छापे जाते हैं एक हो जाने के लिये 'बट व्हाट यू राइट यू डोन्ट मीन इट। एक लेखक ने कहा है—"When the Postmaster General writes 'Your most obediently' he means the reverse of it." इसका एक ही उदाहरण मैं देना चाहता हूं। महाराणा प्रताप के वक्त में एक ठिकाने पर झगड़ा हुआ। वहां क राजा साहब ने वह किला महाराणा के सुपुर्द कर दिया था। और भी बीसियों राजाओं ने अपने किले पेश किये थे। महाराणा प्रताप हारने लगे तो एक किला छोड़ते, दूसरे चले जाते। वह किला भी हार गये तो वह राजा भी बेघरबार हो गया। उनक दो जानशीन थे। अब लहर बदली और महाराणा प्रताप ने किले छीनने शुरू किये। जब उस किले पर भी चढ़ाई हुई तो उन्होंने कहा कि यह किला उसको दूंगा जो उसके जीतने में ज्यादा सहायक होगा। जो दोनों फरीक थे उनमें से एक के पास फौज थी, सब कुछ था और दूसरे के पास अकेली जान थी। जिसके पास फौज थी वह फौज लेकर किले के दरवाजे पर चढ़ा।

[श्री फूलसिंह]

दरवाजे पर बल्लम लगे हुये थे। तो हाथियों से यह चाहा कि उस दरवाजे को तुड़वा दे। लेकिन हाथी जब भाले देखते थे तो पीछे हट जाते थे तब दूसरे फरीक ने कहा कि रुक जाओ और वह आगे जाकर भालों के आगे खड़ा हो गया और कहा कि हाथियों से मेरे सीने पर ठोकर डलवाओ। तो आज भी ऐसे ही खेल की आवश्यकता है, ऐसे कर्त्तव्य की आवश्यकता है। किसी को सजा हुई या न हुई, किसने बुलाया, किसने नहीं बुलाया, इससे कोई नतीजा नहीं है। इस वक्त इम्तहान का वक्त है।

सरकारी सदस्यों से भी जरा सा निवेदन है। इस मौके पर आप नफा उठा सकते हैं। जब मैं नाइंथ में पढ़ता था तो मैंने एक पोएम पढ़ी थी, उसमें था "वी फाल आउट विद दोज वी लव, ऐण्ड किस अगेन विद टियर्स।" दोस्ती में बहुत झगड़े होते हैं और मुसीबतें सब को मिला देती है। सरकार की दानिशमन्दी और कामयाबी इसमें है कि इस मौके का नफा उठा कर सारे झगड़े को दफा कर दें और सब लोगों को एक जगह खड़ा कर दें। यह उनकी आजमाइश है। मैं एक शेर कहता हूं----

"शमा में वह खूबी कहां जो एक परवाने में है-लुत्फ जलने में नहीं जल-जल के मर जाने में है।" तो आवश्यकता यह है कि हम लोग इसमें कम्पीट न करें कि इस मौके पर किसको कितना नफा हुआ। यह मौका नफा हासिल करने का नहीं है, नफा हासिल करने से दूर रहने का है। अगर किसी रेल के डिब्बे में झगड़ा हो रहा है, एक मुसाफिर बाहर खड़ा है और वह डिब्बे में घुसने के लिये बाहर से चिल्लाता है कि झगड़ा मत करो, झगड़ा मत करो और इस बहाने से डिब्बे में घुस कर जगह बना लेता है तो ऐसा नफा मत उठाओ। यह वक्त तो गुजर जायगा, पर यह इम्तहान बाकी रहेगा और इस वक्त जो आजमायश है वह सदियों तक बाकी रहेगी, उसकी याद बाकी रहेगी। मेरे खयाल में यह मौका भारतवर्ष के लिये बहुत दिनों में आया है। गीता में तो चर्चा इस बात की है कि--

"यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियः पार्थ, लभन्ते युद्धमीदृशम्॥"

तो युद्ध क्षत्रियों के लिये खुला-खुलाया स्वर्ग का दरवाजा है। जो भी लड़े, मुल्क की सेवा करे, वही क्षत्रिय है---

"हरि को भजे सो हरि का होई, जात-पांत पूछे नहीं कोई।" यह तो टेस्ट है। जो लड़े वही क्षत्रिय है।

तो इस प्रस्ताव के जरिये से हम ऐसा वातावरण बनायें कि देश के सब लोग मिल कर, एक होकर इन सब चीजों को बरदाश्त कर और इनका मुकाबला करें।

यह जो एयर रेड की चर्चा होती है, यह घबराहट क्यों है? वियतनाम इतना छोटा सा देश है और उस पर कितने बम पड़े, लेकिन वह अब भी जिन्दा है और यू० पी० इतना बड़ा प्रदेश, अगर दो चार बम गिर भी गये तो उसमें क्या पता चलेगा? एक एक एयर रेड में वीयतनाम में ५-५ सौ टन बम गिरते हैं। क्या आपने कभी सोचा कि पाकिस्तान के पास तो सारे बम और सारे हवाई जहाज मांगे हुये हैं? जितने वह डाल दगा और जितनी जल्दी डाल दगा उतनी जल्दी खत्म हो जायेंगे। उसके अपने घर का तो एक भी नहीं। इस समय परेशान होने की बात नहीं है, यह हमारे इम्तहान का समय है, हमें इसे बरदाश्त करना चाहिये। मैं आशा करता हूं जो बातें और सुझाव मैंने रखे हैं उन पर विचार किया जायगा और फायदा उठाया जायेगा।

श्री मंगलदेव (जिला आजमगढ़)--

उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय त्रिपाठी जी के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। मैंने दोनों तरफ के माननीय सदस्यों के भाषणों को सुना। आज देश पर संकट है। हर नागरिक का, जो यहां पैदा हुआ है, यहां का अन्न खाता है, स्वतः यह कर्तव्य है कि वह देश की

रक्षा अपने तन मन और धन से करे। हम अपनी पार्टी की ओर से और अपनी ओर से उन सैनिकों को बधाई देना चाहते हैं जो इस समय देश की रक्षा के लिये लड़ रहें हैं। जब देश पर संकट आता है तभी इस सरकार का मुंह खुलता है एकता के लिये। हमारी जितनी भी विरोधी पार्टियों हैं उन सब ने अपने नियमों में यह लिख लिया है कि जब भी कभी देश पर अचानक संकट आयेगा तो विचारों में मतभेद होते हुये भी, उसको भुलाकर, हम देश की रक्षा के लिये सब एक साथ होंगे। मैं पूछना चाहता हूं कि सरकार ने १८ वर्षों के अन्दर क्या किया। साम्यवाद की परिभाषा यदि आप नहीं कर सकते थे, तो समाजवाद की परिभाषा तो आप करते हैं, जहां रोज उसकी दुहाई देते हैं और समाजवादी राज्य की कल्पना करते हैं, वहां आपने क्दो किया? इस प्रदेश में, मैं पूछता हूं जीने का अधिकार है या नहीं। आज गल्ले की कमी है। चारों ओर भुखमरी है। आपका आर्थिक ढाँचा इतना खराब हो चुका है कि लोगों को उपवास करने की नौबत आ गयी है। आज लोग नंगे क्यों हैं जब कि कपड़े की कमी नहीं है? क्या आपने कभी इस पर सोचा? गरीबों के उत्थान की बात जो आप सोचते हैं वह ढपोल संखी है। सरकार ने मजदूरी की क्या रेट रखा है? क्या उससे उनका भला हो सकता है? आपने गरीबों के लिये कौन से काम की व्यवस्था की, उनके लिये क्या किया? प्रदेश में आज २ करोड़ लोगों की जिन्दगी खतरे में है। आज न उनके पास कपड़ा है, न खाने को है, न उनके लिये दवा का प्रबन्ध है, न उनके बच्चों के लिये शिक्षा का प्रबन्ध है, न कोई रोजगार की ही व्यवस्था है। आप कहेंगे कि हमने बिजली का इन्तजाम किया, इतने पुल बनवा दिये, यह कर दिया, वह कर दिया, मगर इससे जो गरीब हैं, उनको क्या फायदा पहुंचा? वे तो आज भी उपवास कर रहें हैं। उन्हें आज भी काम नहीं मिल रहा है। १८ वर्ष में आपके समाजवाद ने क्या किया है?

माननीय सीताराम जी बैठे हुए है। इन लोगों से बड़ी उम्मीद थी कि हरिजन सेवा के लिये जितना बजट पेश होता है उससे वे ज्यादा बजट पेश करा लेंगें लेकिन दुःख होता है, जब मैंने सवाल किया तो क्या जवाब मिला। आपको ध्यानपूर्वक सुन लेना चाहिये कि ५६ लाख रुपया इस प्रदेश में हरिजनों के स्वीकृत धन में से बच गया। यह शर्म की बात है आपमें क्षमता नहीं आप में, योग्यता नहीं वह रुपया भ्रष्ट अधिकारियों ने बचा लिया, देवरिया के हरिजन तो आज भी नालों का पानी पीते हैं, गड्ढों का पानी पीते हैं। देश की तो यह दुव्यवस्था हो चुकी है। मैं कहना चाहता हूं कि सफेद पोश लोगों से गरीब लोग ज्यादा वफादार हैं। जो बैंक वाले हैं, जो फार्म वाले हैं जिनके बच्चे अंगूर चबाते हैं, जिनकी पचास हजार की मोटरें हैं, वे लड़ाई से थर-थर कांपते हैं। इसका मतलब यह हरगिज नहीं कि हम लड़ाई का मुकाबिला नहीं करना चाहते। परन्तु जो लोग बैंकों में रुपया जमा कर रहे हैं वे तो थर-थर कांप रहे हैं लेकिन छोटे आदमियों को जो देश के लिये वफादार हैं उनको नौकरी नहीं मिल पा रही है। मैं कहना चाहता हूं कि इस पर पर्दा नहीं डाला जा सकता। सरकार के बिरूद्ध जो अविश्वास का प्रस्ताव आया है उस पर माननीय किशोरी लाल जी ने कहा कि हम २८१ हैं यहां बहुमत है, यह अभिमान आपको गिरा देगा। उन्होंने यह भी कहा कि विरोधी दल की कोई बात मुझे पसन्द नहीं है। श्रीमान्, आज कल पुलिस का जो अत्याचार है वह बहुत बढ़ गया है। प्लानिंग आफिस में और डिस्ट्रिक्ट आफिस में भी सभी जगह यही हाल है। राममूर्ति जी का जो डिपार्टमेंट है हम कहते हैं कि आपको अधिकार है मुअत्तल करने का, आपको अधिकार है बरखास्त करने का, आपको अधिकार है ट्रान्सफर करने का, परन्तु आप में दम नहीं। बी० डी० ओ० आज प्रधान को पीट रहा है आजमगढ़ मारटीन गंज के बी०डी०ओ० ने जो सारा रुपया खा रहा है ग्राम प्रधान को पीटा है और गलत कम्पनियों से सामान लेकर कमीशन खा रहा है। मैं कैसे कह दूं मंत्री लोग उसमें शामिल हैं क्योंकि उसमें सबूत देना पड़ेगा। मैं पूंछना चाहता हूं इधर और उधर के दोनों तरफ के सदस्यों से कि आपके १८ वर्षों के राज्य में ईमानदारी से कि आदमी आजाद है? बिना घूस लिये कोई रिपोर्ट प्रदेश के थानों में लिखी जाती है? अगली बार बोलने वाले माननीय सदस्य उन थाने वालों का और अस्पताल का नाम बता देंगे जहां बिना घूस लिये रिपोर्ट लिखी जाती है और बिना घूस लिये डाक्टरी मुआयना होता है। बिना घूस दिये हुए डाक्टरी मुआयना

[श्री मंगलदेव]

नहीं होता है और न डाक्टरी सार्टिफिकेट मिलती है इस तरह से काम चलने वाला नहीं है भले ही आप २८१ नहीं, पांच सौ हों। माननीय फूलसिंह जी ने और दूसरे लोगों ने कहा कि इस प्रस्ताव का क्या मतलब है। सरकार तो इससे बदल नहीं सकती। यह हम भी जानते हैं। परन्तु जनतंत्र में यह हमारा अधिकार है कि हम बाहर भी सरकार की आलोचना करें और यहां भी करें। माननीय पालीवाल जी बुड्ढे आदमी हैं। गोरखपुर के अस्पताल में आज कम्युनिस्ट पार्टी के एक कर्मचारी बन्द हैं। उनकी दवा के बारे में प्रश्न उठाया गया। वह मरण शय्या पर पड़ा है। पालीवाल जी ने लोकतंत्र का पट्टा उतार दिया। कहते हैं वह कम्यूनिस्ट है। मगर कम्यूनिज्म तो आपने अभी देखा नहीं। वह यहां होता तो पता लग जाता। वह कम्यूनिस्ट है, सोशलिस्ट है, कांग्रेसी है, या स्वतंत्र है या कोई भी आदमी है। यहां दवा का प्रश्न है, जीवन मरण का प्रश्न है। जो मरणशैय्या पर आदमी है उसने भी देश के लिये कुर्बानी दी है और हमारे साथी ने जैसा बताया कि सुरक्षा फंड के सम्बन्ध में छः महीने तक डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के साथ रहकर चन्दा कराया है। लेकिन आपमें संकनयती नहीं है। किसी को कम्युनिस्ट कहकर, किसी को कुछ कहकर आप जेलों में बन्द कर देते हैं?

मैं पूछना चाहता हूं कितने घूसखोरों को आपने जेलों में बन्द किया है? वह लोग दुश्मन हैं देश के, जो कि रपट लिखने का पैसा लेते हैं, सुरक्षा अधिनियम के अनुसार उनको बन्द होना चाहिये। अभी सदन में चर्चा हुई थी। सरकारी आडिटर ने बताया है कि चार वर्षों में जो प्रदेश में निर्माण का काम हुआ है वह लज्जाजनक है और रद्दी फी-रद्दी घटिया किस्म का काम उसमें हुआ है। यह विरोधी दल का कहना नहीं है, सरकारी आडीटर, जिसको आप तनख्वाह देते हैं, उसने बताया है कि ८० प्रतिशत काम खराब हुआ है और एक उदाहरण दिया है कि नैनीताल में एक आफिस बना ६७ हजार रुपये में। जब आफिस उसमें चला गया तो पता लगा कि उसकी छत चू रही है। आफिस वहां से हटाया गया, शिकायत हुई तो ठेकेदार को नहीं बुलाया गया, उसके रुपये में से कटौती नहीं की गयी, बल्कि अठारह हजार रुपया और बड़ी ही बेरहमी और बेशर्मी में सैंक्शन कर दिया मरम्मत के लिये। यही नहीं कि ठेकेदारों के पस कटौती नहीं की, बल्कि साढ़े ग्यारह लाख रुपया आपके इंजीनियरों ने ठेकेदारों को अधिक दे दिया, यह भी उसी आडिट रिपोर्ट में लिखा हुआ है। किस बेरहमी से आप टैक्स वसूल करते हैं और किस उदारता से उसको खर्च करते हैं? आठ लाख रुपया वसूल नहीं हुआ। क्यों नहीं हुआ, पूछा गया तो कहा जाता है कि उत्तरदायित्व सिद्ध नहीं हो रहा है। उत्तरदायित्व कैसे सिद्ध होगा? माननीय बनारसीदास जी आधी रात को सरकार बेच दें तो कैसे पता चलेगा कि माननीय बनारसी दास और २८१ ने मिलकर बेचा है या अकेले माननीय बनारसीदास ने बेचा है? एक डिपार्टमेन्ट नहीं सब डिपार्टमेंटों की आदत पड़ गई है और आपका लोकतंत्र तेजी से फेल हो रहा है। माननीय पालीवाल जी में दम नहीं है और न उनकी पार्टी में जुर्रत है कि आज समाजवाद और कम्युनिज्म को वह रोक सकें। आज यहां का गरीब किस हालत में है? आप चीन को गाली दे सकते हैं कि वहां का गरीब बैल के साथ जोत दिया जाता है लेकिन यहां का गरीब को बैल के बराबर भी खाना नहीं मिलता। आप चीन की बात कर सकते हैं, रूस की बात कर सकते हैं लेकिन मैं चैलेंज करता हूं कि आपके लोकतन्त्र में अब विश्वास नहीं रह गया है और यह विचार बड़ी तेजी से फैल रहा है कि लोकतन्त्र के पीछे बड़ी भारी डिक्टेटर शिप चल रही है। तानाशाही चल रही हिन्दुस्तान में। अगर कम्युनिज्म आता है और आयेगा, जिसकी जिम्मेदारी बनारसीदास जी की होगी। हम तो नहीं चाहते हैं कि आवे। हम आप लोगों से राष्ट्र के ज्यादा वफादार हैं। आपको बाहर चैलेंज करके यह विरोधी दल यहां आया है, आपकी मिन्नत करने नहीं आया है। माननीय हुकुमसिंह जी कहते हैं कि कोई ठोस सुझाव नहीं आया। वह कहते हैं कि जनता के प्रति वह जिम्मेदार हैं। इससे अधिक लज्जा की बात क्या हो सकती है कि आजमगढ़ के लालगंज तहसील के एक लेखपाल के बारे में मैंने ३ सवाल किये और तीनों बार उन्होंने टाला? उस लेखपाल का कत्ल हो गया। अगर वह ट्रांसफर हो गया होता तो यह न होता।

इन शब्दों के साथ मैं आशा करता हूं कि पूरा सदन इस प्रस्ताव को स्वीकार करेगा ।

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)---

मेरा व्यवस्था का प्रश्न है कि इस बार तो आपने लाल बत्ती जलाई, लेकिन जब फूलसिंह जी बोल रहे थे तो आपने नहीं जलाई ।

श्री उपाध्यक्ष---

यह चेयर का डिस्क्रीशन है ।

श्री कृष्णानन्दराय (जिला गाजीपुर)---

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे विरोधी दल के आदरणीय नेताओं और मित्रों से पूर्ण सहानुभूति है कि इस प्रस्ताव को देकर वे इतने धर्मसंकट में पड़ गये कि अपनी स्थिति का वे स्वयं भी निर्वाह नहीं कर पा रहे हैं । एक के बाद दूसरा खड़ा होकर इस बात की सफाई देता है कि यह अविश्वास का प्रस्ताव इस कुसमय पर हमारी विरोधी दल के कर्तव्य की सीमाओं के अन्दर है । यह माननीय माधव प्रसाद जी के प्रति अन्याय होगा यदि मैं यह न कहूं कि यदि वह इस बात को जानते होते कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान इतनी सुसाइडल वारफेयर में फंस जावेंगे तो जिस दिन इस प्रस्ताव को लाये और अनुज्ञा मांगी वह न किये होते । मैं उनके प्रति अन्याय करूंगा यदि मैं यह भी न कहूं कि जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की फौजें लड़ रही हैं और उन्हें यह अविश्वास का प्रस्ताव रखने के लिये लोग मजबूर करने लगे तो उन्होंने अथक प्रयास किया कि यह प्रस्ताव वापस कर लिया जाय ।

श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी---

यह कहां से कल्पना कर रहे हैं ?

श्री अध्यक्ष---

अब हम उठते हैं और कल ११ बजे फिर बैठेंगे ।

(इसके बाद सदन ५ बजे, अगले दिन के ११ बजे तक के लिए स्थगित हो गया ।)

देवकीनन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ :
७ सितम्बर, १९६५ ।

नत्थी "क"

(देखिये नियम ३९(२) के तारांकित प्रश्न ४ का उत्तर पीछे पृष्ठ १३८ पर)

१—अप्रैल, १९६५ में पानी की कमी के कारण माइनर को नहीं चलाया जा सका।

२—मई व जून १९६३ में माइनर के चलने की सूचना इस प्रकार है :—

माह	कितनी बार चली	कब से कब तक चली	कितने दिन चली
मई	२	(१) २—५—६३ से ७—५—६३ तक	६ दिन
		(२) २९—५—६३ व ३०—५—६३	२ दिन
जून	३	(१) १—६—६३ से ४—६—६३ तक	४ दिन
		(२) १४—६—६३ से १—६६—६३ तक	५ दिन
		(३) २६—६—६३ से ३०—६—६३ तक	५ दिन

उत्तर प्रदेश विधान सभा

नत्थी 'ख'

(देखिये नियम ३९(२) के तारांकित प्रश्न ८ का उत्तर पीछे पृष्ठ १३८ पर)

श्री जयन्ती प्रसाद जैन, मुख्य अभियन्ता, सिंचाई विभाग

(क) ड्रेनेज, बाढ़ तथा सामुदायिक विकास के अधोलिखित सर्किलों के काम:

१—सिंचाई कार्य मंडल, बरेली।

२—हिल सर्किल, सिंचाई कार्य मंडल, नैनीताल।

३—पंचम मंडल, सिंचाई कार्य, बरेली।

४—षष्ठ मंडल, सिंचाई कार्य, लखनऊ।

५—सप्त मंडल, सिंचाई कार्य, रायबरेली।

६—गंडक नहर सर्किल १, गोरखपुर।

७—सेन्ट्रल इक्विपमेन्ट ऐन्ड स्टोर्स प्रोक्योरमेन्ट सर्किल।

(ख) डिप्टी रेवेन्यू आफीसरों को छोड़कर राजपत्रित स्थापना के समस्त कार्य।

(ग) चतुर्थ योजना के काम, अल्प सिंचाई कार्यक्रम सहित।

(घ) समस्त सिंचाई विभाग पर असर करने वाले पालीसी से संबंधित महत्वपूर्ण। प्रश्नों का अनुमोदन, शासन के विचारार्थ भेजने के पूर्व, करना।

(ङ) वार्षिक बजट (कार्य तथा स्थापना दोनों) तथा फन्ड्स, का एलाटमेन्ट।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

नत्थी "ग"

(देखिये तारांकित प्रश्न २५ का उत्तर पीछे पृष्ठ १५१ पर)

अनुसूची १

उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत् परिषद् द्वारा लाइसेन्स धारियों को थोक में दी जाने वाली बिजली की दरें ।

(क) मांग के अनुसार प्रभार—

मास की प्रथम ५०० के० वी० ए० की आदेय मांग पर	१२ रु० ७५ पैसे के० वी० ए० ।
मास की अगले १५०० के०वी० ए० की आदेय मांग पर	१० रु० प्रति के० वी० ए०
मास की २००० के० वी० ए० की आदेय मांग पर	८ रु० ५० पैसे प्रति के० वी० ए० ।

और

(ख) इनरजी प्रभार—

मास की आदेय मांग के प्रथम १७० यूनिट प्रति के० वी० ए० पर ।	५ पैसे प्रति यूनिट
मास की आदेय मांग के अगले १७० यूनिट प्रति के० वी० ए० पर ।	४ पैसे प्रति यूनिट
मास की आदेय मांग के शेष यूनिटों पर ।	३ पैसे प्रति यूनिट

अनुसूची २

फर्रुखाबाद इलेक्ट्रिसिटी सप्लाई, फतेहगढ़ द्वारा उपभोगताओं से ली जाने वाली दरें ।

कार्य के लिए	स्थूल	दर प्रति यूनिट छूट
(१) घरेलू तथा साधारण—		
(अ) बत्ती तथा पंखों के लिये	३८ पैसा	६ पैसा—पहले २० यूनिट प्रति माक
	३८ पैसा	७ पैसा—२० यूनिट प्रति मास से अधिक
(ब) गरम करने, पकाने तथा घरेलू कार्यों के लिये ।	२५ पैसा	५ पैसा—पहले १०० यनिट प्रति मास
	२५ पैसा	६ पैसा—१०० यूनिट प्रति मास से अधिक ।
(२) मोटरों के लिये विद्युत् शक्ति—		
(अ) जाड़ों में ११ बजे प्रातःकाल से ५ बजे प्रातःकाल तक, गर्मियों में ११ बजे सायंकाल से ६ बजे सायंकाल तक ।	१६ पैसा	४ पैसा—प्रति १००० यूनिट प्रति मास
	१६ पैसा	६ पैसा—१००० यूनिट प्रति मास से अधिक ।
(ब) जाड़ों में ५ बजे प्रातःकाल में ११ बजे सायंकाल तक, गर्मियों में ६ बजे प्रातःकाल से ११ बजे सायंकाल तक ।		बेर जो कि ऊपर (ब) में दी हुई है ।

नत्थी 'घ'

(देखिये तारांकित प्रश्न ३१ का उत्तर पीछे पृष्ठ १५२ पर)

क्रम-संख्या	नलकूप का नम्बर	अब तक बनायी गयी नालियों की लम्बाई	नालियों के निर्माण में किया गया व्यय
१	२	३	४
		मी० फ० फीट	रु०
१	२ दादरी	.. ०—३—३३०	६,८७५
२	३ दादरी	.. ०—६— ०	८,९८४
३	६ दादरी	.. ०—३—०	६,२८९
४	७ दादरी	.. १—०—०	१२,९८३
५	८ दादरी	.. १—१—०	१४,३९५

विधान सभा प्रदेश सचिवालय

नत्थी 'ङ'

(देखिये तारांकित प्रश्न ४६ का उत्तर पीछे पृष्ठ १५६ पर)

"सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि छोटी गंडक के दाहिने किनारे पर तटवर्ती बांध बनाये बगैर जेठन नाला भवन नदी पर रेगुलेटर का निर्माण संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त नैपाल बांध का निर्माण हो जाने पर छोटी गन्डक नदी के बेसिन (Basin) की बाढ़ समस्या स्वतः अधिक बाधा में हल हो जायेगी। अतः जेठन नाला भवन नदी पर रेगुलेटर के निर्माण का मामला शेल्व (Shelve) कर दिया गया है।"

पी० एस० यू० पी०—ए० पी० १२६ एल० ए०—१९६५—८:२।

विधान सभा सदस्य पुस्तकालय